अंग्रेज़ी साहित्य की रूपरेखा

लेखक
भगवतशरण उपाध्याय

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी, गेट दिल्ली.

प्रथम संस्करण
जुलाई, १९५६

मूल्य
दो रुपया आठ आना

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली.

अनुक्रमणिका

अंग्रेज़ी साहित्य

: १ :

सत्रहवीं सदी से पहले

इस देश के निवासियों के लिए, जो अपना इतिहास सहस्राब्दियों में गिनते हैं, इङ्गलैंड का इतिहास बहुत प्राचीन नहीं। उसके साहित्य का इतिहास तो अपेक्षाकृत नितान्त आधुनिक है। साधारणतः उसका आरम्भ कवि चासर (लगभग सन् १३४०-१४००) से माना जाता है।

आरम्भ :

परन्तु चासर से पहले ही अंग्रेज़ी साहित्य का जन्म हो गया था; यद्यपि छः सदियों के उस साहित्य को कुछ समृद्ध नहीं कहा जा सकता। उस साहित्य के इतिहास का प्रारम्भ वस्तुतः एंग्लों (आंग्लों), सैक्सनों और जूटों की इङ्गलैंड-विजय से हुआ। यह सही है कि उस काल का साहित्य जिस भाषा में प्रस्तुत हुआ वह भी अंग्रेज़ी कहलाती है यद्यपि आज हम उसे अपने प्राकृत रूप में नहीं समझ सकते, अनुवाद-रूप में ही पढ़ पाते हैं। इसी कारण कुछ विद्वानों ने उसे अंग्रेज़ी मानने में भी आपत्ति की है। परन्तु विशेष अन्तर काल की दूरी ने डाल दिया है और चासर-कालीन भाषा-साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप में ही चाहे क्यों न हो, हमें उस प्रारम्भिक अंग्रेज़ी साहित्य पर एक नज़र डालनी ही होगी। उस प्राक्-चासर-साहित्य के निर्माण का सम्बन्ध दो विशेष घटनाओं से है। उनमें एक तो छठी सदी ईस्वी में एंग्लों, सैक्सनों आदि का इङ्गलैंड-प्रवेश है, दूसरी ५९७ ई० में आगस्टाइन का केन्ट में ईसाई धर्म का प्रचार। जर्मन लोग जहां जाते थे, आज ही की भाँति, वे अपनी अनुश्रुतियां भी साथ लिए जाते थे।

बोवुल्फ :

चासर-पूर्व का अंग्रेज़ी काव्य इन्हीं जर्मन अनुश्रुतियों पर अवलंबित है। यह काव्य तत्कालीन-पश्चात्कालीन हस्तलिपियों में इङ्गलैंड के अनेक संग्रहालयों में अंशतः आज भी सुरक्षित है। इनमें 'बोवुल्फ' की काव्य-बद्ध कथा विशेप महत्व की है। कथा के रूप में तो 'बोवुल्फ' की अनुश्रुति इङ्गलैंड में एंग्लों के आगमन के साथ ही पहुँच गई थी परन्तु उसका पद्यांकन सातवीं सदी के अन्त (प्रायः ७०० ई०) में हुआ, जब भारत में हूणों की रौंदी भूमि पर जहाँ-तहाँ राजपूत-राजकुल खड़े हो रहे थे। 'बोवुल्फ' की हस्तलिपि अठारहवीं सदी में जलते-जलते बच गई थी और उसकी सिकी-तपी प्रति आज भी ब्रिटिश म्यूज़ियम में सुरक्षित है। इसी काव्य-परम्परा के 'वाल्डेयर' नामक

काव्य के भी दो अंश पिछली सदी के उत्तरार्ध में कोपेनहागेन के राजकीय पुस्तकालय में मिल गए थे।

'बोवुल्फ' की कथा का सम्बन्ध इङ्गलैंड अथवा एंग्लों से नहीं है। जर्मन जाति सदा से अपनी अखण्डता में विश्वास करती आई है। इसीसे वह इस स्कैंडिनेविया-(नारवे, स्वीडन, डेनमार्क) सम्बन्धी अनुश्रुति की रक्षा भी कर सकी। कथा अनैतिहासिक है, ग्रेन्डेल नामक उस दैत्य की, जो डेनराज ह्रोथगर की सभा को भयानक रूप से भंग कर दिया करता है और जिसका संहार अपने दल की सहायता से बोवुल्फ नाम का पराक्रमी वीर करता है। काव्य के उत्तरार्ध में बोवुल्फ राजा बनकर अग्निदैत्य से अपने देश की रक्षा करता है। निश्चय कथा कल्पित जगत् की है, परन्तु उसमें जो वीरों के दरबार, उनका रहन-सहन, आपान आदि का वर्णन है, वह तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। काव्य की पंक्तियाँ अतुकांत और लम्बी हैं, किन्तु प्रत्येक पंक्ति में अनुप्रास की रवानी है और कवि की भारती तो निःसन्देह विशद है, अंशतः लाक्षणिक भी। वस्तु-नाम उसने साधारणतः चित्र-नाम से अंकित किए हैं। उदाहरणतः समुद्र को वह 'हंस-पथ' और शरीर को 'पंजरालय' कहता है।

यह जर्मन अनुश्रुति-प्रधान काव्य ईश्वरवादी ईसाई धर्म के विश्वासों से सर्वथा मुक्त है यद्यपि अपने निर्माणकाल में, उस धर्म-प्रचार का समसामयिक होने के कारण, उसमें जहाँ-तहाँ ईसाईवादी विधि-क्रियाओं का उल्लेख हो गया है। उसकी काव्यधारा सशक्त है – महाप्राण, अतीव शालीन, वीर काव्य-सी।

इसी जर्मन परम्परा में कुछ और खण्ड-काव्य या स्फुट कविताएँ हैं, जिनकी वेदना-व्यंजक अनुभूति पाठक के हृदय को छू लेती है। इनमें प्रधान हैं ; द्योर, पत्नी का विलाप, पति का संवाद, सर्वनाश, पर्यटक, सागर-यात्री। अधिकतर कविताएँ जर्मन सामन्तों के दरबारों की हैं, शक्तिमय वीरकार्यों की।

धर्म-काव्य : कीडमन और काइनवुल्फ

इन कविताओं का सम्बन्ध तो उस जर्मन जीवन से है जो ऐंग्ल-सैक्सन-जूटों के साथ अनुश्रुतियों की परम्परा में इङ्गलैंड पहुँचा। इनके अतिरिक्त उस प्राक्-चासर-काल में ईसाई धर्म के प्रादुर्भाव ने भी कुछ कम काव्य-स्फूर्ति नहीं सिरजी।

छठी सदी ईस्वी के अन्त में आगस्टाइन ने रोम से इङ्गलैंड जाकर कैंट के जूटों को ईसाई बनाना शुरू किया। इसी काल आयरलैंड के ईसाई साधुओं ने भी नार्थंब्रिया में अपने मठ बना प्रचार-कार्य प्रारम्भ किया। इसी प्रचार-प्रेरणा से तत्कालीन धर्म-काव्य प्रस्तुत हुए। इनकी कथाएं तो ईसाई धर्म की थीं, पर वाक्यावली, शब्दयोजना, काव्यप्रवाह सभी कुछ उसी पुरानी जर्मन अनीसाई परम्परा का था। ईसाई धर्म के समसामयिक प्रचार में इस नीति ने दूरगामी सफलता पाई। 'अन्द्रियाज़' उसी परम्परा का काव्य है, जिसमें सन्त आन्द्रू द्वारा सन्त मैथ्यू की रक्षा

वर्णित है। इस काल के दो कवि विशेष जाने हुए हैं—कीडमन और काइनवुल्फ। इन्होंने अनेक ईसाई सन्तों की कथा काव्यबद्ध की। 'बाइबिल' की अनेक कथाओं को इन्होंने काव्य का रूप दिया। 'सन्त जुलियाना', 'एलीनी', 'अर्हतों के भाग्य', 'रूड का स्वप्न', 'जूडिथ' आदि उस काल की कुछ जानी हुई कृतियाँ हैं। इनमें 'रूड का स्वप्न' जहाँ प्राचीन अंग्रेज़ी काव्यों में कल्पना के क्षेत्र में अपना सानी नहीं रखता, वहाँ 'जूडिथ' (निरंकुश होलोफ़र्निज़ का जूडिथ द्वारा संहार) एंग्लो-सैक्सन काव्य-परम्परा में लोम-हर्षक वर्णन और अभिनयोचित तथ्य में बेजोड़ है। कीडमन और काइनवुल्फ के व्यक्ति-गत जीवन के आँकड़े हमें उपलब्ध नहीं।

आल्धेल्म (मृत्यु सन् ७०९) : बीड (सन् ६७३-७३५) : ऐल्फ्रेड (सन् ८४९-९०१)

यह तो हुई उस काल की काव्य-रचना, पर तब का गद्य-सृजन भी कुछ कम महत्व का नहीं। वस्तुतः उस दिशा के गद्य-प्रयास अनेकार्थ में काव्य से अधिक महत्व के हैं। कम से कम उस काल के अंग्रेज़ लेखकों और विद्वानों को हम कवियों की अपेक्षा अधिक जानते हैं। शेरबोर्न का बिशप आल्धेल्म पहला ज्ञात व्यक्ति है, जिसने इंग्लैंड में अलंकृत लेटिन में गद्य-रचना की। तब की रचनाएँ लेटिन में ही हैं। परन्तु उस काल का महान् पण्डित और रचयिता बीड (६७३-७३५) है, जिसने अरबों से आक्रांत यूरोप के इस पश्चिमी द्वीप में संस्कृति का एक प्रशस्त केन्द्र स्थापित किया और जिसके 'अंग्रेज़ जाति का धार्मिक इतिहास' (लेटिन में) ने उसके लिए अक्षय कीर्ति अर्जित की। बीड इतिहास, ज्योतिष आदि का प्रकाण्ड विद्वान् था यद्यपि जैरो के मठ से आए तपोनिष्ठ साधुओं में उसका स्थान विशिष्ट था। बीड के कुछ ही काल बाद डेनों के आक्र-मण शुरू हुए। उन्होंने अंग्रेज़ी संस्कृति पर विकराल चोटें कीं। परन्तु उन चोटों और अत्याचारों का जनता ने खुलकर सामना भी किया। एंगल-सैक्सनों के राजा ऐल्फ्रेड ने अपने देश की रक्षा में स्तुत्य कार्य किया। वह केवल सैनिक ही न था; भोज की भाँति वह विद्या-व्यसनी भी था। समर से समय मिलते ही भोज की ही भाँति वह भी भारती का रूप संवारता। उसने ग्रेगरी महान् के 'पैस्टोरल राइल' का अनुवाद प्रस्तुत किया और बीड के 'धार्मिक इतिहास' का अंग्रेज़ी रूपान्तर अपनी प्रजा को दिया। उसके किए अन्य अनुवादों में ओरोसियस का 'संसार का इतिहास' और बोएथियस का 'दर्शन का आश्वासन' है। इसी काल उसी नृपति के तत्वावधान में 'एंगलो-सैक्सन क्रानिकल' नामक एक राष्ट्रीय इतिहास भी प्रस्तुत हुआ। इससे उस काल के इंग्लैंड के विदेशियों के साथ संघर्ष, तप और त्याग का परिचय मिलता है।

ईल्फ़िक और उल्फ़स्टैन

इसी डेन-आक्रमण-काल में दो धर्म-गुरुओं ने अत्यन्त निर्भीकता और साहस के

साथ अपने उद्‌गारों और रचनाओं द्वारा अपनी जनता का नेतृत्व किया। ये थे, ईल्फ़िक और उल्फ़स्टैन। 'ईल्फ़िक ने अंग्रेज़ी में अपने प्रवचन दिए और मधुर प्रायः गेय गद्य में अपने श्रोताओं को 'बाइबिल' का सन्देश सुनाया। उल्फ़स्टैन की वाणी देश के शत्रुओं के विरुद्ध उठी और वह अपने राजा ईथेलरेड को भी उसकी कमज़ोरी और कायरता के लिए विधिवत् धिक्कारने से न चूका। डेनों के अत्याचारों के बीच उसके अंग्रेज़ी में दिए प्रवचन वायु में गूंज उठे। उसके 'भेड़िया का प्रवचन' ने तो जनता में अपने शत्रुओं के विरुद्ध एक नई स्फूर्ति भर दी।

: २ :

चासर और उसके परवर्ती

ज्योफ्रे चासर (सन् १३४०-१४००)

आधुनिक अंग्रेज़ी काव्य-साहित्य का आरम्भ ज्योफ्रे चासर से होता है। चासर सैनिक, राजनीतिज्ञ और विद्वान् था। मध्य-वर्गीय होने के नाते उसका ज्ञान राज-दरबारों और साधारण जनता दोनों के सम्बन्ध में असाधारण था। उसने फ्रांस और इटली की यात्राओं में फ्रेंच और लेटिन काव्य-रचना का भी अभ्यास किया था। वोविद और वर्जिल की रचनाएँ उसे कण्ठाग्र थीं। समसामयिक साहित्य का उसे समुचित ज्ञान था। रूपक और दरबारी भावांकनों में उसे विशेष अभिरुचि थी। उसकी प्रारम्भिक कृतियों 'दि बुक आफ़ दि डचेज़' (सन् १३६९) और 'दि हाउस आफ़ फ़ेम' से रूपक और मध्यकालीन वस्तु-रचना के क्षेत्र में उसे अच्छी ख्याति मिली। परन्तु उसके वास्तविक कीर्ति-स्तम्भ हैं—'ट्रायलस एण्ड क्रिसिडी' (सन् १३८५-८७) 'दि लीजेन्ड आफ़ गुड विमेन' (सन् १३८५) और 'कैन्टरवरा टेल्स'। इनमें अन्तिम रचना चासर समाप्त न कर सका था।

'ट्रायलस एण्ड क्रिसिडी' इटालियन कथाकार वोकाचो के 'इल फ़िलोस्त्रातो' पर अवलम्बित है। पीछे यह शेक्सपियर के इसी नाम के नाटक का आधार बना। यह पद्य-साहित्य में एक प्रकार का उपन्यास है, जिसमें क्रिसिडी के प्रति ट्रायलस का प्रणय और क्रिसिडी की उपेक्षा तथा वंचकता अंकित है। रचना का भावतत्व आज की दुनिया में भी नितान्त सार्थक है और इसके चरित्रों की सजीवता आज भी सिद्ध है। इस महान् रचना की अपेक्षा 'दि लीजेन्ड आफ़ गुड विमेन,' जिसमें क्लियोपेट्रा, थिस्वी, फिलोमेला आदि नारियों के प्रणय-विषाद प्रतिविम्बित हैं, गौण कृति है। इसमें फिर भी रूपकों, 'लिरिकों' आदि की भरमार है।

पर चासर का यश विशेषतः 'कैन्टरवरी टेल्स' पर अवलंवित है। कैन्टरवरी जाने वाले तीर्थयात्रियों की कहानियां अद्‌भुत क्षमता और कुशलता से कही गई हैं। वैयक्तिक

और सामूहिक दोनों रूपों से ये काव्य-कथाएँ मध्यकालीन मानवता का चित्रण करती हैं। अभाग्य वश 'कैन्टरबरी टेल्स' चासर समाप्त न कर सका।

जान गावर (ल० १३२५-१४०८)

जान गावर ने भी अपनी रचनाएँ इसी काल कीं। वह चासर का समकालीन था। चासर की ही भाँति उसने भी फ्रेंच और लेटिन का ज्ञान प्राप्त किया और अंग्रेज़ी की ही भाँति उन भाषाओं में भी वह स्वाभाविक अधिकार से काव्य-रचना करता था। उसने भी अपने जीवन काल में ही इतनी ख्याति पाई कि कहते हैं, यदि चासर न हुआ होता तो उस काल का प्रतिनिधि कवि गावर ही होता।

विलियम लैंगलैंड

विलियम लैंगलैंड भी इसी काल हुआ और उसने पश्चिमी बोली में अपनी 'दि विज़न आफ़ पीयर्स दि प्लाऊमैन' लिखी। यद्यपि लन्दन की भाषा अंग्रेजी की प्रति-भाषा बनती जा रही थी, फिर भी स्थानीय बोलियों का प्रभाव कुछ कम न था। चासर पश्चिमी बोली की कविताओं का विरोधी था। विलियम लैंगलैंड ने इसी बोली में काव्य-रचना की। उसने समसामयिक समाज का अपनी कृति में भरपूर परदा फ़ाश किया है। शासन की दुर्व्यवस्था, धन के अनाचार आदि प्रचुर परिमाण में उस चौदहवीं सदी की असामान्य कृति में प्रतिबिम्बित हैं। लैंगलैंड आधुनिक समाज-शास्त्री की भाँति काव्यतः समाज का विश्लेषण करता है। उसकी धारणा है कि श्रम और ईसाई धर्म की सेवा में हा मनुष्य का कल्याण है। उसने ईसाई-जीवन के आदर्शों से अनुप्राणित अंग्रेजी का सर्वोत्तम काव्य लिखा और उस क्षेत्र में महाकवि दांते के सन्निकट पहुँच गया। लगता है, यदि वह रहस्यवादी न हो गया होता तो निश्चय ही क्रांति का अग्रदूत होता।

लिरिक और बैलेड

उसी पश्चिमी बोली के काव्य-खण्ड हैं—'पर्ल', 'पेशेन्स,' 'प्योरिटी' और 'गवेन एण्ड दि ग्रीन नाइट'। इनमें उस मध्यकालीन युग की जागरूक प्रतिभाएं अभिसृष्ट हुई हैं। उस काल के काव्य-रोमान्सों से कहीं सबल समसामयिक लिरिक (गेय कविताएं) हैं। इन मध्यकालीन लिरिकों में 'एलीसून' विशेषतः प्रशंसनीय है, जो सदियों और बद-लती बोलियों के पार आज भी उतना ही सबल और प्रभावशाली है, जितना अपने निर्माण-काल में था। बैलेड भी इस काल काफ़ी लिखे गए। बैलेड भी एक प्रकार का लिरिक ही है जिसमें कहानी एक विशेष रीति से कही जाती है। इन बैलेडों में विशेष स्मरणीय 'सर पैट्रिक स्पेन्स' और 'दि मिल डैम्स आफ़ बिनोरी' हैं जिनका प्रवाह, छन्द-शैली और मध्ययुगीय जीवन के प्रतिबिम्ब सराहनीय हैं।

टामस आक्लीव : लीडगेट : हावेस : जान स्केल्टन

पन्द्रहवीं सदी का काव्य-साहित्य सर्वथा नीरस तो नहीं कहा जा सकता

परन्तु है वह प्रतीकतः 'परावलंबित'। उस सदी का अधिकतर काव्य चासर से अनुप्राणित और प्रकारतः उसी की कृतियों का रूपान्तर है। स्वतन्त्र कृतियों का उस युग में प्रायः अभाव है जिसका एक कारण शायद यह भी है कि चासर-सा सुकवि उसका पूर्ववर्ती प्रतीक है। टामस आक्लीव और जान लीडगेट इसी परम्परा के कवि हैं और वह स्टिफ़ेन हावेस भी, जिसने 'दि पास्टाइम आव प्लेज़र' की रचना की। पन्द्रहवीं सदी के पिछले युग में जान स्केल्टन (ल० १४६०-१५२९) नाम का समर्थ कवि हुआ। उसकी कविता में काव्यत्व की कमी है, व्यंग्यात्मकता जहां-तहां फूहड़ तक है परन्तु परम्परागत काव्य-सौन्दर्य के अभाव के बावजूद उसमें एक जनपरक ताज़गी है।

स्काच कवि हेनरीसन : विलियम डनबर : जेम्स प्रथम और गैविन डगलस

स्काटलैंड में चासर का विस्तार अधिक योग्यता से हुआ। 'टेस्टामेन्ट आफ़ क्रेसिड' और 'किंगिस क्वेर' उस दिशा में सुन्दर प्रयास हैं। चासर का अनुवर्ती होकर भी विलियम डनबर 'टेस्टामेन्ट आफ़ क्रेसिड' के रचयिता राबर्ट हेनरीसन के विपरीत अपने पैरों पर खड़ा है। मध्यकालीन चारण की भांति उसकी वाणी तत्कालीन जीवन को मूर्तिमान करती है। गैविन डगलस भी इसी परिवार का कवि है और यद्यपि उसकी अपनी स्वतन्त्र कृतियों ने आधुनिक आलोचकों को विशेषतः प्रभावित नहीं किया, फिर भी उसका वर्जिल का अंग्रेज़ी अनुवाद निःसन्देह सत्य है। स्काटलैंड के नृपति जेम्स प्रथम की काव्य-मेधा उस काल सजग थी और उसके 'किंगिस क्वेर' में राज-रचना का एक नमूना हमें उपलब्ध है।

वाट और सरे

सोलहवीं सदी के मध्य इटली का सर्वगामी प्रभाव इंग्लैंड के साहित्य पर भी पड़ा। वाट और सरे ने 'टोटेल्स मिसेलिनी' (१५५९) के नाम से कविता-संग्रह प्रकाशित किया। लार्ड सरे को उस कामुक राजा के कोप का शिकार बन तीस वर्ष की आयु में ही सिर कटाना पड़ा। वाट ने चौदह पंक्तियों के इटालियन सानेट को अंग्रेज़ी रूप में सजाया। इस सानेट-निर्माता अंग्रेज़ी कवि का काव्य-संस्कार संकर और बोझिल होता हुआ भी अपनी विशेषता रखता है। सरे की काव्य-धारणा अधिक स्वाभाविक है। उसने वर्जिल के 'ईनिड' के दूसरे और चौथे खण्डों का अंग्रेज़ी मुक्त छन्द में अनुवाद किया। सरे को इसका गुमान भी न था कि जिस मुक्त छन्द का प्रयोग उसने पहले पहल किया वह कालान्तर में अंग्रेज़ी छन्द-परम्परा में इतने महत्व का सिद्ध होगा। उसी परम्परा का उपयोग अंग्रेज़ी के जगद्विख्यात् कवि मारलो और शेक्सपियर दोनों ने किया। मिल्टन, कीट्स और टेनिसन तीनों सरे छन्द-विन्यास से प्रभावित हुए।

सानेट

वाट और सरे दोनों स्वयं पेत्रार्च से प्रभावित थे और एलिज़ाबेथ-युग के प्रायः

सभी कवियों ने पेत्रार्च की ही उन प्रणय-चेष्टाओं का अनुकरण किया जिनकी दाय उनको वाट और सरे द्वारा मिली थी। सानेट की परम्परा का शेक्सपियर, सिडनी आदि ने भी अनुसरण किया। आश्चर्य की बात तो यह है कि शेक्सपियर और सिडनी दोनों ने पहले उस प्रणाली का मज़ाक उड़ाया मगर दोनों उसके शिकार हो गए। सानेट की शैली अंग्रेज़ी में अमर होकर रही। एलिज़ाबेथ-युग में तो उसका प्रचार रहा ही बाद के युगों में भी १४ पंक्तियों की वह कविता-शैली कवियों द्वारा अपनायी जाती रही। स्वयं मिल्टन ने सानेट का प्रयोग किया यद्यपि उसने परम्परा के अनुकूल उसका उपयोग प्रणाय-सम्बन्धी अभिव्यक्ति में नहीं किया। जनतन्त्रिक टिप्पणियों में उसे सानेट का साहाय्य अत्यन्त शक्तिप्रद सिद्ध हुआ। स्वयं वर्ड्स्वर्थ ने इंग्लैंड को प्रमाद से मुक्त करने और नेपोलियन को धिक्कारने के लिए सानेट को ही उपयुक्त समझा। कीट्स का 'चैपमैन्स होमर' सानेट की ही पद्धति में लिखा गया। १९वीं सदी में मेरेडिथ ने भी अपनी कविता 'माडर्न लव' में प्रेम के विश्लेषण के लिए सानेट का ही प्रयोग किया और रोसेटी ने भी घूम-फिरकर दांते और पेत्रार्च के ही सानेट को काव्याभिव्यक्ति के लिए उचित समझा। इस प्रकार यद्यपि वाट और सरे की कविता स्वयं इतनी महत्व की न हुई, परन्तु उसे व्यक्त करने के लिए जिस 'सानेट' काव्य-प्रणाली का उन्होंने प्रयोग किया वह निश्चय अगले युगों में अंग्रेज़ी काव्य का सौन्दर्य बन गई।

एडमन्ड स्पेन्सर (सन् १५५२-९९)

एडमन्ड स्पेन्सर काव्य-कला का पण्डित माना गया है। केम्ब्रिज में पढ़ते समय ही उसने अपने गुरुजन और सहपाठियों पर गहरा असर डाला। उसके व्यक्तित्व का प्रभाव सर्वत्र पड़ा और शीघ्र लीसेस्टर के अर्ल ने उसे अपने संरक्षण में ले लिया। वह बराबर आयरलैंड में रहा और वहीं से उसने अपनी कविताओं की दो जिल्दें प्रकाशित कीं—'दि शेपर्ड्स कैलेन्डर' और 'दि फ़ेयरी क्वीन'। स्पेंसर अंग्रेज़ी भाषा का संस्कर्त्ता माना जाता है। अँग्रेज़ी में वह होमर और वर्जिल की वीर-काव्य-परम्परा स्थापित करना चाहता था जिसमें शब्द-गाम्भीर्य और काव्य-शालीनता नये रूप से अभिव्यक्त हों। अनेक बार उसने ऐसी काव्य-कहानियां लिखीं जिनमें कथा-वस्तु 'क्लासिकल' पृष्ठभूमि पर खड़ा हुआ। दर्बार को उसने अपनी काव्य-प्रतिभा से विशेषतः आकृष्ट किया। 'फ़ेयरी क्वीन' में तो उसने स्वयं रानी एलिज़ाबेथ को नायिका बना दिया। परन्तु उसकी काव्य-मेधा अभिजात कुलीय दरबार तक ही सीमित न रह सकी और उसने उसके पार साधारण मानव के अज्ञान, अंधविश्वासों और कमज़ोरियों पर भी अपनी तीखी निगाह डाली। यद्यपि यह नहीं कहा जा सकता कि दरबारी परम्परा के बाहर भी उसका कृतित्व उतना ही सार्थक हुआ जितना राज-सभा की अभिव्यञ्जना में। हां, इतना ज़रूर है कि उसके कृतित्व में 'रेनैसां'

और सावधि युगों का समान रूप से योग मिला। वस्तुतः वह पुनर्जागरण-युग और आधुनिक काल की सन्धि पर खड़ा हुआ।

उसकी रचना में शब्द का माधुर्य अमिट है और यद्यपि काल की गति ने उसकी कृतियों के कथानकों को आज निःशक्त बना दिया है फिर भी उसके काव्य की अभिव्यंजना, कल्पना की सुचारुता और शब्दों का संगीत इस काल भी अपना प्रभाव रखते हैं। 'शेपर्ड् कैटेलॉग' में पुराण-पन्थिता का प्रचुर-पुट है, फिर भी कविताओं का रूप काफ़ी मनोरम है। 'फ़ेयरी क्वीन' ने स्पेन्सर के बाद के अधिकतर अंग्रेज़ कवियों को आकृष्ट किया है। आज उसकी भी सत्ता कमज़ोर पड़ गयी है परन्तु एक समय था जब काव्य-कल्पना में उसका विशेष महत्व था। एलिज़ाबेथ के युग से ही 'फ़येरी क्वीन' का कथानक पुराना और अस्पष्ट हो चला था परन्तु उस काल इस काव्य का रूपक लोगों को मोह लेता था। आज की दुनिया में 'फ़ेयरी क्वीन' का संसार मनुष्य का वह यथार्थ चित्रण हमें नहीं दे पाता जो चासर और शेक्सपियर दोनों की अमित शक्ति। मध्यकालीन जीवन का फिर भी एक सबल रूप स्पेन्सर की कृतियों में उपलब्ध है।

एलिज़ाबेथ-युग के कवि : माइकेल ड्रेटन (सन् १५६३-१६३१)

एलिज़ाबेथ-युग की वास्तविक और सुन्दर कविता ने ड्रामा का रूप लिया और यह मानी हुई बात है कि स्पेन्सर को छोड़कर कोई कवि मार्लो और शेक्सपियर का कविता के क्षेत्र में मुकाबला नहीं कर सका। एलिज़ाबेथ के नाटककार नाटक के क्षेत्र के बाहर अपनी काव्य-सम्पदा में भी कुछ कम चमत्कार उत्पन्न नहीं करते यद्यपि उनका प्रधान ध्येय नाटक है। मार्लो का 'हीरो ऐण्ड लीन्डर' शेक्सपियर के 'वीनस एण्ड एडोनिस', 'रेप आव् लुक्रीस', और विविध सानेट, और बेन जान्सन के अनेक लिरिक उस युग की काव्य-सम्पदा का हमें परिचय देते हैं। उस काल छोटी-बड़ी सब तरह की कविताएं लिखी गयीं। माइकेल ड्रेटन की कृतियों में कविता की अनेकरूपता का भंडार प्रस्तुत है। इतालियन रूमानी वीर-काव्यों की धारा तो उसे न छू सकी पर स्वयं उसने कविता की अनेक प्रणालियों का प्रयोग किया। ड्रेटन की कृतियों में 'दि बैरन्स वर्स', और 'पोल्योल्बियन' भारी भरकम कविताएं हैं, जिनमें वह इंग्लैंड की अनुश्रुतियां, जन-विश्वास, भौगोलिक वर्णन आदि प्रस्तुत करता है। परन्तु इनके अतिरिक्त भी उसने कुछ ऐसी कविताएं छोड़ी हैं जिनकी भाव-सम्पदा और सुकुमारता असाधारण है। 'निम्फ़ीडिया' परी-साहित्य का एक सुन्दर नमूना है और 'बैलेड आफ़ अगिनकोर्ट' तो अंग्रेज़ी काव्य-साहित्य पर अपनी गहरी छाप छोड़ गया है।

सेमुएल डैनियल (सन् १५६२-१६१६)

ड्रेटन की ही परम्परा में सेमुएल डैनियल ने भी लिखा। लैंकास्टर और यार्क के गृह-युद्धों का इतिहास उसने पद्य में लिखा, परन्तु उसकी महत्ता वस्तुतः 'एपिस्टल्स' की-सी उसकी कविताओं में है, जिनका प्रभाव वर्ड्सवर्थ पर काफ़ी पड़ा। यह

कविताएं वर्णनात्मक इतनी नहीं जितनी चिन्तनशील हैं।

जान डान (सन् १५७२-१६३१)

एलिज़ाबेथ-काल की लम्बी कविताएं अपने ऐतिहासिक भार से पाठक को उबा देती हैं, परन्तु उस काल के गीत और लिरिक अपने प्रभावों में आज सदियों बाद भी ताज़े हैं। स्वयं शेक्सपियर ने अपने नाटकों में जहां-तहां इन गीतों का उपयोग किया है जो हृदय को छू लेते हैं। इस प्रकार की गेय कविताओं के क्षेत्र में जान डान अनुपम है। वह स्वयं रूमानी प्रवृत्ति का व्यक्ति था—प्रणयी, राज-सभासद्, सैनिक—उसका जीवन विविध स्थितियों से होकर गुज़रा। फलतः उसका चित्त अस्थिर और जागरूक था। उसने पढ़ा बहुत और सोचा भी काफ़ी अतः उसके विचारों में तीव्रता काफ़ी थी। उसकी अनुभूति उसके हृदय पर असाधारण प्रभाव डालती थी परन्तु उसकी मेधा उसके प्रणय को भी चिन्तनशील दर्शन का रूप दे देती थी। वह सौन्दर्य के आकार को देखता-समझता है। परन्तु उसके आधार को भौतिक पंजर अथवा शव मानता है। प्रणय और चिन्तन दोनों का जान डान की काव्य-स्थिति में अद्भुत ऊहापोह है। कुछ अजब नहीं कि सेन्टपाल का डीन होने के बाद युवावस्था में ही अपने आवेगमय जीवन के आवेगों के कारण ही उसने अपना अन्त कर लिया था।

जार्ज हर्बट : हेनरी वान : रिचार्ड क्राशा

जान डान अपने समय का क्रान्तिकारी कवि है। वह पारस्परिक पद्य के रूप को स्वीकार नहीं करता, न पुरानी उपमाओं को ही स्वीकार करता है। पेत्रार्च के अनुयायी सानेट लिखनेवालों की उपमाओं को वह तत्काल त्याग देता है यद्यपि उसकी अपनी उपमाएं स्वयं अनोखी हैं। प्रसिद्ध डाक्टर जानसन ने कालान्तर में जान डान और उसकी प्रणाली को मेटाफ़िज़िकल (भौतिक अनुभूति से परे) कहा क्योंकि उसकी कविताओं में विरोधी भावनाओं का समरूप में उपयोग हुआ। जान डान की पद्धति अनेक बार सूत्रवत् हो जाती है। डान का प्रभाव सत्रहवीं सदी के धार्मिक कवियों पर बहुत गहरा पड़ा। जार्ज हर्बट (सन् १५९३-१६३३) उनमें विशेष प्रसिद्ध है। अपनी कविता 'दि टेम्पल' में उसने धार्मिक अनुभूति का सुन्दर वृत्तान्त उपस्थित किया। हेनरी वान (सन् १६२२-९५) रहस्यवादी कवि हुआ जिसने 'रिट्रीट' और 'आई सा एटरनिटी दि अदर नाइट' नाम की महत्त्वपूर्ण कविताएं लिखीं। रिचार्ड क्राशा (सन् १६१२-४९) इस वर्ग का तीसरा कवि है, जिसकी कविता 'स्टेप्स् टु दि टेम्पल' विशेष महत्व की मानी जाती है।

टामस कैरो (सन्१५९७-१६३९) : सरजान सर्कलिंग (१६०९-१६४२) : रिचार्ड लवलेस (१८१८-१८५७) : राबर्ट हैरिक (१५९१-१६७४) : एन्ड्रू मार्वेल (१६५१-१६७८)

टामस कैरो ने 'कवेलियर' कवियों का प्रारम्भ किया। उसकी शैली में काफी भावु-

कता है और संग्रहों में उसके प्रेम सम्बन्धी लिरिकों के उदाहरण उपलब्ध हैं। 'रैपचर' नाम की उसकी कविता में शृंगार का प्रायः नग्न वर्णन हुआ है, जिससे आलोचकों ने उसकी तीव्र आलोचना की है। इस कवेलियर काव्य-परम्परा में ही सर जान सकलिंग भी हुआ जिसने जब-तब उस परम्परा को छोड़कर विचारशील काव्य की भी रचना की। रिचार्ड लवलेस (सन् १८१८-५७) कैरो या सकलिंग का-सा मेधावी तो न था, पर उसने भी कुछ सुन्दर गीत लिखे। इस परम्परा से गीतकार राबर्ट हैरिक (१५६१-१६७४) कुछ विशेष दूर न था यद्यपि उसे कवेलियरों में नहीं गिना जाता। वह बेन जान्सन का शिष्य था और अपनी कविता उसने डेवेनशायर में लिखी। १६४८ ईस्वी में 'हेस्पराइडीज़' में उसकी हज़ार से ऊपर कविताओं का संग्रह प्रकाशित हुआ। विषाद की छाया उसके लिरिकों में काफ़ी पड़ी है और उसका शब्द-चयन तो निश्चय ही अनूठा है। उसकी कविताओं में इंग्लैंड का ग्राम्य जीवन मूर्तिमान् हो उठा है। उसके लिरिक प्रेम और कल्पना प्रधान हैं, उनका प्रवाह सरल और सहज है और सीमित क्षणभंगुर आनन्द के प्रति उनकी अभिव्यक्ति हृदयग्राहिणी है। हैरिक के जीवन के प्रति इस दृष्टिकोण में उसका एकान्तवास भी सहायक हुआ। उसके विपरीत एन्ड्रू मार्वेल प्रवाहित जीवन का सबल सुकवि है। उसने क्रामवेल और चार्ल्स द्वितीय-काल के इंग्लैंड का मनोहारी वर्णन किया है। प्यूरिटन होने के कारण उसकी कविताएँ व्यंग्य और शब्द-प्रहारों से भरी हैं। इस रूप में उसकी यह कविताएँ अपनी उन पूर्ववर्ती कृतियों के विपरीत पड़ती हैं, जो मधुर और सरल थीं।

: ३ :

मिल्टन और परवर्ती कवि

सत्रहवीं सदी इंग्लैंड के इतिहास में विशेष महत्व की है। गृह-युद्ध ने उस देश में एक नयी परम्परा स्थापित की, जिसने जनतन्त्र के विकास में बड़े महत्व के परिवर्तन किये। विज्ञान और तर्कवाद नयी शक्ति धारण कर रहे थे और व्यापार तीव्र गति से एक नई विज्ञानानुमोदित क्रान्ति की ओर बढ़ चला था। डान ने उसी नयी चेतना का अपनी विकल कविताओं द्वारा परिचय दिया। मिल्टन उसी सदी के आरम्भ में उत्पन्न हुआ और उसने उस काव्य-सम्पदा को सिरजा जो अंग्रेज़ी साहित्य में अमर हो गयी।

जान मिल्टन (सन् १६०८-७४)

जान मिल्टन इंग्लैंड के महान् कवियों में है। यदि हम नाट्य-परम्परा के कवियों से उसे अलग कर दें तो निश्चय उसकी शालीनता अनुपम है। उसने ख्याति भी अपनी काव्याभिसृष्टि के गौरव के अनुकूल ही पायी है। गृह-युद्ध के पहले की उसकी कविताओं में 'कोमस' प्रधान है। उसकी प्रारम्भिक कविताएँ सन् १६४५ में

संग्रहीत हुईं। मिल्टन को जो केवल कवि के रूप में जानते हैं, उनको पता नहीं कि अपने निबन्धों में उस महाकवि ने गद्य का कितना प्रखर रूप सिरजा है। गृह-युद्धों के अवसर पर उसने जिस गद्य-धारा का सृजन किया वह उस काल के अंग्रेज़ी साहित्य में अनुपम है। मिल्टन अंग्रेज़ी साहित्य का प्रायः पहला पैम्फ़ेलटियर है जिसने कलम का उपयोग जन-संघर्ष के पक्ष में किया। क्रामवेल के नेतृत्व ने उसमें मानवता के विजयी भविष्य के प्रति अद्भुत निष्ठा और आशा जगा दी थी। उसी संघर्ष की कटुता और मानवता के प्रति सजग निष्ठा ने जीवन के अन्तिम सालों में दृष्टिहीन, प्रायः निराश मिल्टन को अपना वह अद्भुत वीरकाव्य लिखने को वाध्य किया जो 'पैराडाइज़ लॉस्ट' और 'पैराडाइज़ रिगेन्ड' के नाम से जगत में विख्यात हुए। इनमें पहला काव्य-खंड सन् १६६७ में प्रकाशित हुआ, दूसरा चार वर्ष वाद सन् १६७१ में।

मिल्टन ने जो जीवन के भीतर भी संघर्ष की व्यवस्था पायी, वह निश्चय तत्कालीन ऐतिहासिक स्थिति का प्रतिविम्ब था। 'कोमस' में उसने उसी अन्तस्संघर्ष की व्याख्या की। मिल्टन की सभी कृतियों में 'कोमस' आज विशेष लोकप्रिय है। इसी प्रकार 'पैराडाइज़ लॉस्ट' में ईव और एडम संघर्ष करते हैं, जैसे क्राइस्ट सैटन के विरुद्ध 'पैराडाइज़ रिगेन्ड' में संघर्ष करता है और सैमसन एगोनिस्टस में मिथ्या मतों के विरुद्ध। 'पैराडाइज़-लॉस्ट' सब युगों के लिए महान् कृति है। एडम और ईव, मुमकिन है, हमारे आज के जीवन में महत्व न रखते हों परन्तु मिल्टन के शैतान का विद्रोह निश्चय एक जीवित परम्परा है, जिसमें हम सदा साँस ले सकते हैं। मिल्टन न केवल प्यूरिटन सम्प्रदाय का, वरन् विश्व-साहित्य का एक महान् कृतिकार है।

सैमुएल बटलर (सन् १६१२-१६८०)

सैमुएल बटलर प्यूरिटनवाद का सबसे बड़ा तात्कालीन प्रतिवादी है। जहाँ मिल्टन ने प्यूरिटनवाद को सुन्दरतम चित्रित किया वहाँ बटलर ने उसे अपने व्यंग्यात्मक काव्य 'हूडीब्रास' में मिथ्यावाद का मूर्तिमान स्वरूप कहा। बटलर मिल्टन के प्यूरिटनवाद का इस प्रकार सबसे बड़ा प्रतिद्वन्द्वी हुआ। बटलर का यह 'भाण' वास्तव में अपनी भणैती की नग्नता में मिल्टन की शालीनता का ठीक जवाव है। मिल्टन, कहते हैं, अपने जीवन-काल में जनता में अप्रिय हो गया था यद्यपि इसके लिए विशेष प्रमाण नहीं मिलता। वस्तुतः उसके जीवन-काल में ही उसकी कृतियाँ श्रद्धा से पढ़ी गयीं और १८वीं सदी में तो उसका अनुकरण भी काफ़ी हुआ। इसमें फिर भी सन्देह नहीं किया जा सकता कि मिल्टन की काव्यधारा क्लिष्ट थी और उसमें लेटिन और ग्रीक सन्दर्भों की भरमार है। 'लालेग्रो' और 'इल्पेन्सरेसो' उस शैली के सिद्ध प्रमाण हैं। मिल्टन की पद्धति के विरोधी कवियों ने 'हिरोइक कपलेट' का प्रयोग किया, जिसे कवि पोर ने विशेष महत्व देकर प्रसिद्ध किया।

एडमन्ड वालेर : (सन् १६०६-८७) : सर जान डेनहम (सन् १६१५-६९)

इस हिरोइक पद्धति में भाषा के प्रवाह और सरलता को विशेष महत्व दिया गया। प्रसाद उसका विशेष गुण हुआ। इस प्रकार के छन्दपरक आन्दोलन का प्रथम प्रवर्तक एडमन्ड वालेर और सर जान डेनहम हुए। इनके आन्दोलन का परिणाम यह हुआ कि काव्य की विकृत और क्लिष्ट भाषा आशुगम्य और सहज बन गयी। विषय और उसकी अभिव्यक्ति दोनों में सरल समानता दृष्टिगोचर हुई। डेनहम की प्रसिद्ध कविता 'कूपर्स हिल' को जान ड्रायडन ने जो इतना सराहा वह उसके सहज प्रवाह के कारण ही।

जान ड्रायडन (सन् १६३१-१७००)

जान ड्रायडन—नाटककार, आलोचक और अनुवादक—स्वयं इस पद्धति का प्रधान व्याख्याता था। सुन्दर प्रभावशाली वाक्यावली से अलंकृत, सुष्ठु, सरल कविता लिखना उसकी कला का अन्तरंग गुण था। ड्रायडन ने अपनी कृतियों द्वारा बड़ी कीर्ति कमाई है यद्यपि अंग्रेज़ जाति ने उसे इतना महत्व न दिया। समकालीन घटनाओं को अपनी कविता में मूर्त कर ड्रायडन ने काव्य-क्षेत्र में उस काल का एक नया प्रयोग किया। उसका 'एनस मिराबिलिस' डच-युद्ध और लन्दन के अग्नि-संहार का काव्य-रूप है। शैफ़्ट्सबरी के षड्यन्त्रों और मन्मथ की कृतघ्नता ने उसके 'एबसालोम एण्ड एचिटोफेल' में अपनी व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति पायी। इसी प्रकार उसकी अन्य कविताएँ भी समकालीन राजनीतिक और धार्मिक प्रवृत्तियों की पोषक हैं। ड्रायडन ने वर्जिल, जुवेनल, ओविद और चासर के अनुवाद किये। उसने गद्य का भी रूप निखारा। फेबुल्स की भूमिका में जिस गद्य का उसने प्रयोग किया वह उस क्षेत्र में अनुपम है।

एलेग्ज़ैंडर पोप (सन् १६८८-१७४४)

एलेग्ज़ैन्डर पोप अंग्रेजी-साहित्य का सबसे बड़ा व्यंग्य-कवि है। व्यंग्य को उसने अपनी कला से आलोकित कर एक विशिष्ट रस के रूप में प्रस्तुत किया। उसके आलोचकों ने उसे अनेक प्रकार से जाँचा है परन्तु अधिकतर उसपर चोटें ही पड़ी हैं। उसके व्यंग्य को साधारणतः लोगों ने अन्यायनिष्ठ माना है। जो भी हो, इसमें सन्देह नहीं कि पोप कलाकार था। अंग्रेज़ी भाषा में उसका स्थान 'क्लासिकल कवि' के सन्निकट है। उसके दृष्टिविस्तार की निश्चित कुछ सीमाएँ हैं। पोप में सेवा और त्याग की भावना मिल्टन की ही भांति प्रबल थी। 'ऐस्से ऑन मैन' में उसने पद्य में अपने अध्यात्म का रूप रखा। परन्तु निश्चय आध्यात्मिक साहित्य में उसके दृष्टिकोण की विशेषता नहीं। उसका महत्व साहित्य में व्यंग्य कृति उत्पन्न करने में है। 'द रेप ऑफ़ द लाक' में उसने १८वीं सदी के समाज का जो चित्र खींचा है, वह व्यंग्य के रूप में बड़े महत्व का है। 'डन्सियाड' में उसने प्रमाद और निष्क्रियता का बुरी तरह मज़ाक

उड़ाया है और समसामयिक मूर्खों का जो रूप उसने उसमें प्रस्तुत किया है वह नितान्त हास्यास्पद है। उसकी अपेक्षाकृत छोटी कृतियाँ तो और भी सुन्दर हैं। 'दि एपिस्टल टु डाक्टर आर्बुथनौट' इस दिशा में सुन्दर दृष्टान्त के रूप में रखा जा सकता है। स्पोरस अथवा लार्ड हर्वी के व्यंग्य-चित्र अत्यन्त आकर्षक हैं। ऐडिसन पर उसकी चोट भी इसमें काफ़ी गहरी है।

पोप ने व्यंग्यात्मक काव्य के अतिरिक्त दूसरी कविताएँ भी लिखी हैं जिनमें होमर के अनुवाद के अतिरिक्त 'पेस्टोरल्स' और 'विन्डज़र फ़ारेस्ट' महत्व की हैं। होमर की कृति का उसका अनुवाद तो काफ़ी पढ़ा गया है यद्यपि उसकी अनुवाद-शैली की आलोचकों ने कटु आलोचना भी की है। अनुवाद में जो उसने अलंकरण की बहुलता उपस्थित कर दी है उससे उसके प्रति आलोचना की कटुता भी बढ़ गई है। उसकी रूमानी प्रवृत्ति का विशेषतः 'एलोयसा टु एबेलार्ड' और 'एलिजी टु दि मेमरी आफ़ ऐन अनफारचुनेट लेडी' में होता है।

सैमुएल जान्सन : गोल्डस्मिथ

एलेग्जैन्डर पोप ने अपने परवर्ती काल के साहित्य पर कुछ कम प्रभाव न डाला। उसके अनुयायियों में विशिष्ट-सैमुएल जान्सन और आलिवर गोल्डस्मिथ हुए। यद्यपि अपनी कला में दोनों उससे काफ़ी भिन्न हैं। सैमुएल जॉन्सन ने अधिकतर गद्य ही लिखा यद्यपि उसके दो व्यंग्य 'लन्दन' (सन् १७३८) और 'डिवेनिटी आव् ह्यूमन विशेज़' (सन् १७४९) उसकी व्यंग्यात्मक शक्ति को प्रचुरता से प्रदर्शित करते हैं। गोल्डस्मिथ के काव्य पर एक सामाजिक छाप है। 'ट्रैवेलर' (सन् १७६४) और 'डेज़र्टेड विलेज' (सन् १७७०) में गोल्ड्स्मिथ ने इंग्लैंड और आयरलैंड की सामाजिक और आर्थिक कुरीतियों का चित्रण किया है। पोप से कहीं बढ़कर समसामयिक सामाजिक स्थिति को समझने और व्यक्त करने की उसमें शक्ति थी। उसकी शैली चासर की कला के अनुकूल थी, और उसकी अभिव्यक्ति में भावों का सम्मिश्रण असाधारण हुआ।

जेम्स टामसन (सन् १७००-४८)

पोप और उसके अनुयायियों ने अपनी कृतियों पर समकालीन समाज की छाप डाली। १८वीं सदी के कवियों की एक विशेषता प्रकृति-पर्यवेक्षण की रही है। जेम्स टामसन (१७००-४८) इस प्रकार का सम्भवतः पहला कवि है जिसने प्रकृति का आमूल वर्णन किया। 'सिक्स सीज़न' नाम की उसकी कृति ऋतुओं का चित्रण करता है जो कालिदास के 'ऋतुसंहार' की भाँति प्रकृति सम्बन्धा स्वतन्त्र काव्य है, यद्यपि दोनों की प्राकृतिक सम्वेदना में न केवल मात्रा का वल्कि गुण का भी अन्तर है। सीज़न नाम की यह कविता वड़ी लोकप्रिय हुई। यह है भी वड़ी सरल। प्रायः १०० वर्ष तक इंग्लैंड के कविता-पाठकों पर उसका अधिकार वना रहा। साधारण जीवन, गरीबी आदि के

प्रति उसकी गहरी सहानुभूति उसकी विशेष लोकप्रियता का कारण हुई। इसी कारण जो लोग पोप की प्रतिभा के समक्ष नहीं टिक पाते थे उन्होंने भी टामसन की सादगी को सराहा। थी भी प्रकृति-अंकन की उसकी कला सर्वथा मौलिक जो प्रकृति के प्रति लोगों की बढ़ती हुई अभिरुचि को समृद्ध करती गई।

विलियम काउपर (सन् १७३१-१८००)

तब के इंग्लैंड में एक नयी मानवता का उदय हो रहा था। व्यवसाय ने एक धनी और सन्तुष्ट वर्ग उत्पन्न कर दिया था जो मनुष्य के प्रति दया और सहानुभूति की प्रेरणाओं से आकृष्ट हुआ और यद्यपि उसने अपने स्वार्थ के अर्जन में कभी कमी न की, अपनी अभिरुचि की उसने परिधि निश्चय बढ़ा दी। मानव-चित्त में एक प्रकार का विद्रोह उदित हो रहा था और उसका सम्बन्ध निरन्तर बढ़ते हुए जनान्दोलनों से होता जा रहा था। व्यापार, जो निरन्तर समाज को धनी और कंगाल के दो स्पष्ट भागों में विभक्त करता जा रहा था, मानवता के प्रति इस नयी सहानुभूति का विशेष कारण बना। अनेक साहित्यकारों ने उस काल की परस्पर विरोधी तथा मानवता-प्रेरित प्रवृत्तियों का अपनी कृतियों में अंकन किया। विलियम काउपर (१७३१-१८००) ने अपनी कृति 'जानगिलिपन' में इसी प्रकार की प्रवृत्तियों और अनुभूतियों का प्रदर्शन किया। काउपर के 'लेटर्स' अंग्रेज़ी भाषा के सर्वोत्तम नमूने हैं। उसकी सर्वोत्कृष्ट रचना 'टास्क' है जिसमें कवि नगरों से दूर देहात की दुनिया में घूमता है और बड़े सहज भाव से गाँव के दृश्य प्रस्तुत करता है। इस काल के कवियों ने तर्कवाद के विरोध में बहुत कुछ लिखा। परन्तु कुछ को इसी कारण तर्कवाद और न्याय-सम्मत जीवन के लोप का भी अन्देशा हो आया। काउपर भी उन्हीं में था और उसने अपनी सशक्त कविता 'कास्ट अवे' में अपने उसी भय का मूर्तन किया।

टामस ग्रे (१७१६-७१)

इस भय ने १८वीं सदी के कृतित्व को काफ़ी कलुषित भी कर दिया। फलतः एक अद्भुत कष्टकर कायिक चेतना कवियों के एक वर्ग में हुई। विषाद की एक विचित्र अनुभूति का उन्होंने अनेकतः अंकन किया। विषाद प्रेरित काव्य 'एलेजी' का इसी कारण अनेकतः अंकन उदय हुआ। बहुत कुछ तो हिन्दी के आधुनिक छायावाद की भाँति विषादमय कविता लिखना उस काल का 'फ़ैशन' हो गया था परन्तु, चाहे रीतिवत् ही क्यों न हो, कुछ कवियों का तो इसने जीवन ही अपनी शक्ति से प्रभावित कर दिया। इनमें 'एलेजी' का रचयिता टामस ग्रे (१७१६-७१) विशेष प्रसिद्ध हुआ। होरेस वालपोल के साथ अपनी तरुणावस्था में ग्रे ने यूरोप के समृद्ध और सुखी जीवन का काफ़ी अनुभव किया था। परन्तु १८वीं सदी के केम्ब्रिज के उसके पिछले जीवन ने उसे शिथिल कर दिया। विषाद की एक लहर जैसे उसके रोम-रोम में बहकर भिन

गयी जिसने उसकी कृतित्व-शक्ति शिथिल कर दी। अपने समय के यूरोप के प्रसिद्ध विद्वानों में टामस ग्रे भी एक था। उसने अपनी कविताओं में नयी रुचियों का समावेश किया। उसके 'डिसेन्ट आफ़ ओडिन' में नार्वे आदि उत्तरी प्रदेशों के प्रति संकेत है और 'बार्ट' में मध्यकालीन जीवन के प्रति। विषादपूर्ण 'एलेजी' सम्बन्धी साहित्य अंग्रेज़ी में काफ़ी बढ़ चला जिसमें कब्रिस्तानों, खंडहरों, फैले सुनसान मैदानों का वर्णन महत्व का समझा गया।

विलियम कालेन्स (१७२१-५९)

विलियम कालेन्स (१७२१-५९) तो अपने विषाद के वितरण में ग्रे से भी बढ़ गया। कालेन्स अपने जीवित वातावरण से अनभिज्ञ हो यह उसकी 'हाउ स्लीप दि ब्रेव' से तो नहीं लगता परन्तु निश्चय उसकी प्रवृत्ति प्रायः स्वप्निल थी। उसकी कविताओं—'ओड ऑन दि पापुलर सुपर्स्टिशन्ज आफ दि हाई लैन्डस', 'ओड टु ईवनिंग' और 'डर्ज इन सिम्बेलीन'—में विषाद की छाया जैसे शब्द-शब्द को अपने भार से बोझिल कर रही है। साधारणतः उसकी कला बोझिल है परन्तु जब कभी वह सरल हो पाता है तब जैसे उसका स्वर मधुर गुनगुनाहट से अद्भुत आकर्षण धारण कर लेता है।

क्रिस्टोफ़र स्मार्ट (१७२२-७१)

विलियम काउपर के ज़माने से ही कविता के क्षेत्र में असाधारण रुग्णता का प्रारम्भ हो गया था। क्रिस्टोफर स्मार्ट ने तो इस काव्यगत रुग्णता की पराकाष्ठा कर दी। उसका नितान्त विकृत और बदनाम जीवन पागलखाने में ही जाकर सुस्थिर हुआ। वहां उसने दीवारों पर चारकोल से अपना 'सॉंग टु डेविड' लिखा। रोसिटी और ब्राउनिंग ने उस गीत को बेहद सराहा है।

विलियम ब्लेक (१७५७-१८२७)

ज़माने के भौतिकवाद ने कुछ कवियों को जैसे विक्षिप्त कर दिया। अनेकों ने अपनी साधना उस भौतिकवाद के विरोध में प्रयुक्त की। अर्थवाद दिन-दिन ज़ोर पकड़ता जा रहा था और कवि, जब वे उसका आन्दोलन के रूप में प्रतिवाद न कर सके तब, स्वप्निल और अन्तर्मुख हो गये, निरन्तर इलहाम-सा उन्हें होने लगा और वे रहस्यमयी प्रेरणा से अपना उद्बोधन करने लगे। विलियम ब्लेक (१७५७-१८२७) ने तो जैसे फ़रिश्तों और दूसरी अपार्थिव मूर्तियों को स्पष्ट देखा, जैसे वे मूर्तियां उसे घेर कर मित्रों के समुदाय की भांति बगीचों में बैठने लगीं। इस प्रकार के स्वप्नों ने उसे दुनिया से पृथक् कर दिया। उसके आलोचकों का कहना है कि उसने मानव आत्मा को भौतिकता की दासता से मुक्त कर दिया और जीवन को नेक और बद के परे श्वेताकार जलती हुई शक्ति के रूप में देखा। निःसन्देह ब्लेक रहस्यवादी था। उसकी

कृतियों पर स्विडनबोर्ग की गहरी छाप है। अपनी इस नयी चेतना में काव्य की परम्परा से ब्लेक इतना दूर हो गया है कि उसने अपनी नयी रहस्यमयी भाषा, अपने नये प्रतीक, अपना नयी शब्दावली बना ली है जो पाठक को उलझन में डाल देती है। यदि कविता का कोई स्वरूप ब्लेक ने प्रस्तुत किया है तो वह केवल 'सांग्स आफ़ इनोसेन्स एण्ड एक्सपीरियन्स' और 'एवरलास्टिंग गास्पेल' आदि में देखा जा सकता है।

राबर्ट बर्न्स (१७५९-९६)

राबर्ट बर्न्स (१७५९-९६) भी इसी काल हुआ। उसने बड़े सुन्दर व्यंग्य लिखे जिससे उसका प्रवेश एडिनबरा के शिष्ट समाज में हो गया। वह अशिक्षित किसान कवि कहा जाता है, परन्तु कुछ ही दिनों बाद राजधानी के आसव-सिंचित जीवन ने उसे अकर्मण्य बना डाला। उसे फ्रांसीसी राज्यक्रांति का शिशु भी कहा गया है। परन्तु उसके ये दोनों विरुद प्रश्नात्मक हैं। वह पोप, टामसन ग्रे, शेक्सपियर सबको पढ़ चुका था और शिष्ट अंग्रेज़ कवि की भांति लिखता था। साथ ही उसकी सुन्दरतम कृतियां फ्रेंच-क्रांति के पहले ही लिखी जा चुकी थीं। उसने धर्म की कृत्रिमता के प्रति विद्रोह किया और मनुष्य-मनुष्य का भेद उसे असह्य हो उठा। 'जाली बेगर्स' में उसने इस भेद पर प्रबल कुठाराघात किया। 'टैम ओ' शैन्टर' भी इसी प्रकार की एक सशक्त कृति है। इसी कारण वह चर्च से विरक्त होकर पानशालाओं की ओर आकृष्ट हुआ यद्यपि इस आकर्षण ने उसके चित्त को संयत न रहने दिया।

जार्ज क्रेब (१७५४-१८३२)

कविता का रूप अब तक बदल चुका था। फिर भी जार्ज क्रेब के-से कुछ लोग पोप की ओर जब-तब झुक पड़ते थे। जिस 'कपलेट' का पोप और जान्सन ने प्रयोग किया था, क्रेब (१७५४-१८३२) ने भी उसका प्रयोग किया। उसकी कविताओं के विषय साधारणतः देहाती जीवन के थे। उसने रूमानी माया को अपने पास फटकने न दिया। 'दि विलेज', 'दि पैरिश रजिस्टर' और 'टेल्स इन वर्स' उसकी प्रभूत आकर्षक कृतियां हैं। उसकी काफ़ी कटु आलोचना हुई परन्तु रूमानी आलोचकों ने वस्तुतः उसके ऋद्ध यथार्थवाद को न पहचाना।

: ४ :

रोमांचक काव्य

टामस चेटरटन (१७५२-७०)

टामस चेटरटन (१७५२-७०) ने मध्यकालीन काव्यधारा का अनुकरण करते हुए उस अद्भुत रस का कविता में संचार किया जो कालान्तर में रोमांचक काव्य का आधार बन गया। चेटरटन नितान्त अल्पायु में मरा, केवल १८ वर्ष की आयु में और

वह भी सामान्य मृत्यु से नहीं आत्महत्या द्वारा। चेटरटन निस्सन्देह मनस्वी और मेधावी था और यदि वह जीता तो शायद बहुत कुछ कर सकता, परन्तु उसके भावावेगों ने उसे अकाल ही उठा लिया। उसकी इस अकाल-मृत्यु ने आलोचकों में उसके सम्भावित भावी जीवन के सम्बन्ध में आशा और निराशा दोनों की प्रवृत्ति जनी है परन्तु उनके प्रति समभाव होकर भी कम से कम हम उसे रोमान्टिक कवियों की परम्परा का दूरस्थ प्रवर्तक मान सकते हैं।

× × ×

१९वीं सदी में अंग्रेज़ी कविता में उस नयी धारा की अभिसृष्टि हुई जो साधारणतः रोमान्टिक (रूमानी, रोमांचक) कही जाती है और जिसने भारत की भाषाओं के अनेक कवियों को भी समय पाकर प्रभावित किया। रोमान्टिक शैली के कवियों की प्रकृति के प्रति बड़ी सहानुभूति थी। जीवन के ऊपर प्रकृति का प्रभाव वे प्रायः आध्यात्मिक मानते थे। उद्योगवाद और उद्योगशील नगरों से आतंकित होकर जैसे वे रक्षा के लिए प्रकृति की ओर बढ़े। प्राचीन धार्मिक परम्पराओं की जड़ता से भी ऊबकर अध्यात्म की नई दिशा, एक नई अनुभूति की ओर वे बढ़ चले। स्पेन्सर, मिल्टन और पोप की दुनिया बाहरी थी, इनकी स्वयं इनके आवेगों में बिखरी अथवा कसी। वर्डस्वर्थ, बायरन, कोलरिज, स्काट, शैली और कीट्स रोमान्टिक शैली के प्रमुख कवि हैं।

वर्डस्वर्थ (१७७०-१८५०)

विलियम वर्डस्वर्थ (१७७०-१८५०) रोमान्टिक कवियों में सबसे महान् है। उसका जीवन भी काफ़ी लम्बा था, ८० वर्ष का। यद्यपि मृत्यु से प्रायः ३५ वर्ष पहले ही उसकी कवित्व-शक्ति का निधन हो गया। अपने प्रारम्भिक वातावरण में अकृत्रिम मानव ने उसे आकृष्ट किया। रूसो की विचारधारा ने मानवता के प्रति उसकी आशाओं को सशक्त किया। फ्रान्सीसी राज्यक्रान्ति को उसने मनुष्य की स्वतन्त्रता के जनक के रूप में स्वीकार किया। और इंग्लैंड की फ्रांस के विरुद्ध युद्ध-घोषणा का उसने सबल प्रतिवाद किया। परन्तु जब नेपोलियन की महत्वाकांक्षा शार्लमेन का अनुकरण कर चली तब उसे बड़ा क्षोभ हुआ। बर्क के प्रभाव से उसने भी धीरे-धीरे इंग्लैंड की राजनीति का रुख स्वीकार कर लिया और शीघ्र वह घोर प्रतिक्रियावादी बन गया। इन क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं से पृथक् वर्डस्वर्थ प्रधानतः प्रकृति का कवि है। पिछले काल के प्रकृति-प्रेमी कवियों ने उसका अनुकरण भी प्रचुर मात्रा में किया है। वर्डस्वर्थ की प्रारम्भिक ख्याति उसके 'लिरिकल बैलेड्स' के प्रकाशन से हुई। इस संग्रह में उसकी अपनी कविताओं के अतिरिक्त कोलरिज का 'एन्शेन्ट मैरिनर' भी प्रकाशित हुआ परन्तु जहाँ वर्डस्वर्थ ने सादे देहाती जीवन की घटनाओं का मूर्तन किया, वहाँ कोलरिज ने विचित्रता की उपासना की। 'लिरिकल बैलेड्स' (१७९८) के पहले ही 'प्रिल्यूड' का

प्रकाशन १८५० में ही हो चुका था। 'प्रिल्यूड' आधुनिक अंग्रेज़ी साहित्य की सबसे महान् कविता मानी जाती है, जिसमें मानव-चित्त की एकानुभूति असाधारण रीति से चित्रित हुई। 'लिरिकल बैलेड्स' के बाद वर्डस्वर्थ ने कविता के सानेट का ही उपयोग किया। 'ओड टु इम्मोरटेलिटी' में उस कवि ने जन्मपूर्व के जीवन का एक रहस्यमय अंकन किया। 'कैरेक्टर आफ द हैपी वारियर' में उसने अपने भाई और नेल्सन के कर्मठ जीवन की संसृष्टि की और 'ओड टु ड्यूटी' में वह फिर 'क्लासिकल' अनुभूति की ओर आकृष्ट हुआ। 'लाओडेमिया' भी उसकी एक असामान्य 'क्लासिकल' कृति है। प्रकृति के साथ उसकी घनी सहानुभूति थी और आलोचकों का विचार है कि काव्यालेखन में उसे उस दिशा से बड़ी प्रेरणा मिली। सम्भव है कि प्रकृति-चेतना का उसे आभास मात्र रहा हो परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उसने मनुष्य की प्रकृति की अनजानी गहराइयों तक पैठकर अनुभूति की समृद्धि खोजी और पाई। उसकी अपील परिपक्व चेतना के प्रति है।

एस० टी० कोलरिज (१७७२-१८३४)

एस० टी० कोलरिज (१७७२-१८३४) वर्डस्वर्थ का मित्र था, अभिन्न मित्र, और दोनों पर एक दूसरे का प्रभाव गहरा पड़ा। वर्डस्वर्थ की प्रकृति संयत, धीर और तपस्यापूर्ण थी। उसने काव्य के क्षेत्र में जो खोजा वह पाया। कोलरिज इसके विपरीत सर्वगामी था। इसीसे उसकी बुद्धि एकाकी न हो सकी। कहते हैं, अफ़ीम के प्रति उसकी अदम्य तृष्णा भी उसमें एकनिष्ठा के अभाव का कारण हुई। यद्यपि अफ़ीम का उपयोग उसने उस रोग के निवारणार्थ किया जो आमरण उसे जकड़े रहा। अपने मित्रों और पत्नी तक के प्रति उसका भाव उपेक्षा का था, अनुत्तरदायी, यद्यपि उससे मिलने वाला विरला ही उसके व्यक्तित्व के सम्मोहन और शब्दों के चमत्काकार के जादू से बच पाता था।

कोलरिज केवल कवि ही न था, आलोचक और दार्शनिक भी था। उसने दर्शन, धर्म, विज्ञान और राजनीति का समन्वित स्वप्न भी देखा। उसकी 'बायोग्रेफ़िया लिटरेरिया' में कला की आधुनिक दार्शनिक आलोचना के बीज मिलते हैं। कोलरिज की कल्पना में स्मृति और स्वप्न का अद्भुत संयोग था। उसके काल्पनिक संसार में अद्भुत पक्षियों, अनूठे जहाजों, अनोखे समुद्रों का भी स्थान था। अपार्थिव मूर्तियां, अपार्थिव संगीत, अपार्थिव रूपरेखाएँ अद्भुत रूप से जीवित-सी होकर उसके कल्पना-क्षेत्र में विचरण करती थीं। 'एन्शन्ट मेरिनर' उसके इसी स्वप्न का सत्य है। 'कुबलाखाँ' भी इसी परम्परा में एक अबीसीनियन कुमारी का जादूभरा संगीत है। कवि जीवन के तन्तुओं को तोड़कर अज्ञात, परन्तु जीवित स्वप्न-देश में पहुँच जाता है।

सर वाल्टर स्काट (१७७१-१८३२)

सर वाल्टर स्काट (१७७१-१८३२) की गणना भी रोमान्टिक प्रवृत्ति के

कवियों में की जाती है। स्काट अंग्रेजी के प्रारम्भिक उपन्यासकारों में है और उसका साहित्य में अधिकार विशेषतः उपन्यास-रचना पर माना जाता है। परन्तु काव्य के क्षेत्र में भी उसने काफ़ी ख्याति प्राप्त की; यद्यपि उसका काव्य-क्षेत्र औपन्यासिक विशेषताओं से भरा है। उसकी कविता में भी उपन्यास की ही भांति मध्यकालीन संघर्षमय जीवन के आलोक मिलते हैं। मध्यकालीन बैलेड और 'रोमान्स' उसकी कविताओं में सजग हैं। इस प्रकार की उसकी कविताओं का आरम्भ 'दि ले आफ़ दि लास्ट मिन्स्ट्रेल' (१८०५) से होता है। 'मारमियन' (१८०८) और 'दि लेडी आफ़ दि लेक' (१८१०) इसी परम्परा की कविताएँ हैं। उपन्यासों में सफल हो जाने से उसकी निष्ठा काव्य-रचना में कम हो गई, फिर भी भावों के आवेग, करुण रस का आर्द्रता, वीर और रौद्र रसों के पारिपाक और अतीत के चमत्कारी वर्णन में स्काट अनोखा है।

लार्ड बायरन (१७८८-१८२४)

लार्ड बायरन (१७८८-१८२४) रोमान्टिक कवियों में अपना विशेष स्थान रखता है। बायरन का व्यक्तित्व उसकी कविताओं से कहीं महान् माना गया है। यद्यपि ऐसा कहने से उसकी कवित्व-शक्ति की उपेक्षा भी हो गयी है, फिर भी यह सच है कि बायरन का महान् व्यक्तित्व केवल काव्य-शक्ति तक ही सीमित न था और अनेक बार वह राजनीति के क्षेत्र में भी आकार धारण कर लेता था। यूरोपीय जनता ने तो अधिकतर उसे उसकी स्वातन्त्र्य-प्रियता से जाना। उसने ग्रीक आज़ादी के लिए जो कुछ किया, वह सब का जाना हुआ है। बायरन महान् था, व्यक्तित्व में, आज़ादी की उपासना में, प्रणय की रुग्णता में, काव्य की प्रौढ़ता में। आरम्भ में उसने जो 'आवर्स आफ़ आइडलनेस' लिखा तो आलोचकों और कवियों ने उसे धिक्कारा। इस पर दबना तो दूर रहा, उस महाकवि ने उनका उत्तर 'इंग्लिश बार्डस एण्ड स्काच रिव्युअर्स' (१८०९) नामक अत्यन्त प्रखर चुभने वाली व्यंग्यात्मक कविता से दिया। बायरन अत्यन्त सुन्दर था, कुछ लंगड़ा, और घोर प्रणयी, दुःसाध्य कामुक। कहते हैं कि एक बार जब एक प्रणयिनी से वह पहलेपहल मिला, तब उसका प्रभाव उस नारी पर ऐसा पड़ा कि उसे देखते ही नारी ने अपनी डायरी निकाली और उसमें लिखा—'मैड, बैड एण्ड डेन्जरस' (पागल, बद और खतरनाक)। बायरन 'लार्ड' वर्ग का था। लन्दन की बैठकों का वह 'विजयी नेपोलियन' माना जाता है, यद्यपि प्रणय के क्षेत्र में उसकी यह विजय इंग्लैंड तक ही सीमित न रही। यूरोप के कान्टिनेन्ट पर भी उसका विस्तार हुआ; और इटली, विशेषकर वेनिस में तो उसने भयानक कामुकता का जीवन बिताया। काउन्टेस गिचोली से उसका सम्बन्ध इटली के स्वप्न-जगत का रहस्य बन गया है। वैसे स्वयं इंग्लैंड में बायरन की कामुकता का व्यापार कुछ कम सजग न था और स्वयं उसकी अर्धभगिनी के साथ जो उसका प्रणय-सम्बन्ध बताया जाता है, वह सर्वथा

निराधार न था। रोमांचक प्रवृत्तियों और भावावेगों से उन्मत्त, बायरन की तेजस्विता इंग्लैंड में राजनीति के क्षेत्र में विशेष व्यक्त न हो पायी क्योंकि रोमांचकता उसकी राजनीति पर छा गयी थी। एक बार नाटिंघम के श्रमिकों के प्राणदण्ड के विरुद्ध जो उसने लार्डसभा में व्याख्यान दिया, वह अद्भुत शक्ति का था और कुछ लोगों ने आशा भी बांधी कि एक दिन बायरन इंग्लैंड के राजनीजिक क्षेत्र का नेतृत्व करेगा परन्तु उनकी कामना सफल न हुई।

बायरन पर्यटक था। उसने अनेक लम्बी यात्राएँ कीं और उन यात्राओं में जो रोमांचक साहसिकता का पुट था, उसने उससे अँग्रेज़ पाठकों को घर बैठे विदेशों से साक्षात् कराया। 'गियोर' (१८१३) में उसने अपनी पीढ़ी की अभिरुचि को अभिव्यक्त किया। इससे उसकी ख्याति फ्रांस से रूस तक फैली। 'गियोर' से भी अधिक विख्यात 'चाइल्ड हेरोल्ड' (१८१२-१८) हुआ, जिसमें उसने लुके-छिपे अपना ही परिचय दिया। इसके पिछले सर्गों में वर्णन-व्याख्या प्रधान है। नगर, खण्डहर, फैले मैदान बायरन के तीव्र वर्णन से पाठक के सामने मूर्तिमान हो आते हैं। इन सबकी पृष्ठभूमि रोमांचक है, जो एक अनोखी शालीनता का सृजन करती है। उसने कुछ सचेतक कारुणिक कथाएं भी अपने 'मैनफ्रेड' और 'केन' जैसी कृतियों में सिरजीं परन्तु वस्तुतः उसकी ख्याति काव्य के क्षेत्र में व्यंग्यात्मक रचना 'बेप्पो' (१८१८), 'दि विज़न आफ़ जजमेन्ट' (१८२२) और 'डान जुआन' (१८१९-२४) पर प्रतिष्ठित हुई। 'डान जुआन' तो निश्चय अँग्रेज़ी भाषा की महत्तम कविताओं में है। इसमें जीवन की विषमताएँ, कारुणिकता, साहस, आवेग सभी कुछ सजीव हो उठे हैं। व्यंग्य उसके चित्र-चित्र से बोलता है, जीवन शब्द-शब्द से चूता है।

शेली (१७९२-१८२२)

शेली (१७९२-१८२२) और कीट्स (१७९५-१८२१) इसी अँग्रेज़ी रोमाण्टिक शैली के कवि हैं। पी० बी० शेली प्रखर रोमांचक बायरन के विपरीत उस परम्परा का सबसे बड़ा आदर्शवादी है। उसके आदर्शवाद पर कुछ आलोचकों ने असन्तोष प्रकट किया है और उसे ब्लेक की श्रेणी में रखा है। निःसन्देह शेली ब्लेक की ही भांति द्रष्टा है परन्तु वह उससे कहीं बढ़कर कवि है। आरम्भ से ही शेली को संघर्ष करना पड़ा था; पहले पिता के विरुद्ध, फिर अपने आचार्यों के विरुद्ध। आक्सफ़ोर्ड में जो उसने अपने अनीश्वरवादी सिद्धान्तों से आचार्यों को चुनौती दी, तो उसे विश्वविद्यालय छोड़ना पड़ा। हैरियट के साथ उसका विवाह भी अत्यन्त कष्टकर सिद्ध हुआ और इन कटु अनुभवों ने उसकी प्रकृति को सर्वथा अक्खड़ बना दिया। उसने अपनी पत्नी को त्याग दिया और पत्नी ने आत्महत्या कर ली। उसके बाद उसने मेरी गोडविन से विवाह किया, जिसके साथ उसने अपने जीवन का बड़ा भाग स्विटजरलैंड और इटली में

बिताया, जहाँ स्पेजिया की खाड़ी में तूफान से उसकी मृत्यु हुई। जिसके जीवन में इतनी घटनायें घटें, इतनी तिक्त अनभूतियाँ भरी हों, उसका द्रष्टा हो जाना कुछ अजब नहीं, विशेषकर जब उसमें कृतित्व की इतनी महान् शक्ति हो, जितनी शेली में थी। शेली ने जीवन को केवल देखा, उसकी कटु अनुभूतियों को सहा ही नहीं, उसने उन्हें बदल भी देना चाहा। आशावादी द्रष्टा की भाँति उसने कहा कि यदि अत्याचार दूर कर दिया जाय, क्रूरता और अनाचार का लोप हो जाय, द्वेष और शक्ति के तांडव संसार से उठा दिये जाएँ तो निस्सन्देह जीवन सुन्दर हो जाय और संसार वश्य। इसी संदेश को लेकर वह मानवता के सामने खड़ा हुआ। इसी सन्देश को लेकर वह 'क्वीन मैब' और 'रिवोल्ट आफ़ इस्लाम' के साथ कार्यक्षेत्र में उतरा। लेकिन उसकी साधना की सिद्धि वस्तुतः 'प्रमेथियस अनबाउण्ड' में हुई। इस गेय नाटिका में उसने स्काइलस की 'ट्रेजेडी' को अपना माडल बनाया और जुपिटर द्वारा प्रमेथियस के चट्टान से बाँधे जाने की कथा लिखी। उसने इसमें मनुष्य को प्रेम की शक्ति से निरंकुशता और अत्याचार का प्रतिरोध करने को ललकारा। आधुनिक अँग्रेजी-साहित्य में 'प्रमेथियस अनबाउण्ड' का लिरिक तत्व अद्वितीय है। शेली की आलोचना भी तीव्र हुई है और इसमें कुछ तथ्य है कि उसमें विनोद की मात्रा बहुत कम है। साधारण जीवन से भी, उसके संघर्ष के बावजूद, उसका सम्बन्ध कम दीखता है। इस रूप में न तो वह चासर है, न शेक्सपियर, न मिल्टन। संसार से जैसे वह दूर है और उसकी भाव-प्रतिमाओं में वायु, सूखी पत्तियाँ, ध्वनियाँ, लहरें आदि रूप धारण करती हैं। अनेक बार तो ऐसा लगता है कि वह जीवित जगत से दूर के किसी आत्म-परिवार का परिचय दे रहा है। आज काव्य-पाठकों के संसार पर उसकी पकड़ ढीली पड़ चली है, यद्यपि 'ओड टु दि स्काई लार्क' आज भी पढ़ा जाता है। कारण कि जीवन उसकी पकड़ से छूट चुका है।

जान कीट्स (१७९५-१८२१)

रोमांटिक परम्परा के विशिष्ट कवियों में जान कीट्स है। रोमांचकता का वह मूर्तिमान् स्वरूप था। इंग्लैंड के महान् कवियों में वह सबसे अल्पायु में मरा, प्रायः २५ वर्ष की आयु में। वह रोमांटिक कवियों में सबसे पिछला था, सबसे पहले मरा। उसका पिता अस्तबल का रक्षक था। उसने उसे डाक्टर बनाने की प्रभूत चेष्टा की; यद्यपि बचपन से ही काव्य-प्रेम ने कीट्स को कविता के प्रति अनुरक्त कर दिया था। प्राचीन काव्यों से उसने कथाएँ ढूंढ़ निकालीं और स्पेंसर तथा शेक्सपियर की कृतियों से शब्द की माया-शक्ति प्राप्त की। साथ ही एक्रोपोलिस से लायीं एल्गिन की संगमरमर-प्रतिमाओं (एल्गिन मार्बल्स) और उसके मित्र हेडन के चित्रों ने उसे आलेखन की शक्ति प्रदान की। वैसे कविता के क्षेत्र में वह किसी का शिष्य न था, अपने आप उसने उस दिशा में सफलता पाई। उसके 'लेटर्स' उसके आलोचनात्मक विचारों के अद्भुत प्रमाण हैं यद्यपि साथ

ही वे फैनी ब्राउन के प्रति उसके असीम प्रेम का उद्घाटन करते हैं। इटली जाकर उसने अपने गिरते हुए स्वास्थ्य की रक्षा का असफल प्रयत्न किया परन्तु क्षय ने उसे विवश कर दिया और एक दिन वह दुनिया से चल बसा।

उसकी लम्बी कविता 'एन्डीमियन' (१८१८) उसी साल लिखी गयी, जिस साल यूरोप का महादार्शनिक हीगल मरा और महामना मार्क्स उत्पन्न हुआ। आलोचकों ने 'एन्डीमियन' की या तो सक्रिय उपेक्षा की अथवा उसकी तीव्र आलोचना। यह सही है कि यह कविता अतिरंजित है परन्तु इसके अनेक स्थल उस सौन्दर्य के प्रतीक भी हैं जो मूर्तिकार और चित्रकार के समन्वित प्रयत्न शब्दांकन के आधार से प्रस्तुत कर सकते हैं। 'लामिया', 'इजाबेला' और 'ईव आफ़ सेन्टग्नीज़' के द्वारा उसने काव्य-कथाएँ प्रस्तुत कीं जिनकी पृष्ठभूमि रंगों के विस्तार में नितान्त ऋद्ध थी।

कीट्स आवेगों का कवि था, सौंदर्य का उपासक, उसकी प्रेरणा से समर्थ कवि। 'हाइपीरियन' नामक उसकी कविता यद्यपि अधूरी रह गई परन्तु उतने से ही प्रमाणित है कि यदि कीट्स ने उसे पूरा कर दिया होता तो वह दार्शनिक कवि के रूप में भी कितना महान् होता। धीरे-धीरे उसकी सम्वेदना अपने वातावरण से घनी हो चली थी और जहाँ शेली एक स्वप्न के देश में विचरने लगा था वहाँ कीट्स अपने वातावरण का घना स्पर्श पाने लगा था। 'हाइपीरियन' में पुरानी परम्परा के देवताओं के स्थान पर नित्य नये देवों की उठने वाली शृंखला का प्रतिपादन है जो उसकी मिल्टन-वत् प्रगतिशीलता को एक मात्रा तक प्रकट करता है। यदि कीट्स कुछ काल और जी गया होता तो मानवता उसकी सक्रिय भावुकता के योग से निःसन्देह बलवती होती।

: ५ :
टेनिसन से यीट्स तक

टेनिसन (१८०९-९२)

१९वीं सदी के कवि, जिनका आरम्भ कीट्स तथा अन्य रोमान्टिक कवियों के बाद हुआ, अधिकतर मलका विक्टोरिया के समकालीन थे। टेनिसन (१८०९-९२) शायद विक्टोरिया कालीन कवियों में सबसे महान् हुआ, यद्यपि उसके आलोचकों ने उसके पराभव में कुछ उठा न रखा। शब्दों की शालीनता और ध्वनियों के उपयोग में तो वह अंग्रेजी-साहित्य में बेजोड़ है। उसकी प्रारम्भिक गेय कविताएं तो जैसे शब्दों के सुन्दरतम नमूने बुनती जाती हैं। हाँ, इतना जरूर है कि मौलिकता और गहराई में अपने पूर्ववर्ती रोमान्टिक कवियों की अपेक्षा वह काफ़ी पीछे है। उसकी बड़ी कविताओं में लोगों ने शिथिलता का दोष पाया है, यद्यपि 'उलिसिज़' के सम्बन्ध में यह दोष सार्थक

नहीं। 'उलिसिज़' वीर-काव्य की आत्मा को रोमाञ्चकसजीवता से अनुप्राणित करता है।

परन्तु वस्तुतः टेनिसन की प्रतिभा उसकी लिरिकों और 'इनोन', 'दि ड्रीम आफ़ फ़ेयर वुमन', 'दि प्लेस आफ़ आर्ट' आदि छोटी कविताओं में है, यद्यपि उसकी महत्वाकांक्षा उसे इन तक ही सीमित न रख सकी। उसकी 'ईडिल्स' में चित्रण और रूपकों का प्रसार है परन्तु चासर या स्पेन्सर के सामने वह फीकी पड़ जाती हैं। टेनिसन ने आर्थर-सम्बन्धी कहानियों को विक्टोरिया-कालीन आचार से मढ़ा परन्तु वह स्वयं समसामयिक युग को पकड़ न सका। आंखों के नीचे बहता जीवन उसके दृष्टिपथ से ओझल हो गया, और एक दूर की अनजानी स्वप्निल दुनिया उसकी नज़रों में लहरा उठी। 'आइडिल्स' में आर्थर-सम्बन्धी काव्य-कहानियों की ही भांति शब्दों की शालीनता है, कल्पना की रोमाञ्चकता है और अनजाने का अनोखापन है, परन्तु वह सारा जीवन से परे की दुनिया है, उसका लोक उस 'पोयट लारियट' का लोक है जो टेनीसन था। 'इन मेमोरियम' का लोक निश्चय उसका अपना है; टेनिसन का, कवि का। और चूंकि यह कवि की अपनी सच्ची कृति है अतः उस युग की वह महान् कृति भी बन गयी है। उसमें उसने अपने मित्र आर्थर हैलम की मृत्यु का वर्णन किया है और उसके विचार जीवन-मरण तथा उनके बाद की दुनिया का स्पर्श करते हैं। सावधि जगत का विज्ञानवाद उसे जैसे डरा देता है और वह बालक की भाँति भगवान् की संरक्षा का वरदान माँगता है। 'इन मेमोरियम' निस्सन्देह अकृत्रिम कृति है।

टेनिसन काफ़ी पढ़ा गया है, उसका अनुकरण भी काफ़ी हुआ है; इसी से यह भी प्रत्यक्ष है कि उसके अनेक आलोचक हुए। उसने काव्य के क्षेत्र में प्रगति करते हुए अपनी आंखें स्वदेश के औद्योगीकरण की ओर से मींच लीं। इसी कारण उसकी कविता भी मैथ्यू आर्नल्ड के शब्दों में 'जीवन की व्याख्या' न बन सकी। इस खतरे से जैसे भयभीत होकर वह अपनी अन्य कविताओं—'लाक्सले हाल', 'दि प्रिन्सेस' और 'माड'—में वास्तविक जीवन के स्तर पर उतर आता है।

राबर्ट ब्राउनिंग (१८१२-८९)

जिन नैतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक समस्याओं का टेनिसन ने स्पर्श-मात्र किया, राबर्ट ब्राउनिंग (१८१२-८९) के लिए वे प्रधान प्रेरणाएँ बन गयीं। राबर्ट ब्राउनिंग को अधिकतर दार्शनिक कवि मानते हैं। साहस और शक्ति उसके शब्द-शब्द से टपकती है परन्तु यह सब उसके उस दर्शन से सम्बन्ध रखता है जिसमें वह निर्भीकता पूर्वक मृत्यु से लड़ता है अथवा मृत्यु के भय का सफल सामना करता है। इसी कारण उसकी कविता में जीवन के प्रति बड़ा विश्वास बन पड़ा है। आशावादी जीवन स्पष्टतः निराशा पर व्यंग्य करता है।

ब्राउनिंग ने कविताएँ तो लिखी हीं, उसने ड्रामे के भी कुछ प्रयोग किये। उसने ड्रामे का प्रयोग विना उसके रंगमंचीय अभिनय के विचारों के किया। उसमें उसका दर्शनमात्र प्रतिबिम्बित था, जैसा कि 'पैरासोल्सस' (१८३५) या 'पिप्पा पासेज़' (१८४१) से प्रकट है। इन नाटकों में गति केवल मानव-कर्मों की शृंखला से प्रस्तुत होती है, उसके लिए अनेक चरित्रों की पारस्परिक प्रतिक्रियाएँ उतना अर्थ न रखती थीं जितना एक ही व्यक्ति के आन्तरिक द्वन्द्व। इसी कारण उसने एक प्रकार के एक-पात्रीय वक्तव्य वाली नाटकीयता की नींव डाली। इसी रूप में उसके विशेषतः जाने हुए नाटक 'एन्ड्रीयाडेल सार्टो,' 'फ्रालिपो लिपी', 'साल', और 'दि विशप आर्डर्स हिज़ टूम्ब' आदि प्रस्तुत हुए। इनका प्रकाशन जिल्दों की एक शृंखला में 'ड्रामेटिक लिरिक्स' (१८४२),'मेन एण्ड विमेन' (१८५५) और 'ड्रामेटिस्ट पर्सनी'(१८६४) में संग्रहीत हुए। और इन्होंने राबर्ट ब्राउनिंग को जो यश प्रदान किया वह टेनिसन को छोड़कर और किसी को १९वीं सदी के उत्तरार्ध में न मिला।

इसी परम्परा में प्रस्तुत उसकी 'दि रिंग एँण्ड दि बुक' (१८६८-६९) है, जिसमें एक पात्रीय नाटकीयता का तन्तु अंग्रेज़ी साहित्य की सबसे लम्बी कविताओं में से एक प्रस्तुत करती है। इसमें ब्राउनिंग ने एक इटालियन अपराध-कहानी का काव्य-रूप में वितन्वन किया है और उसी सूत्र से उसने अपने रहस्यमय काव्य-दर्शन का अंकन किया है। उसकी कविताएं प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तियों से भरी हैं और इटली का पुनर्जीवन-काल जैसे ब्राउनिंग के पृष्ठों में एक बार फिर जी उठता है। ब्राउनिंग के साहस और निर्भीकता के बावजूद उसका प्रयास डान क्विक्ज़ोट का-सा है। दर्शन के माध्यम से घूमने वाले उसके चरित्र जैसे एक कल्पित संसार में घूमते हैं और किसी प्रकार भी उनको स्वतन्त्र नहीं कहा जा सकता। लगता है, जैसे उसके नर-नारी पात्र किसी तानाशाही दुनिया के जीव हैं, जिनका तानाशाह ब्राउनिंग स्वयं है।

एलिजाबेथ बार्नेट (१८०६-६१)

राबर्ट ब्राउनिंग के साथ अंग्रेज़ी-साहित्य की प्रसिद्ध कवियित्री एलिज़ाबेथ बार्नेट (१८०६–६१) का नाम सम्बन्धित है। एलिज़ाबेथ निस्सन्देह ब्राउनिंग के सम्पर्क में विशेष चमकी परन्तु निश्चय काव्य के क्षेत्र में उसका अपना स्थान है और उसकी कविताएँ, 'सानेट्स फ्राम दि पोर्चुगीज़' और 'आरोश ले', जो उसने ब्राउनिंग से सम्बन्ध के पहले लिखी थीं, इस दिशा में ज्वलन्त प्रमाण हैं। ब्राउनिंग एलिजाबेथ को लेकर इंग्लैंड से बाहर कान्टिनेन्ट भाग गया था और उसके अनुयायियों पर उसका यह आचरण रोमांटिक हीरो के रूप में अपनी छाप छोड़ गया।

मैथ्यू आर्नल्ड (१८२२-८८)

१९वीं सदी के उत्तरार्ध में मैथ्यू आर्नल्ड, फ़ित्सजेराल्ड, रोसेटी स्विनबर्न, मारिस, क्रिस्टिना रोसेटी, पैटमोर, टामसन आदि हैं। मैथ्यू आर्नल्ड (१८२२-८८) जो

आलोचक के रूप में विशेष प्रसिद्ध है, कविता के क्षेत्र में भी काफ़ी जाना हुआ है। उसकी कविताएँ—'एम्पिडाक्लीज़ ऑन एटना', 'दि फ़ोरसेकन मरमैन,' 'थेरसिस', 'दि स्कालर जिप्सी' और 'डोवर बीच'—काफ़ी प्रसिद्ध हैं। अपनी कृतियों में, विशेषकर गद्य की, उसने मानव-जीवन की समस्याओं पर विचार किया। उसकी 'सोहराब और रुस्तम' की-सी लम्बी कविता काफ़ी लोकप्रिय है। परन्तु निस्सन्देह मैथ्यू आर्नल्ड का वास्तविक स्थान आलोचना के क्षेत्र में है।

एडवर्ड फित्सजेराल्ड (१८०६-८३)

एडवर्ड फित्सजेराल्ड (१८०६-८३) अत्यन्त प्रमादी था और स्वतन्त्र कविताएँ भी उसने कुछ बहुत नहीं लिखीं परन्तु फ़ारसी कवि उमर खय्याम की अमर रुबाइयों का जो 'दि रुबाइयात आफ़ उमर ख़य्याम' के नाम से १८५६ में उसने प्रकाशित कीं, वह अनूदित साहित्य के क्षेत्र में एक आलोक-स्तम्भ है। कहते हैं, फित्सजेराल्ड ने अनुवाद को मूल से सुन्दरतर बना दिया है। इस एक सफल अनुवाद ने उसे हज़ार स्वतन्त्र कृतियों के कवि-सा साहित्य में प्रतिष्ठित कर दिया और वह १६ वीं सदी के पिछले दशकों में साहित्य के प्रधान व्यक्तियो में से माना गया है।

डी० जी० रोसेटी (१८२८-८२)

फित्सजेराल्ड को खोजने का श्रेय डी० जी० रोसेटी को है। रोसेटी का स्थान विक्टोरिया-काल के साहित्य में बहुत ऊंचा है। वह इटली के एक राजनीतिक शरणार्थी का बेटा था। विक्टोरिया-काल का साहित्यकार होकर भी उसने साहित्य से दार्शनिक, राजनीतिक और धार्मिक प्रसंगों को अलग रखा। वह निरा कलाकार था। वैसे भी वह पहले चित्रकार रह चुका था, जहाँ उसने परम्परा की शृंखला को तोड़कर स्वतन्त्रता और सत्य का अन्वेषण किया था। उसका चित्त प्रतीकवादी और कल्पना-प्रधान था, जिससे उसकी कविता में भी यथार्थ के विरुद्ध चित्रों का प्राधान्य हो गया है, यद्यपि उसके सिद्धान्तों में यथार्थता का अभाव नहीं। चित्त के इस संघर्ष का उदाहरण स्पष्ट रूप से उसके 'दि ब्लेसेड डेमोज़ेल' में मिलता है, जिसमें काव्य-विस्तार और प्रसंग रहस्यवादी है परन्तु अन्तिम लक्ष्य शृंगारिक है, प्रायः यौन, काय-प्रधान। उसकी नितान्त पार्थिव कृतियों में सर्वत्र प्रतीकों की छाया है जो उसके साहित्य पर धुंधले जल-प्रवाह, मलिन ज्योत्स्ना और जब-तब प्रभूत चित्रों के साथ अवतरित होती है। उसके लिरिकों और बैलेडों का यही वातावरण है। यहीं उसके प्रकाशनों—'पोयम्स' (१८७०) और 'बैलेड्स' तथा 'सानेट्स' (१८८१)—में प्रतिबिम्बित हैं। 'दि हाउस आफ़ लाइफ़' उसकी प्रसिद्ध कृति है, जिसमें रहस्य और यौन का अद्भुत सम्मिश्रण है। दांते और उसके समवर्ती साहित्यकारों का जो रोसेटी ने अनुवाद किया तो वस्तुतः वह स्वयं उनके गहरे प्रभाव से वंचित न रह सका। रोसेटी के आकर्षक व्यक्तित्व ने

अनेक प्रतिभाशाली तरुणों को आकृष्ट किया।

स्विनबर्न (१८३७-१९०९)

इन तरुणों में स्विनबर्न (१८३७-१९०९) अपनी कविता और उसके नग्न प्रणय-निवेदन से शीघ्र प्रसिद्ध हो गया। एलजरनोन चार्ल्स स्विनबर्न पहले इटन और आक्सफ़ोर्ड का विद्यार्थी था, जहाँ उसने अपनी जीवन-सम्बन्धी चुनौतियों द्वारा काफ़ी हलचल पैदा की और जब १८६६ में वह साहित्य के क्षेत्र में अपनी 'पोयम्स एण्ड बैलेड्स' लेकर उतरा, तब तो विक्टोरिया-कालीन काव्य में उसके भाव-विद्रोही प्रणय-बहुल नग्न चित्रणों ने उथलपुथल मचा दी। एक वासना की लहर-सी नये काव्य-क्षेत्र में बह गयी, जिसको विक्टोरिया-कालीन काव्य-क्षेत्र में सहन करने की ताव न थी। एक प्रकार से वह कीट्स की भावनाओं को उनके ग्रीक आधारों से पुनरुज्जीवित कर रहा था। उसके लिरिकों ने एक प्रकार से ड्रामा और कोरी कविता के क्षेत्र में विप्लव मचा दिया। उसकी कृतियों में विशेष 'इटिनस', 'एटलान्टा इन कैलीडन' (१८६५) और 'इरेक्थियस' (१८७६) विशेष प्रसिद्ध हैं। स्विनबर्न ने कविताएं और नाटक फिर-फिर लिखे परन्तु उसके कृतित्व की शक्ति उनमें इतनी प्रकट न हो सकी जितनी उसकी प्रारम्भिक कृतियों में हुई थी। कारण यह था कि उसकी वासना-चेतना स्वाभाविक ही कायिक शक्तियों से सम्बद्ध थी और अपनी तरुण आयु में उनका 'डोलोरिस', 'लाउस वेनेरिस,' 'फ़ास्टाइन' आदि में वह अकृत्रिम अशृंखलित रूप प्रस्तुत कर सका। शर्म और परहेज उसकी राह में कहीं नहीं अटके।

विलियम मारिस (१८३४-९६)

विलियम मारिस (१८३४-९६) भी रोसेटी के ही भावों से प्रभावित था। काव्य के क्षेत्र में वह शिल्प के क्षेत्र से प्रादुर्भूत हुआ। उसने शिल्प की चेतना काव्य की सृष्टि में डाली। और अपने जीवन-काल की उस परिस्थिति को वह न भुला सका जहाँ तीव्र उत्पादन और अमित लाभ का राज है। 'दि डिफ़ेन्स आफ़ गिनिवियर' (१८५८) के चित्र कल्पना-प्रधान होकर भी जीवन से ओतप्रोत हैं। उनमें शक्ति और वज़न है। 'दि अर्थली पैराडाइज़' में उसने लम्बी कविता को चासर की भांति कथालेखन का आधार बनाया परन्तु उसमें न तो चासर की सचेष्ट मानवता है, न उसका भाषाधिकार और न शक्तिशाली चरित्र-चित्रण। धीरे-धीरे समसामयिक जीवन की पुरुषता ने उसे कल्पना के अकृत्रिम क्षेत्र को छोड़ने पर वाध्य किया। उसकी कृतियों में विशेषतः 'सिगुर्ड दि वोलसंग', 'ए ड्रीम आफ़ जान वाल', 'न्यूज़ फ्राम नोह्वेयर', 'दि वेल एट दि वर्ल्डस एण्ड' विशेप प्रसिद्ध हुईं।

क्रिस्टिना रोसेटी : कावेन्ट्री पैटमूर : फ्रान्सिस टामसन

क्रिस्टिना रोसेटी (१८३०-९४) यद्यपि प्रसिद्ध रोसेटी की ही वहिन थी, परन्तु

उसका जीवन भाई के जीवन के बिल्कुल विपरीत था, नितान्त धार्मिक। 'गॉबलिन मार्केट' में उसने सुन्दर काव्य-चित्रण किया। कावेन्ट्री पैटमूर (१८२३-९६) ने इसी काल 'दि ऐंजिल इन दि हाउस' नाम के काव्य में एक उपन्यास ही रच डाला, जिसमें उसने कविता को रोज़मर्रा के जीवन का बाना पहिनाया। उसने 'दअननोन इरोस' द्वारा पेचीदा विचारों को काव्य के रूप में प्रस्तुत किया और कैथलिक कवि के रूप में इसी अपनी जटिल रहस्यमय विचारधारा के कारण विशेष प्रसिद्ध हुआ। फ्रान्सिस टामसन (१८५९-१९०७) भी कैथोलिक कवि ही था और उसने भी काफ़ी लोकप्रियता हासिल की। गरीबी और कष्ट के जीवन को उसने अपनी कविता में प्रतिबिम्बित किया। 'दि हाउण्ड आफ हेवेन' उसकी जानी हुई कृति है।

जार्ज मेरेडिथ (१८२८-१९०९)

१९वीं सदी के पिछले दशकों में उपन्यास-साहित्य काव्य-साहित्य के ऊपर उठ गया। कई साहित्यकारों ने पहले काव्य के माध्यम से साहित्य-क्षेत्र में जीवन आरम्भ किया परन्तु शीघ्र वे उपन्यासकार हो गये और उपन्यासकार के रूप में ही वे विशेष प्रसिद्ध हुए। इनमें टामस हार्डी (१८४०-१९२८) और जार्ज मेरेडिथ (१८२८-१९०९) विशेष उल्लेखनीय हैं। जार्ज मेरेडिथ ने अपनी प्रारम्भिक काव्य-कृति 'लव इन दि वैली' द्वारा अच्छा नाम कमाया। उसकी कविताओं और उपन्यासों में स्वभावतः ही अनेक वार एकरूपता का दर्शन होता है। उसने उपन्यासों की ही भाँति कविताओं में भी दर्शन की चेतना मूर्त की। सदाचार और वनस्पति-शास्त्र के आँकड़ों को एकत्रकर उसने 'पोयम्स एण्ड लिरिक्स आफ़ दि जौय आफ अर्थ' लिखा, जिसमें उसने दिखाया कि पृथ्वी मनुष्य को अपनी वन्य प्रकृति दबा रखने में उसकी सहायता नहीं करती। पशुता और भावावेग दोनों मनुष्य को दबाये रखने में एकत्र प्रयत्न करते हैं। मेरेडिथ की कविताओं में मनुष्य की कमज़ोरियों का वार-वार चित्रण हुआ है। काव्य-रूप में उसकी कृतियाँ कठिन हैं यद्यपि उनकी भाव-चेतना स्वस्थ और सवल है।

टामस हार्डी (१८४०-१९२८)

टामस हार्डी प्रारब्धवादी था। नर-नारी के कारुणिक प्रसंग उसके उपन्यासों और कविताओं, दोनों में क्रूर प्रारब्ध-चालित रूप में उपस्थित होते हैं, जिनका निराकरण वह कभी नहीं करता। अपनी लघु लिरिकों में वह परिस्थितियों से मजबूर क्रूरता की चपेटों से विह्वल नर-नारियों को प्रारब्ध-द्वारा नीयमान् अन्धों की भांति खिंचे जाते चित्रित करता है। जिस संक्षिप्तता और शब्द-लाघव द्वारा हार्डी इन चित्रों को उपस्थित करता है, वह वैयक्तिक काव्य-कला की एक विजय है। अपनी उपन्यास-शृंखला के बाद उसने नेपोलियन के युद्धों के आधार पर 'दि डाइनेस्ट्स (१९०४-८) नाम का एक वीर-काव्यात्मक नाटक भी लिखा। उसका नाटक रंगमंच के योग्य तो न हुआ परन्तु चित्त के रंगमंच पर अनेक आलोचकों को वह विशेष सफल जँचा।

टी० ई० लारेंस :

टी० ई० लारेन्स ने १९०६ ई० में 'दि डान इन ब्रिटेन' नामक लम्बी कविता के कुछ भाग प्रकाशित किये। यह कविता उस काल की काव्यधारा के नितान्त विपरीत थी। निस्सन्देह रोमान्टिक कवियों की रूमानी चेतना उसमें नहीं परन्तु उसकी इस कृति में सभ्यता के प्रारम्भिक दिनों के मानव-प्रयास के जो चित्र प्रस्तुत हुए हैं, अपनी नग्न सामर्थ्य में वे निश्चय असाधारण हैं। इस प्रकार की दूसरी कविता 'दि टेस्टामेन्ट आफ़ ब्यूटी' (१९२९) रावर्ट ब्रिचेज़ ने लिखी, जो प्रारम्भ में वड़ी लोकप्रिय हुई। इस दार्शनिक कविता में ब्रिचेज़ ने बुद्धि और सौन्दर्य की परिभाषा की।

आस्कर वाइल्ड : : अर्नेस्ट डाउसन : लायोनल जान्सन : हाउसमन

२०वीं सदी का आरम्भ अँग्रेज़ी-साहित्य में एक नये युग के रूप में आया। यह सही है कि १९वीं सदी के पिछले युगों के अनेक कवियों ने अपनी पुरानी निष्ठा किसी न किसी रूप में जीवित रखी परन्तु निस्सन्देह उनका युग अब समाप्त हो चुका था। रोमान्टिक परम्परा को समाप्त कर उसके स्थान पर कवियों के एक नये दल ने नये लिरिकों की रचना की, जिनका स्वर विषाद और करुणा का था और उनकी गेयता में आकर्षक सौन्दर्य था। उन्होंने अपनी कविताओं से सदाचार और दर्शन की विक्टोरिया-कालीन समस्याओं को बाहर कर दिया और हल्की-फुल्की पंक्तियों में अपने चित्त और प्रणय की अनुभूतियों को मूर्त किया। आस्कर वाइल्ड, जिसका नाम काफ़ी वदनाम हो गया है, इन्हीं में था। यद्यपि काव्य के क्षेत्र में वह अपेक्षाकृत प्रायः अनजाना है, परंतु नाटक-क्षेत्र में निश्चय ही वह विशेष विख्यात हुआ। अर्नेस्ट डाउसन आस्कर वाइल्ड से अपनी कविता के गेय तत्व में कहीं अधिक ऋद्ध है। काव्य के प्राचीन प्रतीकों का वह नये सिरे से प्रयोग करता है। जान्सन के लिरिकों में एक प्रकार के गम्भीर सौन्दर्य का मूर्तन हुआ है। केम्ब्रिज में लेटिन का प्रोफेसर ए० ई० हाउसमन इन कवियों से जीवन में भिन्न होकर भी चित्त से बहुत कुछ इन्हीं का-सा है। 'ओपशायर लैंड' (१८९६) और 'लास्ट पोयम्स' (१९२२) द्वारा उसे इस दिशा में प्रचुर ख्याति मिली है। उसने पुराने शब्दों के नये प्रयोग किये और आवेगों के मूर्तन तथा उनकी अभिव्यक्ति में प्रयुक्त भाषा तो निश्चय शब्द-रूप में स्वीकार्य है। प्रकृति के प्रति उसकी भावनाएँ भी सबल-सहज तीव्रता प्रस्तुत करती हैं। हाउसमन आवेगों का कवि है।

जार्जियन पोयट्स

जार्ज पंचम के नाम से जिस काव्यधारा का वोध होता है, वह उस राजा की समसामयिकता मात्र से सम्बन्ध रखता है, कुछ उसके कृतित्व से नहीं। उसके राज्यकाल के लिरिक कवियों के एक दल को 'जार्जियन पोयट्स' कहते हैं। इधर के आलोचना-क्षेत्र में उन पर गहरा आघात हुआ है। उनको आलोचकों ने गाम्भीर्य-हीन, अति समसाम-

यिक मान है। आलोचकों का कहना है कि उन्होंने घने से घने आवेगों का सुन्दर पद्य-रचना के लिए प्रयोग कर उनके साथ अन्याय किया है। रूपर्ट ब्रूक, जिसने १९१४ में स्वदेश-प्रियता, कर्तव्यनिष्ठा और आदर्शवाद पर कुछ सानेट प्रकाशित किये, इन आलोचकों के रोष का केन्द्र बन गया। ब्रूक ने युद्ध में मृत्यु वीर-दर्प का आधार माना। वाल्टर डिलामेयर शब्द का जादूगर माना जाता है, जिसने शब्दों की चेतना में एक नयी रहस्यमयी संसृष्टि की। उस काल के प्रधान कवियों में जेम्स एलराय फ्लेकर का नाम उल्लेखनीय है। वह फ्रेंच और फ़ारसी पढ़ा हुआ था, जिससे उसने अपनी लिरिकों की ध्वनि में उन भाषाओं के मधुर पद्य का योग दिया। इन कवियों के विरुद्ध जो विशेष आलोचना हुई, उसका स्वर यह था कि कविता में आज के जीवन का योग होना चाहिए। जान मेसफ़ील्ड ने इसी विचारधारा से प्रभावित होकर अपने प्रारम्भिक सागर-सम्बन्धी लिरिकों को छोड़ मानव कहानियों की कष्ट-चेतना को अपनाया। 'दि एवरलास्टिंग मर्सी' और 'दि डेफ़ोडिल फ़ील्ड्स' इस प्रवृत्ति के प्रमाण हैं। मेसफ़ील्ड ने उन यथार्थवादी प्रसंगों को फिर से ग्रहण किया जो उपेक्षित हो गये थे। इस काल के अन्य कवियों ने तो अपने इस विद्रोह को और भी जटिल रूप से प्रकट किया। जेरार्ड मैनली हापकिन्स उन्हीं में से है और यद्यपि वह १८८९ में मर चुका था, १९१८ में उसकी रचना प्रकाशित हुई। वह जेसुइट कवि था और उसने धार्मिक धाराओं का मूर्तन किया परन्तु पद्य-रचना और विचार दोनों से उसकी मौलिकता प्रमाणित है। उसने कविता की ध्वनि में शब्द और व्याकरण दोनों को दबा दिया है। उसकी काव्य-शैली का अनेक वाद के कवियों ने अनुकरण किया। विलफ्रिड ओवेन की युद्ध-सम्बन्धी कविताओं पर हापकिन्स का काफ़ी प्रभाव पड़ा, यद्यपि वह एक पीढ़ी पहले मर चुका था।

टी० एस० एलियट

बीसवीं सदी के विशिष्ट अंग्रेजी कवियों में एलियट और यीट्स हैं। एलियट ने पद्य और गद्य दोनों लिखा है और दोनों में उसने प्रभूत ख्याति पाई है। उसकी प्रारम्भिक कविताओं का संग्रह १९१७ में 'प्रूफ़ राक' के नाम से निकला था। ये कविताएँ व्यंग्यपूर्ण और नाटकीय थीं, जिन्होंने तत्कालीन सभ्यता पर गहरी व्यंग्यात्मक चोटें कीं। एलियट की साधना बुद्धि और प्रतीकवादी है। उसकी कृति 'दि वेस्ट लैण्ड' का काफ़ी आदर हुआ है। इसमें उसने प्रथम महासमर के बाद के यूरोप का जीवन प्रतिबिम्बित किया है। 'दि वेस्ट लैण्ड' द्वारा उसने यह प्रकट किया है कि आज की सभ्यता का एक अपना अतीत तो अवश्य है परन्तु न कोई उसका भविष्य है, और न विश्वास, न आदर्श, न निष्ठा। विश्वास तो वह अनिवार्य आवश्यकता मानता है। अपने 'मर्डर इन दि कैथेड्रल' नामक पद्य-नाटक में उसने इसका विशेष निरूपण किया है। इसकी पद्य-रचना भी सरल है और इसका तथ्य आधुनिक जीवन का स्पर्श करता है। एलियट का प्रभाव देश-विदेश के

नवोदित कवियों पर काफ़ी पड़ा, यद्यपि आज की संघर्षमयी परिस्थितियां उन्हें उसकी ओर से विमुख कर चली हैं।

यीट्स (१८६५-१९३९)

यीट्स एलियट का समीपवर्ती होकर भी उम्र में काफ़ी बड़ा था और १९३९ में उसका देहान्त हो गया। उसके जीवन में दो पीढ़ियों का काव्य सिरजा गया। स्वयं उसने उन दोनों काल की प्रवृत्तियों का अनुसरण किया। यीट्स की शुरू की कविताओं में अलंकार और माधुर्य अधिक है और वह उनकी पृष्ठभूमि अपने देश आयरलैंड की प्रकृति से प्रस्तुत करता है। उस काल की रचनाओं में वह सर्वथा 'रोमान्टिक' है। 'दि लेक आइल आफ़ इनिसफ्री' उसकी काफ़ी ताज़ी रचना है। बदलते हुए ज़माने और काव्य के रूप को उसने पकड़ा और इसी कारण वह ज़माने की दौड़ में पीछे न छूट सका। उसने अपनी बाद की रचनाओं में यद्यपि अतीत के विश्वासों और प्रतिमाओं को निखारा फिर भी उसकी कल्पना ने कुछ सुन्दर रचनाएं प्रस्तुत कीं, जिनका संग्रह चार खंडों में प्रकाशित हुआ—'दि वाइल्ड स्वान्स एट कूल', 'माइकेल रावर्टीज़ एण्ड दि डान्सर', 'दि टावर' और 'दि वाइन्डिंग स्टेयर'। यीट्स ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीतांजलि' का अनुवाद कर उन्हें पाश्चात्य पाठकों और आलोचकों के सम्मुख पहली वार रखा।

: ६ :

अंग्रेज़ी के अमरीकन कवि

यहाँ अमरीकी साहित्य पर भी एक नज़र डाल लेना अनुचित न होगा। वहाँ भी अट्ठारहवीं सदी से पूर्व ही साहित्य-निर्माण शुरू हो गया था। प्रारम्भिक काल में ऐन ब्रैडस्ट्रीट, वेन्जेमिन टाम्सन, एडवर्ड टेलर आदि ने अच्छी कविताएँ लिखीं। इनमें टेलर ने तो काफ़ी ख्याति भी पाई। फ़िलिप-फ्रेनू पहला अमेरिकन कवि था जिसे शुद्ध साहित्यिक कहा जा सकता है। विलियम कलेन ब्रियां ने उस साहित्य में प्राण फूंके और एडगर एलेन पो (१८०९-४९) ने उस परम्परा को अपनी कविताओं से आगे वढ़ाया। वह कला का सूक्ष्म समीक्षक था।

जेम्स रसेल लावेल (१८१९-१९०१) उस काल के समर्थ कवियों में था और लांगफ़ेलो (१८०७-१८८२) तो पूर्वात्य दर्शन से प्रभावित, अपनी ख्याति में शीघ्र अमेरिका की परिधि से वाहर पहुँच गया। वाशिंगटन इरविन की भांति उसने भी अपनी यूरोपीय यात्राओं द्वारा अनेक रोमांटिक ख्यातों की स्वदेश में वेल लगाई। इमर्सन (१८०३-८२) निवन्धकार तो महान् था ही, कवि भी असामान्य था और अपने सम-

कालीन तथा उत्तरकालीनों पर उसकी कृतियों ने बड़ा प्रभाव डाला। हेनरी थोरो भी इमर्सन की ही भांति कवि और निबन्धकार दोनों था। उसके सत्याग्रही दृष्टिकोण का महात्मा गांधी के विचारों पर बड़ा असर पड़ा। उसका जीवन-काल १८१७ से १८६२ है।

एमिली डिकिन्सन (१८३०-८६) ने अमरीकी काव्य-क्षेत्र में 'लिरिक' का प्रारम्भ किया। वाल्ट ह्विटमन (१८१९-९१) का नाम उस साहित्य में अमर हो गया है। मानवता के प्रति जितनी सहानुभूति उसकी है, उतनी किसी और की नहीं। उसने मनुष्य के लिए लिखा। वह महान् अन्तर्राष्ट्रीय चेतना का पुजारी था। जिसने संसार के पारस्परिक द्वन्द्वों से ऊपर उठकर उसकी एकता में विश्वास किया। हरमान मेलविल भी गद्यकार और कवि दोनों था। 'मोबी डिक' से हटकर वह सर्वथा काव्य-क्षेत्र में उतर आया। सिल, मूडी और क्रेन उसके समकालीन कवि थे।

कार्ल सैन्डबर्ग (१८७८-) आज भी जीवित है। उसने जीवन की अनेक स्थितियों का सामना किया और ह्विटमन की भांति 'सम्पादकीय' भी लिखे। उसकी कविताओं में विविध दृश्यों, स्थितियों और प्रसंगों का संगम है। राबिन्सन जेफ़र्स (१८८७-) ह्विटमन की परम्परा का कवि है। मास्टर्स (एडगर ली) अमेरिका के असामान्य भौतिक-औद्योगिक-नागरिक जीवन से बेहाल है। राबर्ट फ्रास्ट (१८७५-) अमरीकी साहित्य का शायद सबसे पुराना सेवी है, आज प्रायः ७७ वर्ष का। अनेक लोग उसे वर्डस्वर्थ से ऊँचा कवि मानते हैं। एडविन अर्लिंग्टन राबिन्सन (१८६९-१९३५) ने एक बार अपने आर्थर-सम्बन्धी काव्य द्वारा कविता-पाठकों को आकृष्ट कर लिया था। ह्विटमन की भावुकता सैन्डबर्ग और मास्टर्स तक ही सीमित न रह लिन्डसे (१८७९-१९३१) और बेनेट (१८८६-) तक पहुँची, केनेथ फ़ियरिंग (१९०२-) और मुरिएल रुकेसर तक। पिछले दोनों जन-कवि हैं, रुकेसर तो वर्ग-संघर्ष का कवि है। डाल्टन ट्रंबो इस दिशा में इन सारे कवियों से अधिक प्रगतिशील है पर आज वह शान्ति का नाम लेने के कारण कठघरे के पीछे है।

एज़रा पाउण्ड (१८८५-), एलियट (१८८८-), स्टाइन (१८७४-१९४६), वालेस स्टीवेन्स (१८७९-) और ई० ई० कमिंग्स (१८९४-) के साथ अमरीकी काव्य क्षेत्र में एक नये युग का आरम्भ होता है। पाउण्ड शक्तिम शैलीकार कवि है परन्तु प्रतिक्रियावादी और जब तब अन्तर्मुख भी। उसकी शैली दुरूह है। उसका सम्पर्क इटली के फ़ासिज्म से माना गया था। एलियट का उल्लेख अन्यत्र किया जा चुका है। अब वह इंग्लैंड में बस-सा गया है। एलियट की कविता का प्रभाव अमेरिका और इंग्लैंड दोनों के कवियों पर पड़ा है। नारी कवियों में गर्ट्रूड स्टाइन, एडना मिले, एलिनर विली और लुइज़ी बोगन ने इधर काफ़ी ख्याति पाई है। मिस मिले ने फासिस्त-विरोधी कविताएं काफ़ी लिखीं। मिसेज़ विली और बोगन अपार्थिव का अनुसन्धान करती हैं।

मिसेज़ डोरोथी नारमन की कविता में रहस्य का पुट है और वैसे ही मिसेज़ रूथ स्टेफ़ान की कविता में भी।

कमिंग्स अमेरिका के प्रधान कवियों में से है परन्तु पादरी की शिक्षा पाने तथा एज़रा पाउण्ड के प्रारम्भिक सम्बन्ध ने उसे भी प्रगतिशीलता का विरोधी बना दिया है। पर कवि वह समर्थ है। कविता की सूक्ष्मता और शैली की दुरूहता में रैन्जम और स्टिवेन्स पाउण्ड की भाँति ही प्रसिद्ध हैं। मैकलीश और क्रेन ने कुछ सुन्दर लिरिक लिखे हैं। क्रेन की ही परम्परा में आज के जेम्स अगी, शैपिरो, रोएयके, बिशप, एवरहार्ट आदि हैं।

आज का अमरीकी साहित्य कुछ आलोचकों की राय में या तो रुग्ण है या अन्तर्मुख। जो भी हो, वहाँ अनेक साहित्यकार आज हैं जो पेन और ह्विटमन की परम्परा में हैं। इन प्रगतिशीलों में अग्रणी हैं एल्बर्ट माल्ट्ज, जान हावर्ड लासन, सैमुएल ओनित्स, रिंग लार्डनर, अल्वा बेसी और हावर्ड फ़ास्ट।

: ७ :

नाट्य-साहित्य

इंग्लैंड में रंगमंचीय खेलों का आरम्भ जूलियस सीजर की विजय के बाद रोमनों ने किया था। परन्तु उनके इंग्लैंड छोड़ने के साथ ही उन खेलों का अन्त भी हो गया। आरम्भ में विदूषक, भांड, गायक आदि घूम-घूम कर, स्थान-स्थान, गाँव-गाँव जा-जा कर कुछ ऐसे प्रदर्शन करते रहे, जिनमें विविध चेष्टाओं, भाव-भंगियों, गायन आदि में नाटक का बीज होता था। इन गायकों में जो अभिनय के बीजतत्व के भी धनी थे, वे 'मिन्स्ट्रल' कहलाते थे। उनके प्रदर्शनों में भीड़ काफ़ी इकट्ठी होती थी और यद्यपि चर्च बराबर इस प्रकार के प्रदर्शनों का विरोध करता था, उसके पादरियों को व्यक्तिगत रूप से इनमें दिलचस्पी थी। लुक-छिपकर वे बराबर इन प्रदर्शनों को देखते थे।

धर्म ने आरम्भ में निश्चय इस प्रकार के नाट्य-प्रदर्शनों का विरोध किया। परन्तु कालान्तर में वही रंगमंचीय अभिनयों का कुछ काल के लिए आधार बन गया। ईसा के जीवन की अनेक घटनाएँ धीरे-धीरे चर्च की इमारत में अभिनीत होने लगीं जहाँ रंगमंच पर अथवा फैले मैदान में अभिनेता और दर्शक मिले-जुले रहते थे। यह अभिनय बहुत कुछ आज की हमारी 'रामलील' की भाँति होते थे। शीघ्र ही चर्च को पता चल गया कि धीरे-धीरे इन नाटकों का अभिनय अथवा नाट्य तत्व धार्मिक प्रदर्शनों से बढ़ गया था। उसने उनका रुख फिर बदलना चाहा पर अब स्थिति उनके हाथ से बाहर निकल गई थी और तेरहवीं-चौदहवीं सदियों में अभिनय ने सर्वथा धर्मेतर लौकिक रूप धारण कर लिया। चर्च ने रंगमंच अपनी इमारतों से अलग कर दिया।

धार्मिक नाटकों में पहले लेटिन भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करते थे। अब नाटक के लौकिक हो जाने से उसकी भाषा अंग्रेजी हो गयी। मध्यकालीन श्रेणियों और नागरिक संस्थाओं का नाटकों के प्रदर्शन में विशेष हाथ हुआ। नाटकों का अभिनय-क्षेत्र अब नितान्त विस्तृत हो गया। इन लौकिक नाटकों में भी कथानक विशेषतः धार्मिक ही हुआ करते थे यद्यपि उनके अन्तरंग अनेक पारिवारिक दृश्यों से भरे होते थे। इन धार्मिक प्रदर्शनों के बाद उन नाटकों की बारी आई जिन्हें 'मोरेलिटी प्लेज' कहते हैं। पन्द्रहवीं सदी के पिछले दर्शकों के इन नाटकों में सदाचार का अभिनय होता था और आचार सम्बन्धी ही पाप-पुण्यात्मक पात्र-नाम इनकी रीढ़ थे। ये नाटक स्वाभाविक ही उद्देश्यपरक थे और आचारादर्श उनका लक्ष्य था। फिर भी उनमें यथार्थ और करुणा का प्रचुर समावेश था।

'मोरेलिटी' नाटकों के अतिरिक्त कुछ ऐसी संक्षिप्त नाटिकाएँ भी थीं जिन्हें 'इन्टरलूड' कहते थे। वे न तो मोरेलिटी नाटकों की भाँति रूपक थीं और न धार्मिक कथाएँ ही थीं। उनका अभिनय अधिकतर ट्यूडर-काल के सामन्त परिवारों में होता था। उस काल की एक विशेष कृति, हेनरी मेडवाल की लिखी, 'फ़ुलगिन्स ऐण्ड लुकरी' है। इस प्रकार की नाटिकाओं में पहली बार सामयिक जनता का भाव-कोण प्रदर्शित हुआ। १५३३ ईस्वी में प्रकाशित हेउड का 'दि प्ले आव् दि वेदर' एक मनोरंजक डायलाग प्रस्तुत करता है। इन इन्टरलूडों ने जनता का विशेष मनोरंजन किया। प्रहसन और विनोद अधिकतर ग्राम्य होते थे और अभिनय प्रायः भोंडे, फिर भी इन इन्टरलूडों का नाट्य-साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। इसके बाद ही प्रायः एकाएक—कम से कम मध्य की मंजिलों को प्रत्यक्ष करना कठिन है—अंग्रेजी के प्रसिद्ध नाटकों का आविर्भाव हुआ और मार्लो तथा शेक्सपियर अपनी कृतियाँ लेकर साहित्य में उतरे।

कीड, मार्लो

मार्लो और शेक्सपियर के आविर्भाव के पहले क्लासिकल ड्रामा (ग्रीक और लेटिन) के अंग्रेज़ी में कुछ प्रयोग हुए। जार्ज गैसक्वाइडनी, निकोलस उदाल आदि ने कामेडी और ट्रेजेडी में कुछ सराहनीय प्रयत्न किये। ग्रीक और लेटिन साहित्य का अध्ययन इंग्लैंड में विशेषतः रिनेसान्स (पुनरुज्जीवन-काल) से ही आरम्भ हो गया था और इस दिशा में ग्रीक और पौराणिक कथाओं ने प्रचुर नाट्य-सामग्री माडल के रूप में अंग्रेज़ी नाट्यकारों के लिए प्रस्तुत कर दी। सेनेका के लेटिन व्याख्यानों ने भी इस दिशा में प्रशस्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। इस क्षेत्र में सेनेका के भावतत्व से अनुप्राणित १५६२ में सैकविल और टामस नार्टन की अंग्रेज़ी कृति 'गोरबोडक' खेली गयी। उसका रूप चाहे लेटिन टामस हो परन्तु कथानक अंग्रेज़ी था। 'गोरबोडक' वस्तुतः साधारण जनता के लिए नहीं दरबारियों, वकीलों और अन्य बुद्धिवादी पढ़ी-लिखी जनता के लिए लिखा गया

मिसेज़ डोरोथी नारमन की कविता में रहस्य का पुट है और वैसे ही मिसेज़ रूथ स्टेफ़ान की कविता में भी।

कमिंग्स अमेरिका के प्रधान कवियों में से है परन्तु पादरी की शिक्षा पाने तथा एज़रा पाउण्ड के प्रारम्भिक सम्बन्ध ने उसे भी प्रगतिशीलता का विरोधी बना दिया है। पर कवि वह समर्थ है। कविता की सूक्ष्मता और शैली की दुरूहता में रैन्ज़म और स्टिवेन्स पाउण्ड की भाँति ही प्रसिद्ध हैं। मैकलीश और क्रेन ने कुछ सुन्दर लिरिक लिखे हैं। क्रेन की ही परम्परा में आज के जेम्स अगी, शैपिरो, रोएयके, बिशप, एवरहार्ट आदि हैं।

आज का अमरीकी साहित्य कुछ आलोचकों की राय में या तो रुग्ण है या अन्तर्मुख। जो भी हो, वहाँ अनेक साहित्यकार आज हैं जो पेन और ह्विटमन की परम्परा में हैं। इन प्रगतिशीलों में अग्रणी हैं एल्बर्ट माल्ट्ज, जान हावर्ड लासन, सैमुएल ओर्नित्स, रिंग लार्डनर, अल्वा बेसी और हावर्ड फ़ास्ट।

: ७ :

नाट्य-साहित्य

इंग्लैंड में रंगमंचीय खेलों का आरम्भ जूलियस सीजर की विजय के बाद रोमनों ने किया था। परन्तु उनके इंग्लैंड छोड़ने के साथ ही उन खेलों का अन्त भी हो गया। आरम्भ में विदूषक, भांड, गायक आदि घूम-घूम कर, स्थान-स्थान, गाँव-गाँव जा-जा कर कुछ ऐसे प्रदर्शन करते रहे, जिनमें विविध चेष्टाओं, भाव-भंगियों, गायन आदि में नाटक का बीज होता था। इन गायकों में जो अभिनय के बीजतत्व के भी धनी थे, वे 'मिन्स्ट्रल' कहलाते थे। उनके प्रदर्शनों में भीड़ काफ़ी इकट्ठी होती थी और यद्यपि चर्च बराबर इस प्रकार के प्रदर्शनों का विरोध करता था, उसके पादरियों को व्यक्तिगत रूप से इनमें दिलचस्पी थी। लुक-छिपकर वे बराबर इन प्रदर्शनों को देखते थे।

धर्म ने आरम्भ में निश्चय इस प्रकार के नाट्य-प्रदर्शनों का विरोध किया। परन्तु कालान्तर में वही रंगमंचीय अभिनयों का कुछ काल के लिए आधार बन गया। ईसा के जीवन की अनेक घटनाएँ धीरे-धीरे चर्च की इमारत में अभिनीत होने लगीं जहाँ रंगमंच पर अथवा फैले मैदान में अभिनेता और दर्शक मिले-जुले रहते थे। यह अभिनय बहुत कुछ आज की हमारी 'रामलील' की भाँति होते थे। शीघ्र ही चर्च को पता चल गया कि धीरे-धीरे इन नाटकों का अभिनय अथवा नाट्य तत्व धार्मिक प्रदर्शनों से बढ़ गया था। उसने उनका रुख फिर बदलना चाहा पर अब स्थिति उनके हाथ से बाहर निकल गई थी और तेरहवीं-चौदहवीं सदियों में अभिनय ने सर्वथा धर्मेतर लौकिक रूप धारण कर लिया। चर्च ने रंगमंच अपनी इमारतों से अलग कर दिया।

धार्मिक नाटकों में पहले लेटिन भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करते थे। अब नाटक के लौकिक हो जाने से उसकी भाषा अंग्रेज़ी हो गयी। मध्यकालीन श्रेणियों और नागरिक संस्थाओं का नाटकों के प्रदर्शन में विशेष हाथ हुआ। नाटकों का अभिनय-क्षेत्र अब नितान्त विस्तृत हो गया। इन लौकिक नाटकों में भी कथानक विशेषतः धार्मिक ही हुआ करते थे यद्यपि उनके अन्तरंग अनेक पारिवारिक दृश्यों से भरे होते थे। इन धार्मिक प्रदर्शनों के वाद उन नाटकों की वारी आई जिन्हें 'मोरेलिटी प्लेज' कहते हैं। पन्द्रहवीं सदी के पिछले दर्शकों के इन नाटकों में सदाचार का अभिनय होता था और आचार सम्बन्धी ही पाप-पुण्यात्मक पात्र-नाम इनकी रीढ़ थे। ये नाटक स्वाभाविक ही उद्देश्यपरक थे और आचारादर्श उनका लक्ष्य था। फिर भी उनमें यथार्थ और करुणा का प्रचुर समावेश था।

'मोरेलिटी' नाटकों के अतिरिक्त कुछ ऐसी संक्षिप्त नाटिकाएँ भी थीं जिन्हें 'इन्टरलूड' कहते थे। वे न तो मोरेलिटी नाटकों की भाँति रूपक थीं और न धार्मिक कथाएँ ही थीं। उनका अभिनय अधिकतर ट्यूडर-काल के सामन्त परिवारों में होता था। उस काल की एक विशेष कृति, हेनरी मेडवाल की लिखी, 'फ़ुलगिन्स ऐण्ड लुकरी' है। इस प्रकार की नाटिकाओं में पहली वार सामयिक जनता का भाव-कोण प्रदर्शित हुआ। १५३३ ईस्वी में प्रकाशित हेउड का 'दि प्ले आव् दि वेदर' एक मनोरंजक डायलाग प्रस्तुत करता है। इन इन्टरलूडों ने जनता का विशेष मनोरंजन किया। प्रहसन और विनोद अधिकतर ग्राम्य होते थे और अभिनय प्रायः भोंडे, फिर भी इन इन्टरलूडों का नाट्य-साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। इसके वाद ही प्रायः एकाएक—कम से कम मध्य की मंजिलों को प्रत्यक्ष करना कठिन है—अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध नाटकों का आविर्भाव हुआ और मार्लो तथा शेक्सपियर अपनी कृतियाँ लेकर साहित्य में उतरे।

कीड, मार्लो

मार्लो और शेक्सपियर के आविर्भाव के पहले क्लासिकल ड्रामा (ग्रीक और लेटिन) के अंग्रेज़ी में कुछ प्रयोग हुए। जार्ज गैसक्वाइडनी, निकोलस उदाल आदि ने कामेडी और ट्रेजेडी में कुछ सराहनीय प्रयत्न किये। ग्रीक और लेटिन साहित्य का अध्ययन इंग्लैंड में विशेषतः रिनेसान्स (पुनरुज्जीवन-काल) से ही आरम्भ हो गया था और इस दिशा में ग्रीक और पौराणिक कथाओं ने प्रचुर नाट्य-सामग्री माडल के रूप में अंग्रेज़ी नाट्यकारों के लिए प्रस्तुत कर दी। सेनेका के लेटिन व्याख्यानों ने भी इस दिशा में प्रशस्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। इस क्षेत्र में सेनेका के भावतत्व से अनुप्राणित १५६२ में सैकविल और टामस नार्टन की अंग्रेज़ी कृति 'गोरवोडक' खेली गयी। उसका रूप चाहे लेटिन टामस हो परन्तु कथानक अंग्रेज़ी था। 'गोरवोडक' वस्तुतः साधारण जनता के लिए नहीं दरवारियों, वकीलों और अन्य बुद्धिवादी पढ़ी-लिखी जनता के लिए लिखा गया

था और स्वाभाविक ही लोकप्रिय न हो सका। इस काल कुछ ऐतिहासिक नाटक लिखे गये जिनको आधार बनाकर शेक्सपियर ने भी अपने अनेक नाटक प्रस्तुत किये। यह सिद्ध हो गया कि स्थानीय और स्वदेशी कथानकों से ही विशेषतः नाटक जनसाधारण के हृदय में स्थान पा सकते हैं। इस दिशा में कीड और मार्लो ने विशेष प्रयत्न किये। टामस कीड (१५५७-९५) ने पहली बार अंग्रेज़ी जनता के लिए उचित नाटक और रंगमंच की रचना की। उसकी 'स्पेनिश ट्रेजेडी' में सेनेका की पृष्ठभूमि किसी न किसी रूप में वर्तमान थी परन्तु फिर भी उसने उसे उस ट्रेजेडी का रूप दिया जो जनता की समझ से दूर न थी। दिन-रात षड्यन्त्रों के जगत् में रहने वाले लोगों का कीड के इस नाटक ने काफ़ी मनोरंजन किया। स्वयं शेक्सपियर कीड की इस 'स्पेनिश ट्रैजेडी' से प्रभावित हुआ। क्रिस्टोफ़र मार्लो (१५६४-९३) केम्ब्रिज का तरुण नाटककार था। प्रायः ३० वर्ष की आयु में नाटक के क्षेत्र में बहुत कुछ करके वह मर भी गया। परन्तु उसकी कृतियों ने अंग्रेज़ी नाट्य-साहित्य में एक विप्लव उपस्थित कर दिया। मार्लो का जीवन स्वयं विद्रोहात्मक था और उस काल के राजनीतिक षड्यन्त्रों में भी, कहते हैं, उसका हाथ रहा था। उसकी चार महत्त्व की रचनाएँ ट्रेजेडी के रूप में १५८७ और १५९३ के बीच प्रस्तुत हुईं। वे थीं 'तेम्बरलेन दि ग्रेट' (दो भागों में), 'डाक्टर फ़ास्ट्स,' 'दि ज्यू आफ़ माल्टा' और 'एडवर्ड द्वितीय'।

इनमें पहली रचना में तातार सरदार, तैमूर की क्रूरता और विजयों का निदर्शन है। डाक्टर फास्ट्स में मार्लो ने एक धार्मिक दार्शनिक भावना का व्यक्तिगत प्रकाशन किया जिसमें अन्तर्वृत्तियों का संघर्ष मुख्य था। 'दि ज्यू आफ़ माल्टा' में बारावास नाम के एक यहूदी का चित्रण है जिसने ईसाइयों के अत्याचार का बदला अनाचार से दिया। एडवर्ड द्वितीय में उसी नाम के राजा के भावावेगों और कमजोरियों का वर्णन है। मार्लो ने मुक्त छन्द में एक नयी साहित्यिक चेतना अपने नाटकों में रखी, जो न केवल साहित्य के दृष्टिकोण से क्रान्तिकारी थी बल्कि धार्मिक दृष्टिकोण से भी, क्योंकि उसने तेम्बरलेन के माध्यम से सारी अपार्थिव धार्मिकता को चुनौती देदी। पार्थिव जीवन, जैसे भौतिक को सत्य मान, अनिश्चित के अपने बन्ध तोड़ स्वतन्त्र हो गया। 'दि ज्यू आफ़ माल्टा' जरूर कुछ कमज़ोर है परन्तु 'एडवर्ड द्वितीय' 'तेम्बरलेन' और 'फ़ास्ट्स' की ही भाँति सफल है। मार्लो ने अंग्रेज़ी ट्रैजेडी को मुक्त छन्द की शालीनता दी जो नाट्यांकन में चिरप्रतिष्ठित हुई।

लिली (१५५४-१६०६)

कीड और मार्लो ने जिस प्रकार ट्रैजेडी को सुघड़ता दी उसी प्रकार जान लिली (१५५४-१६०६) और राबर्ट ग्रीक (१५६०-९२) ने कामेडी की रूपरेखा सँवारी। लिली के दर्शक दरबारी थे और उसके अभिनेता अधिकतर बच्चे। लिली की

अनेक नाट्य-रचनाएँ आज हमें उपलब्ध हैं, 'कैम्पसपी' 'सैफ़ो एण्ड फ़ाओ', 'गैलेफिया', 'एन्डिमिनियन', 'मिडास', 'मदर वौम्बी', 'लव्ज़ मेटामोरफ़ोसिस' और 'दि वोमन इन दि मून'। इनमें अन्तिम नारी के ऊपर एक सुन्दर व्यंग्यात्मक पद्य-नाटक है। शेक्स-पियर के शीघ्र ही अद्भुत कामेडी कृतियाँ रचने के कारण लिली अन्धकार में पड़ गया नहीं तो स्वयं उसकी रचनाओं का कुछ कम महत्त्व न था।

रावर्ट ग्रीन

रावर्ट ग्रीन कवि, नाटककार, गद्य-लेखक आदि सभी कुछ था। उसने अपने कथा-नकों में विविध सामाजिक दलों और भिन्न बौद्धिक मात्राओं के चरित्र एकत्र कर प्रस्तुत किये। वह भी प्रहसनकार (कामेडीकार) ही था और उसने काल्पनिक जगत् को सम-सामयिक संसार में ओतप्रोत कर अपनी कामेडियों में प्रदर्शित किया। उसकी विशिष्ट कृतियाँ 'फ्रायर बेकन एण्ड फ्रायर बन्के' और 'जेम्स चतुर्थ' हैं।

सोलहवीं सदी के अन्त तक अंग्रेज़ी नाटक का रूप स्पष्टतः प्रतिष्ठित हो गया। अब उनका प्रदर्शन केवल राजकीय दरबार में ही न होकर जनता में भी होने लगा। यद्यपि नगरों के प्यूरिटन शासकों का दृष्टिकोण उनके प्रति कठोर होने से उन्हें नगर के बाहर सरायों में ही खेलना पड़ता था। अभिनेताओं को भी उस काल बड़ी कठिनाइयाँ सहनी पड़ती थीं क्योंकि कानून उनके काम को जायज़ न मानता था और समाज भी उन्हें अधिकतर धूर्त्त और बदमाश ही समझता था। इसी कारण उन्हें रानी अथवा विशिष्ट सामन्तों के संरक्षण में उनके 'जनों' के रूप में रहना पड़ता था। रंगमंच भी आज के रंगमंच से भिन्न था; उसकी छत न थी, मंच एक ऊँचा प्लेटफ़ार्म था। पीछे की छत में एक अट्ट था जहाँ से बिगुल बजाकर खेल का आरम्भ सूचित कर दिया जाता था। मंच पर पर्दे न थे और उसे श्रोतागण तीन ओर से घेरे रहते थे। कीमती वस्त्र पात्रों के रूप और स्थिति को व्यक्त करते थे। मंच के पीछे दोनों ओर एक-एक दरवाज़ा होता, जिससे पात्र आते-जाते थे।

: ८ :

शेक्सपियर से शेरिडन तक

शेक्सपियर (१५६४-१६१६)

जिस अंग्रेज़ी नाट्य-साहित्य ने संसार के साहित्य-क्षेत्र में अपना असाधारण स्थान बनाया उसका अनुपम स्रष्टा विलियम शेक्सपियर (१५६४-१६१६) था। शेक्स-पियर स्ट्रेटफ़ोर्ड का रहनेवाला अभिनेता और नाटककार दोनों था। उसके पहले भी इंग्लैंड में नाटककार हुए थे, परन्तु जिस रूप और मात्रा में उसने अपनी समकालीन जनता को आकृष्ट किया वैसा न कभी किसीने पहले किया था न पीछे किया। संसार के

नाटक-क्षेत्र पर उसने असाधारण प्रभाव डाला।

शेक्सपियर ने अपनी जनता के लिए लिखा, अंग्रेज़ नागरिकों और अंग्रेज़ी राज-दरबार के लिए। भाषा, भाव-व्यंजना, नाटकीय प्रभाव और चरित्र-चित्रण में वह लासानी है। उसने लिखा भी अमित मात्रा में, प्राय: ३७ नाटक अपनी कविताओं के अतिरिक्त। इनमें कुछ ऐतिहासिक हैं, कुछ अनैतिहासिक, कुछ कामेडी (सुखान्त अथवा विनोद व्यंग्य-युक्त नाटक), कुछ ट्रैजेडी (दुखान्त नाटक), कुछ रोमांटिक कामेडी और कुछ रोमांटिक ट्रैजेडी। अपने ऐतिहासिक नाटकों के लिए उसने सामग्री इंग्लैंड और विदेशों के इतिहास से ली, रफ़ाएल होलिंशेड के 'क्रानिकल्स' और प्लूटार्च की 'जीवनियों' से।

शेक्सपियर के ऐतिहासिक नाटक हैं—'हेनरी दि सिक्स्थ' (तीन भाग का नाटक) 'रिचर्ड दि सेकण्ड और थर्ड', 'हेनरी दि फ़ोर्थ' (दो भाग) और 'हेनरी दि फ़िफ़्थ'। इनमें से अधिकतर उस महाकवि की प्रारम्भिक कृतियाँ हैं। इनमें रिचर्ड-सम्बन्धी नाटक ट्रैजेडी हैं। उसकी अनैतिहासिक कमेडियों की संख्या भी काफ़ी है और उन्होंने नाटकीय सफलता असाधारण मात्रा में अर्जित की। 'लव्ज़ लेबर्स लास्ट', 'दि टू जेन्टिलमेन आव वेरोना,' 'दि कामेडी आव एरर्स,' 'दि टेमिंग आव दि श्रू', 'ए मिडसमर नाइट्स ड्रीम', 'मच अडो एबाउट नाथिंग', 'ऐज़ यू लाइक इट,' 'ट्वेल्फ़्थ नाइट,' 'दि मर्चेन्ट आव वेनिस', 'आल्ज़ वेल दैट एन्ड्स वेल,' 'ट्रायलस एण्ड क्रेसिडा'—सब नाटकीय जगत में विख्यात हैं और आज भी संसार के अभिनय-क्षेत्र पर छाए हुए हैं। इनमें 'ए मिडसमर नाइट्स ड्रीम' कामेडी के क्षेत्र में अपना सानी नहीं रखता। इन कामेडियों में 'प्लाट' का महत्व विशेष नहीं है। वस्तु के रूप में शेक्सपियर साधारण से साधारण स्थिति या घटना चुनता है परन्तु अपनी लेखनी के जादू से, शब्दावली से, चरित्र-चित्रण से, व्यंग्यात्मक चोट से, उन्हें असामान्य, सर्वथा अपना बना देता है—एक नई दुनियाँ, पर जानी-देखी हुई दुनियाँ, जिसमें प्रणय और घृणा, क्रोध और दया, मिलन और विरह, ईर्ष्या और जलन, चाटुकारिता सभी अपने आवश्यक आवेशों के साथ अभिसृष्ट होते हैं और असाधारण शक्ति से हमें वशीभूत कर लेते हैं। समसामयिक संसार पर तो शेक्सपियर ने चोटें कीं ही, विगत ग्रीक जगत को भी, जो 'क्लासिकल' रूप में उस काल स्तुत्य हो गया था, उसने न छोड़ा—'ट्रायलस एंड क्रेसिडा' में उसे भी व्यंग्यात्मक बाणों से जर्जर कर दिया।

शेक्सपियर की महान् ट्रैजेडी-रचनाएँ 'हैमलेट,' 'ओथेलो,' 'मैकबेथ', 'किंग लियर' 'ऐण्टनी एण्ड क्लियोपेट्रा,' और 'कोरियोलेनस' हैं। ये सारे सत्रहवीं सदी के पहले छः साल में लिखे जा चुके थे। परन्तु केवल इन्हीं तक उस महाकवि के दुःखात्मक आवेगों का अंकन सीमित नहीं है। वस्तुतः 'रिचर्ड दि सेकण्ड' और 'थर्ड' के रूप में ही वह अंशतः ट्रैजेडी प्रस्तुत कर चुका था। जिस प्रकार उसने रोमांटिक कामेडियों की रचना की थी

रोमांटिक ट्रैजेडियों का भी सृजन किया। उनका एक सुघड़ नमूना 'रोमियो एण्ड जूलियट' है। 'जूलियस सीज़र' में शेक्सपियर ने विगत रोमन इतिहास का संसार फिर से सिरजा और वह इतना सजीव कि उस प्रकार का कोई नाटक न पहले कभी लिखा जा सका था, न पीछे लिखा जा सका। इन ट्रैजेडियों में शेक्सपियर की कला ने अद्भुत शक्ति धारण कर ली है। 'हैमलेट' खून, आत्महत्या, विक्षेप की कहानी है परन्तु उसके पात्रों का चित्रण अद्भुत है और छन्द का व्यवहार असाधारण निपुण। 'हैमलेट' पुनर्जागरणकाल का प्लाट लेकर रंगमंच पर अवतरित होता है। पुनर्जागरणकाल की कला, ज्ञान, पापाचरण, शालीन वातावरण सभी कुछ उसके अन्तर्मुख, सयाने, करुण राजा के चतुर्दिक घूमते हैं। इसमें दृश्य जगत् की सक्रियता अन्तर्मेधा के चिन्तन से होड़ करती है। 'ओथेलो' प्रणय-संकट, ईर्ष्या और भावावरोध की करुण कहानी है। 'मैक्बेथ' भग्न महत्वाकांक्षा का विमूर्तन है, जिसमें भाषा और भाव सम्मिलित चोट करते हैं, जीवन की निःसारता को अभिव्यक्त करते हैं। 'किंग लियर' दुःखान्तक नाटकों में जैसे वीर काव्य है, महाकाव्य की शालीनता लिए हुए, प्रायः वन्य, शक्तिम। 'ऐन्टनी एण्ड क्लियोपेट्रा' में जो मर्यादा प्रणय और नारी को दी है महाकवि ने उन्हें अपनी अन्य कृतियों में और कहीं न दी। इसके दोनों चरित्र शेक्सपियर के सबसे कुशल, सफल और सर्वथा अकृत्रिम चरित्रों में हैं, प्रायः अनुपम। 'कोरियोलेनस' इसके विपरीत राजनैतिक ट्रैजेडी है जिसमें राजनैतिक गांभीर्य वातावरण को कठोर बनाए हुए है।

'दि विन्टर्स टेल' और 'दि टेम्पेस्ट' शेक्सपियर की पिछली रोमांटिक रचनाएँ हैं। इनमें वह अपनी कुशल ट्रैजेडियों से हट आया है। इनमें से पहली में पशुपालन (पैस्टोरल) संसार जी उठा है, परन्तु संसार जो अनजाना नहीं है, पहचाना जा सकता है। 'दि टेम्पेस्ट' में पार्थिव-अपार्थिव दोनों शक्तियों का प्रदर्शन है और इसमें कवि की जाग्रत मेधा का विकास है।

महाकवि शेक्सपियर नाटक के संसार में प्रायः अकेला है, काव्य-कुशलता में, नाटकीय प्रभाव में, चरित्र-चित्रण में, वस्तु के संघटन में, भाषा और भाव में। वह अपनी जनता की आवश्यकताएँ-कामनाएँ, गुण-दोष जानता है, साथ ही अपने रंगमंच की सीमाओं को भी। उनके अनुकूल ही वह अपने नाटकों के स्थल प्रस्तुत करता है और असामान्य रूप में सफल होता है।

बेन जान्सन (१५७३-१६३७)

शेक्सपियर अँग्रेज़ी साहित्य में इतना असाधारण है कि उसके सूर्यवर तेज से और नक्षत्रों का मलिन हो जाना स्वाभाविक है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि यद्यपि उसकी महानता को उसके समकालीन नाटककार न प्राप्तकर सके, निस्सन्देह अनेक ऐसे थे जिनका अँग्रेज़ी साहित्य में अपना स्थान है। बेनजान्सन (१५७३-१६३७) इसी प्रकार

का एक यशस्वी व्यक्तित्व था जो शेक्सपियर का अनेकार्थ में एक प्रकार से जवाव है। जान्सन 'क्लासिकवादी' है, ग्रीक और लेटिन में नाटकों का पोषक और नाटक के क्षेत्र में सुधारवादी। रोमांचक शैली से मुँह फेर उसने यथार्थवाद को अपनाया और कामेडी के क्षेत्र में उसने काल, स्थान तथा 'प्लाट' की एकता स्थापित करने का प्रयास किया। उसकी प्रारम्भिक कृतियों में 'एवरी मैन इन हिज़ ह्यूमर' अमर हो गया है। उसके पात्र विनोदी हैं और उसने उनके रुग्ण आचार की अच्छी खिल्ली उड़ाई है। उसे कुछ लोगों ने सत्य ही १७वीं सदी का डिकेन्स कहा है। समसामयिक व्यापार और धन ने मध्य-वर्गीय जनता को जो नितान्त भ्रष्ट कर दिया था तो जान्सन अपने नाटकों में उसका भण्डाफोड़ करने से न चूका। बेनजान्सन अत्यन्त मौलिक है और उसके नाटकों ने काफी ख्याति भी पाई है, यद्यपि जितनी ख्याति उसे उनके द्वारा मिलनी चाहिए थी उतनी मिली नहीं। 'वोल पोन', 'डिसाइडेड वोमन', 'दि अलकेमिस्ट' और 'बार्थोलोमो फ़ेयर' अँग्रेज़ी साहित्य की कामेडी के क्षेत्र में अनूठी रचनाएँ हैं।

बेन जान्सन ट्रैजेडी के क्षेत्र में इतना सफल न हुआ। 'सेजेनस' और 'कैटिलीन' ट्रैजेडी के क्षेत्र में उसकी कृतियाँ हैं जिनमें जीवन का अभाव है और जिनके पात्र मूर्छित से हैं। शेक्सपियर की समकालीनता जान्सन की ख्याति में विशेष घातक सिद्ध हुई।

जार्ज चैपमैन (१५५९-१६३४)

इस काल का दूसरा नाटककार जार्ज चैपमैन (१५५९-१६३४) है जो विशेषतः होमर के अपने अनुवाद के लिए प्रसिद्ध है। उसने तीन ऐतिहासिक ट्रैजेडी लिखीं—'बस्सी डि एम्ब्वा', 'दि रवेंज आफ़ बस्सी डि एम्ब्वा' और 'दि ट्रैजेडी आफ़ वायरन'। इनकी ऐतिहासिकता फ्रांस के दरवार से सम्बद्ध है और मार्लो से काफ़ी प्रभावित उसकी शब्दावली शालीन है। यद्यपि नाटकीय क्षेत्र में उसको महान् कहना शायद उचित न होगा।

डेकर, हेउड

१७वीं सदी के कुछ यथार्थवादी नाटककार डेकर, फ्लेचर, ट्यूरनर आदि हैं। टामस डेकर (१५७०-१६३२) यथार्थवादी होता हुआ भी रोमान्टिक था। श्रमिकों का वह हिमायती था और अपने 'शू मेकर्स हालीडे' में उसने उनका प्रशंसनीय वर्णन किया है। उसकी रचना 'दि आनेस्ट होर' वड़ी करुण कृति है जिसमें उसने यथार्थवादी ढंग से समसामयिक समाज का चित्रण किया है। डेकर जहाँ श्रमिकों और साधारण नागरिकों को अपना पात्र वनाता है टामस हेउड (१५७५-१६४१) नए उठते हुए मध्यवर्ग को चित्रित करता है जैसा उसके 'ए वोमन किल्ड विद काइण्डनेस' से प्रकट है। इस कृति में साधारण जनता का दिग्दर्शन निस्संदेह उचित नहीं कहा जा सकता। फिर भी इतना सही है कि अब इंग्लैंड में ऐसे नाटककार उत्पन्न हो गये थे जिन्होंने

अपने कृतित्व का क्षेत्र दरबार से हटाकर विस्तृत जनसाधारण पर रखा। ब्योमोन्ट और फ्लेचर, दोनों ने नागरिकों को अपने नाटकों का केन्द्र बनाया।

फ्लेचर, ब्योमोन्ट

जान फ्लेचर (१५७९-१६२५) और फ्रान्सिस ब्योमोन्ट (१५८४-१६१६) दोनों ने पहले कुछ काल सम्मिलित रूप से लिखा। 'दि नाइट आफ़ दि बर्निंग पेस्टल' उनकी सम्मिलित रचना है जिसमें उन्होंने नागरिकों के विश्वासों की आलोचनापूर्ण अभिव्यंजना की। उनकी तीन कृतियाँ 'फिलेस्टर', 'दि मेड्स ट्रैजेडी', और 'ए किंग एण्ड नो किंग' विशेष जानी हुई हैं। इन ट्रैजेडियों का क्षेत्र यथार्थता से काफ़ी दूर है और नाटक-शैली भी यथार्थवादी नहीं कही जा सकती। कृत्रिम आवेगों का उनमें बरबस योग है। अपनी कृत्रिमता के ही कारण वे शेक्सपियर की स्वाभाविकता अपनी कृतियों में प्रस्तुत न कर सके।

जान वेब्स्टर, टूरनर

१७ वीं सदी के पूर्वार्ध में अपार्थिव प्रसंगों की भी काफ़ी रचना हुई। वेब्स्टर (लगभग १५८०-१६२५) ऐसे नाटककारों में काफ़ी प्रसिद्ध हो गया है। उसकी दोनों रचनाओं—'दि ह्वाइट डेविल' और 'दि डचेज़ आफ़ मालफ़ी'—में कथानक प्रतिशोध-प्रधान हैं। शेक्सपियर के 'हैमलेट' की भाँति उसकी शैली में षड्यन्त्र ललित कला का रूप धारण कर लेते हैं। उसकी रचना में नाट्य तत्त्व प्रभूत है जिसका प्राण कथानक की भयंकरता है। जीवन को जान वेब्स्टर अपनी कृतियों में भ्रष्ट, भयानक और क्रूर प्रकाशित करता है। सीरिल टूरनर (१५७५-१६२६) की ट्रेजेडी 'दि रिवेंजर्स ट्रैजेडी' और 'दि एथीस्ट्स् ट्रैजेडी' में वेब्स्टर की शैली असाधारण रूप धारण कर लेती है। उसके पात्र नितान्त क्रूर और प्रतिशोधवादी हो जाते हैं, चरित्र नितान्त भ्रष्ट। दरबार का चित्र ही इन कृतियों का क्षेत्र भी है। अस्वाभाविक पुतलियों की भाँति उसके पात्र चलते-फिरते हैं। वेब्स्टर की ही भाँति टूरनर भी अपने नाटकों में प्रधानतः कवि है।

मिडिलटन, मासिंगर

ब्योमोन्ट और फ़्लेचर की ही भाँति अनेक तत्कालीन नाटककारों ने सम्मिलित रचना की जिससे उनका व्यक्तिगत मूल्यांकन और स्वतन्त्र कृतिमत्ता की व्याख्या कठिन है। उनमें कुछ की कृतियों का हवाला दिया जा सकता है। टामस मिडिलटन (१५७०-१६२७) का नाम दो कामेडियों से सम्बद्ध है—'ए चेस्ट मेडेन इन चीप साइल' उनमें विशेषतः प्रसिद्ध है। उसकी ट्रैजेडियों में विख्यात है 'दि चेन्ज लिंग' जिसमें शेक्सपियर और वेब्स्टर दोनों की शैलियों का योग है। यह कृति भी भयानक घटनावादी है। फ़िलिप मासिंगर (१५८३-१६४०) कामेडी का सफल नाटककार माना जाता है और उसने अपनी 'ए न्यू वे टु पे ओल्ड डेट्स' नामक रचना में जान्सन की ही भाँति मानव

स्वभाव की रुग्णता पर भयंकर व्यंग्य प्रस्तुत किया है। उठते हुए वणिक्-वर्ग की हृदयहीनता का इतना भण्डाफोड़ १७वीं सदी की रचनाओं में कम हुआ है।

फ़ोर्ड, शर्ले

१६४२ ईस्वी में प्यूरिटनों ने इंगलैंड में थ्येटर बन्द कर दिये। स्वाभाविक ही था कि नाटकों की रचना की गति यदि सर्वथा बन्द नहीं हो जाय तो कम-से-कम रुक जाय। हुआ भी ऐसा ही। जो कुछ नाटक उस काल या उसके बाद लिखे भी गये, वे नितान्त नगण्य और अस्वाभाविक हैं। जान फ़ोर्ड (१५८६-१६३९) और जेम्स शर्ले (१५९६-१६६६) ने अपने नाटकों में भ्रष्टाचार, क्रूरता और भयानकता का चित्रण करते हुए अधिकाधिक करुणाव्यञ्जित काव्यकारिता प्रस्तुत की। गृह-युद्ध के आरम्भ के साथ-साथ अंग्रेज़ी ड्रामा का सर्वोन्नित युग समाप्त हो गया।

चार्ल्स द्वितीय के राज्यारोहण के बाद १६६० में इंग्लैंड में थ्येटर फिर खुले। जान्सन, शेक्सपियर फिर रंगमंच पर अवतरित हुए, यद्यपि नाटक के क्षेत्र में यह नया जीवन अधिकतर राज-दरबार तक ही सीमित रहा। चार्ल्स-द्वितीय और उसकी बहन हेनरीएटा (जिसकी शादी लुई चतुर्दश के अनुज औरलीन्स से हुई थी) दोनों फ्रेंच दरबार में रह चुके थे और उसके उपासक थे। उन्होंने स्वदेश लौटकर जो कामुकता की धारा बहा दी वह इंग्लैंड के इतिहास में बेजोड़ थी। थ्येटर भी उन्हीं के प्रयास और संरक्षा में फिर खुले।

इथरेज, वाइकर ली, कांग्रीफ़

उस काल की नाटक-परम्परा में कामेडी का विशेष प्रभाव बढ़ा। इथरेज, वाइकर ली और कांग्रीफ़ ने कामेडी का अंग्रेजी में नये रूप से निर्माण किया। तीनों दरबारवादी थे और तीनों ने अभिजात-कुलीय जीवन के ही प्रसंगों का खुले तौर से चित्रण किया। सर जार्ज इथरेज (१६३५-९१) ने अपनी रचना 'दि मैन आफ़ मोड' में इस शैली का विशेष प्रयोग किया जिसमें शालीन नर-नारियों का विनोदपूर्ण अंकन हुआ। विलियम वाइकर ली (१६४०-१७१६) की नाट्य शैली इथरेज से कहीं प्रखर थी और उसे उसने विनोद और भ्रष्टाचार के दृश्यों तक ही सीमित न रखा बल्कि उसमें व्यंग्य की तीव्रता भी पूर्ण रूप से जोड़ दी। अंग्रेज़ी रंगमंच पर उसकी चार रचनाओं ने सदा के लिए अपना स्थान बना लिया है। ये हैं—'लव इन ए वुड' (१८७१), 'दि जेन्टिलमैन डान्सिग मास्टर' (१६७३), 'दि कंट्री वाइफ़' (१६७५) और 'दि प्लेन डीलर' (१६७६)। इनमें पिछली दोनों कृतियाँ वाइकर ली की शैली और शक्ति को पूर्णतः प्रकट करती हैं। विलियम कांग्रीफ (१६७०-१७२९) तीनों में सबसे अधिक संयत है। उसके डायलाग बेजोड़ हैं, उसकी ख्याति २५ वर्ष की ही आयु में देशभर में फैल गयी। उस ख्याति को अर्जित करने का श्रेय उसके नाटक 'दि ओल्ड बैचेलर'

(१६६३) को है। इसके अतिरिक्त उसने तीन कामेडी और लिखीं—'दि डवल डीलर' (१६६४), 'लव फ़ार लव' (१६६५), 'दि वे आफ़ दि वर्ल्ड' (१७००)। उसने एक ट्रैजेडी भी लिखी, 'दि मोर्निंग ब्राइड'। नाटककार के रूप में उसकी महत्ता उसके अंकन की सर्वांगीणता में है। उसका दृष्टिपथ विस्तृत है और उसका अंकन समुचित। उसने नेक और वद का अपने नाटकों में चित्रण नहीं किया, वल्कि शिष्ट और अशिष्ट का, प्रखर और मन्द चित्रण किया है। विलियम कांग्रीफ का नाम भी अंग्रेज़ी साहित्य के कामेडीकारों में अमर हो गया है।

ड्राइडन, टामस ओटवे

१७वीं सदी के अन्त में सर जान वैन ब्रू ने अपनी रचना 'दि रिलैप्स' (१६६६) और जार्ज फ़र्कुहर ने 'दि वोज़ स्ट्रेटेजम' १८वीं सदी के आरम्भ में (१७०७) में लिखीं। पिछली कृति १८वीं सदी के विस्तृत आलोक के रूप में उस काल के उपन्यास-संसार की भूमिका है। नाटक की पृष्ठभूमि दरवारी वैठकों से हटकर गाँव और नगरों को ढक लेती है। उस काल का अंग्रेज़ी साहित्य वस्तुतः अपनी कामेडियों के लिए प्रसिद्ध है परन्तु तब कुछ 'हिरोइक' (वीरपरक) ड्रामा भी लिखे गये। इस क्षेत्र में ड्राइडन ने सराहनीय प्रयत्न किया। उसका सुन्दरतम नाटक 'औरंगजेब' (१६७५) है। अपनी रचना 'आल फ़ार लव' में उसने शेक्सपियर द्वारा प्रस्तुत ऐन्टनी और क्लियोपेट्रा की कहानी फिर से कही और उसमें उसने मुक्त छन्द का प्रयोग किया। टामस ओटवे इस दिशा में ड्राइडन से अधिक समर्थ हुआ और उसने १६८२ ईस्वी में 'वेनिस प्रिज़र्वड' लिखकर एलिज़ावेथ-कालीन शैली का पुनरुद्धार किया।

१७३७ ईस्वी के 'लाइसेन्सिंग ऐक्ट' ने नाटककारों की दुःशीलता से ऊवकर भाषा और चित्रण की कुछ सीमाएं बाँध दीं जिससे अनेक नाटककार नाटक के क्षेत्र से अलग हो गये। हेनरी फ़ील्डिंग इसी प्रकार का एक साहित्यिक था, जिसने नाटक का क्षेत्र छोड़कर उपन्यास का क्षेत्र अपनाया। नाटकों के सेन्सर की जो परम्परा तब प्रतिष्ठित हुई वह आज भी प्रतिष्ठित है। उस काल के अभिनय क्षेत्र में दो नाम अमर हो गये— गेरिक और मिसेज़ सिडौन्स। इसी मिसेज़ सिडौन्स का चित्र लिखकर सर जोशुवा रेनाल्ड्स ने अपने को धन्य माना।

जान ग्रे, रिचर्ड स्टील, जार्ज लिली, केली, कम्बरलैंड

१८वीं सदी की प्रारम्भिक कृतियों में जान ग्रे की 'दि वेगर्स ओपरा' (१७२८) काफ़ी प्रसिद्ध है। अनेक आलोचकों ने वालपोल पर इसे एक व्यंग्य माना है। इस कृति ने अनेक परवर्ती नाटककारों को प्रभावित किया यद्यपि वे इसकी प्रखरता प्राप्त न कर सके। सामाजिक क्षेत्र में एक नया जीवन मूर्तिमान हो रहा था, एक नयी दुनिया इंग्लैंड की ज़मीन पर खड़ी हो रही थी और साहित्य में भी तदनुकूल परिवर्तन स्वाभा-

विक था। भावों और आवेशों की पृष्ठभूमि पर एक नयी अनुभूति की चेतना जगी और १८वीं सदी के नाटककारों ने उसकी प्रतिष्ठा में विशेष योग दिया। उसके प्रारम्भिक प्रवर्तकों में एक रिचर्ड स्टील है जिसने १७०५ में 'दि टेन्डर हसबेन्ड' लिखकर गार्हस्थ्य जीवन के सौन्दर्य का निरूपण किया। जार्ज लिली (१६९३-१७३९) और भी नीचे उतरकर साधारण की परम्परा में खड़ा हुआ और अपने 'लन्डन मर्चेन्ट आर दि हिस्ट्री आफ़ दि जार्ज बार्न वेल' में जो उसने अप्रेन्टिस के जीवन का सही, गम्भीर और अकृत्रिम खाका खींचा। वह ड्रामा के क्षेत्र में एक नया भाव लेकर उतरा। ह्यू केली और रिचर्ड कम्बरलैण्ड ने भावों के जगत् में अपनी लेखनी चमत्कृत की। कम्बरलैण्ड की कृति 'दि वेस्ट इण्डियन' (१७७१) ने तो भावनाओं के संसार में मानव-प्रश्नों को सर्वथा डुबो दिया। उसका आकार उसकी शैली में सर्वथा नगण्य हो गया। और तब प्रख्यातनामा गोल्डस्मिथ और शेरिडन ने अकृत्रिम, स्पष्ट, मानवेंगित नाटक की केली और कम्बरलैंड की परम्परा से रक्षा की।

गोल्डस्मिथ

ओलिवर गोल्डस्मिथ (१७३०–७४) अंग्रेज़ी साहित्य के महान् व्यक्तित्वों में है। १७६८ ईस्वी में उसने 'दि गुड नेचर्ड मैन' लिखा और पाँच वर्ष बाद 'शी स्टूप्स टु कांकर'। इनमें दूसरी कृति तो आज भी रंगमंचों का (विशेषकर गैर पेशेवाले) आकर्षण है। अकृत्रिम मानवता जैसे इसमें सजीव हो उठी है। यद्यपि उसमें असम्भाविता की मात्रा कुछ कम नहीं, पात्रों का अंकन अद्भुत शक्ति के साथ हुआ है। हार्ड-केसल और टोनी लम्पकिन अपना व्यक्तित्व रखते हुए भी उस काल के जीते-जागते विनोदी जीव हैं।

शेरिडन (१७५१-१८१६)

परन्तु १८वीं सदी के उस उत्तरार्ध में जिसमें गोल्डस्मिथ ने अपनी रचाएं कीं, रिचार्ड शेरिडन अनुपम हुआ। वह कभी परराष्ट्र-विभाग का उपमन्त्री और ट्रेज़री का मन्त्री था। उस काल के रंगमंच के प्रमुख निर्माताओं में शेरिडन अग्रणी था। उसकी ख्याति उसकी तीन 'कामेडी-कृतियों' पर अवलम्बित है—'दि राइवल्स' (१७७५), 'दि स्कूल फ़ार स्कैन्डल' (१७७७), 'दि क्रिटिक' (१७७९)। शेरिडन नितान्त प्रखर-बुद्धि और असाधारण मौलिक था और कामेडी के क्षेत्र में उसने पुनरारोहण काल की सजीवता फिर से प्रस्तुत की। उसकी प्रवृति निश्चय रोमांचक है। चरित्र-चित्रण के क्षेत्र में तो वह नितान्त अनूठा है और उसने बेन जान्सन की कृतिमत्ता पुनः स्थापित कर दी। हां, यह मानना होगा कि शेरिडन की दुनिया में न कोई गहराई है, न मानव स्वभाव की कोई पहचान या व्याख्या। फिर भी अपने अल्पकालीन साहित्यिक जीवन में उसने जो कुछ रचा वह प्रतीक बन गया। जिस प्रसाद और सरलता से वह अपने

पात्र उपस्थित करता है और दृश्य रँगता है, वह साधारण नहीं। 'दि स्कूल फ़ार स्केन्डल' में उसकी शैली प्रखर और अधिक सक्रिय हो उठती है और दृश्य नितान्त अकृत्रिम हो जाते हैं। विनोद और हास्य की अभिसृष्टि जितनी उसकी कामेडियों में हुई है, उतनी अन्यत्र उपलब्ध नहीं। १८वीं सदी के उत्तरार्ध का जो चित्रण उसने किया है उतना कोई अन्य नाटककार न कर सका।

: ९ :

शेरिडन से शा तक

शेरिडन के बाद अंग्रेज़ी नाट्य साहित्य पर जैसे तुषारपात हो गया। जहां कहानी, उपन्यास और कविता की साहित्य में भरमार हो गई, वहां नाटक का क्षेत्र जैसे सर्वथा अनुर्वर सिद्ध हुआ। उन्नीसवीं सदी रोमैन्टिक कवियों का सृजन-काल है। ऐसा नहीं कि नाटक लिखने के प्रयत्नों से वह काल सर्वथा रहित हो। नाटक लिखे गये और रोमैन्टिक कवियों ने स्वयं अनेक रचनाएँ उस दिशा में प्रस्तुत कीं। परन्तु वस्तुतः वे असफल रहीं। शेली की 'चेंची' को छोड़कर और कोई रोमैन्टिक कृति सफल न हुई और वह 'चेंची' भी सर्वथा 'यौन' होने के कारण रंगमंच पर अभिनीत नहीं हो सका, अथवा कम-से-कम इंग्लैंड के तत्कालीन सेन्सर के अनुकूल नहीं हो सका।

उस काल, एलिज़ाबेथ-काल के अर्थ में नाटक तो नहीं, परन्तु प्रहसन और 'मेलोड्रामा' (संगीत प्रधान नाटक) ज़रूर लिखे गये। नाटक के प्रति इस उदासीनता का कारण न केवल अभिनय के प्रति रोमान्टिकों की उदासीनता थी वरन् राजदरबार की उपेक्षा भी उसका एक कारण था। विक्टोरिया को राजनीति, साहित्य से अधिक प्रिय थी और इस दिशा में एलिज़ाबेथ से वह सर्वथा भिन्न थी। इस प्रकार उन्नीसवीं सदी के नाटक को दरबार की संरक्षा न प्राप्त हो सकी, यद्यपि दरबार की संरक्षा प्राप्त न होना नाटक की सृष्टि में विशेष कारण नहीं माना जा सकता क्योंकि आखिर शेक्स-पियर या शा के नाटकों को भी तो वह संरक्षा आज उपलब्ध नहीं और अपनी नाटकीय कुशलता के कारण ही तो आखिर वे लोकप्रिय हो सके हैं। नाटक के ह्रास का विशेष कारण हमें अन्यत्र खोजना होगा—जनता की उदासीनता में। औद्योगिक क्रान्ति ने एक नये मध्यवर्ग और उससे भी समृद्ध धनी वर्ग की अभिसृष्टि कर दी थी और ये दोनों साहित्य के प्रति उदासीन थे। एक धन की सीमाओं के बाहर देखता तक न था, दूसरा उसका ग़ुलाम था और कलाकार उनके साथ अपनी आत्मीयता स्थापित न कर सका। सामन्तवाद की हमदर्द संरक्षा उठ चुकी थी और पूंजीवर्ग की संरक्षा उपलब्ध न थी और कलाकार भी रोमान्टिक होने के कारण यथार्थवादी न हो सका, नये जीवन के नये रूप को अपनी कृतियों में वह मूर्तिमान न कर सका। इसके अतिरिक्त उस काल लन्दन में केवल दो अभिनय-गृह—'कोवेन्ट गार्डन' और 'ड्रूरी लेन'—जिनको नाटक खेलने का

एकाधिकार प्राप्त था, सीमित संख्या में ही नाटकों का प्रदर्शन कर सकते थे। हाँ, १९वीं सदी के तीसरे चरण के अन्त में निश्चय अधिकाधिक नाट्यगृह सर्वत्र बन चले।

राबर्टसन, इब्सन, जोन्स, पिनेरो, वाइल्ड, गिल्बर्ट, सलीवन

ऊपर नाटककार की समसामयिक प्रवृत्तियों से आत्मीयता स्थापित न कर सकना उस काल के नाटक-ह्रास का जो एक कारण माना गया है, वह विशेषतः स्मरण रखने की बात है। १८वीं सदी में लिली ने बदलती हुई जन-प्रवृत्ति का एक अंश में अंकन किया था। १९ वीं सदी में नाटक में समसामयिक जीवन को यदि किसी भाषा में किसी ने अभिव्यक्त किया तो वह टी०डब्ल्यु० राबर्टसन था। उसकी कृति 'कास्ट' मानी हुई रचना है। वह नाटक संगीतप्रधान है और लोग उसे फूहड़ कहने से भी न चूके, परन्तु अभिनीत होकर वह जीवन को खोलकर रख देता है। उन्हीं दिनों नार्वे में नाटक के असाधारण आचार्य इब्सन का प्रादुर्भाव हुआ। इब्सन ने अपने काल के और परिवर्ती कलाकारों को क्या स्वदेश क्या विदेश में सर्वत्र प्रभावित किया है। अंग्रेज़ी ड्रामा पर भी उसका गहरा प्रभाव पड़ा और असाधारण मेधा वाले बर्नाड शा ने स्वयं इब्सन की कृतियों से बहुत कुछ सीखा। उसके नाटक 'बैंड' और 'पियर गिन्ट' के बराबर अँग्रेजी में शायद कुछ नहीं है। उसके अन्य नाटकों—'दि डाल्स हाउस', 'दि घोस्ट्स', 'ऐन एनिमी आफ़ दि पीपुल', "कैन दी डैड अवेकन", का जोड़ भी आधुनिक नाटक-साहित्य में मिलना सम्भव नहीं। उसके बाद हेनरी आर्थर जोन्स और सर ए० डब्ल्यु० पिनेरो का धरातल सहसा बहुत नीचे उतर आता है। इनमें पहले ने 'दि सिल्वर किंग' नाम का संगीत-प्रधान नाटक लिखा और 'सेन्ट्स ऐण्ड सिनर्स' तथा 'मिसेज़ डेन्स डिफ़ेन्स' नामक समस्या-नाटक रचे और दूसरे ने 'दि सेकेण्ड मिसेज़ टैंकरे' रचा। परन्तु जोन्स और पिनेरो दोनों इब्सन के मुकाबले नितान्त लघु थे, नगण्य। आस्कर वाइल्ड का उल्लेख करने के पहले गिल्बर्ट और सलीवन की ओर संकेत कर देना उचित होगा। दोनों ने ओपेरा (संगीत नाटक) प्रहसन लिखे। वस्तुतः दोनों वाइल्ड और शा के पूर्ववर्ती थे, जिन्होंने उनके लिए क्षेत्र प्रस्तुत कर दिया। वाइल्ड (१८५४-१९००) बड़ी प्रतिभा का नाट्यकार था। और उसका जेल चला जाना नाटक-साहित्य के लिये बड़ा घातक हुआ, फिर भी उसकी अनेक कामेडी कृतियों में 'लेडी विंडरमियर्स फ़ैन', 'ए वोमन आफ़ नो इम्पोर्टेंस', 'ऐन आइडियल हसबेंड' और 'दि इम्पोर्टेंस आफ़ बींग अर्नेस्ट', प्रधान हैं जो उसकी मेधा प्रचुर मात्रा में प्रकट करती हैं।

बार्कर, वेड्रेन

२०वीं सदी नये सम्भार के साथ नाटक के क्षेत्र में अवतरित हुई। उसके साथ १९वीं सदी की किसी प्रकार भी तुलना नहीं की जा सकती। नाटक-सम्बन्धी २०वीं सदी की यह सम्पदा समृद्धि में एलिजाबेथ-काल के समान थी। बार्कर और वेड्रेन

ने अपनी कृतियों द्वारा एक नये प्रकार की नाट्य-कुशलता प्रस्तुत की। बार्कर समस्या-सजीव और असाधारण यथार्थवादी था। उसके नाटक 'दि वायसे इनहेरिटेन्स' (१६०५) और 'वेस्ट' (१६०७) इस दिशा में प्रमाण हैं। 'दि मैरिंग आफ़ एनलीट' तथा 'प्रूनेला' में उसने रोमैन्टिक तत्व भी अंकित किये। 'प्रूनेला' की रचना उसने लारेन्स हाउसमन के सहयोग से की थी।

गाल्ज़वर्दी, इरविन, मेज़फील्ड

यथार्थवादी और समसामयिक जीवन की पृष्ठभूमि बनाकर नाट्य रचना करने वाले इस काल के कलाकारों में जान गार्ल्ज़वर्दी (१८६७-१६३३) अग्रणी हैं। "स्ट्राइफ़" (१६०६), 'जस्टिस' (१६१०) और 'लायलटीज़' (१६२२) नाम की उसकी रचनाओं ने ड्रामा क्षेत्र में काफ़ी ख्याति पाई। सेन्ट जार्ज इरविन ने अपने 'जैन क्लेग' (१६११) और 'जान फर्गुसन' (१६१५) में समसामयिक यथार्थवादिता की परम्परा रखी। जान मेज़फ़ील्ड ने १६०८ में 'दि ट्रैजेडी आफ़ मैन' की रचना की और गार्हस्थ्य पृष्ठभूमि में काव्यगुण का योग दिया।

लेडी ग्रेगरी, यीट्स, सिन्ज, ओकेसी

इरविन के साथ कुछ आइरिश कवियों का भी नाम लिया जाता है, जिन्होंने नाटक के क्षेत्र में कुछ प्रयोग किये। लेडी ग्रेगरी, यीट्स, सिन्ज, ओकेसी आदि उसी परम्परा के हैं। यीट्स नाटककार से कवि अधिक सफल माना जाता है। यद्यपि उसकी 'काउन्टेज कैथलीन' और 'दि लैंड आफ़ हार्ट्स डिज़ायर' आइरिश कल्पना के प्रकट नमूने हैं। नाटककार के रूप में जान मिलिंगटन सिंज (१८७९-१६०६) उससे कहीं कुशल कलाकार था। उसका 'प्लेब्वाय आफ़ दि वेस्टर्न वर्ल्ड' आइरिश चरित्र की सुन्दर व्याख्या है। सीन ओकेसी ने 'जोनो ऐण्ड दि पेकाक' और 'दि शैडो आफ़ ए गन मैन' में डबलिन का जीवन प्रतिबिम्बित किया।

सर जेम्स बेरी की बड़ी प्रतिकूल आलोचना हुई है परन्तु उसका 'पीटरमैन' कल्पना और भावना का सम्मिलित क्षेत्र होकर भी नाटक के दृष्टिकोण से कुछ कम श्लाघ्य नहीं। उसकी दो और रचनाएं—'दि ऐडमिरेबुल क्रिचेन' (१६०२) और 'डियर ब्रूटर्स' (१६१७) विशेष प्रसिद्ध हुई।

शा

परन्तु सावधि साहित्य का शेक्सपियर तो जार्ज बर्नार्ड शा है। अनेक आलोचकों का कथन है कि अंग्रेज़ी नाटक-साहित्य में यदि केवल दो व्यक्तियों का नाम लिया जाय तो उनमें एक शा निश्चय होगा। इस राय से कोई सहमत हो या नहीं, इसमें शायद दो मत नहीं हो सकते कि शा शेक्सपियर के बाद के नाटक-साहित्य का सबसे बड़ा प्रतिनिधि है। उसका जीवन-काल भी सुदीर्घ था। १८५६ से १६५० तक, ६४

वर्ष । अंग्रेज़ी साहित्य के क्षेत्र में सम्भवतः कोई कलाकार इतना दीर्घायु न हुआ। अंग्रेज़ी ड्रामा के इतिहास में शा का सृजनकाल काफ़ी दीर्घ था। १८६२ में ही उसने अपना नाट्यकार जीवन 'विडोअर्स-हाउसेज़' से आरम्भ किया और १६३६ तक 'इन गुड किंगचार्ल्ज़ गोल्डन डेज़' तक निरन्तर जारी रखा। शा की मेधा असामान्य थी, नितान्त प्रखर। इब्सन की भांति उसने भी अपने नाटकों को अपने विचारों का समर्थ वाहक बनाया। उसके व्यंग्य चुभने की शक्ति में बेजोड़ हैं, कांग्रीफ और वाइल्ड दोनों का वह सम्मिलित उदाहरण है। वह सोशलिस्ट था, फेबियन सोसायटी के निर्माताओं में से, और सेक्स, धर्म, आचार सभी कुछ उसके अभिप्रेत विषय थे। नाट्य-कुशलता उसमें असाधारण थी।

'मिसेज़ वारेन्स प्रोफेशन' में उसने गणिका के जीवन को अपने दूषित वातावरण का अनिवार्य परिणाम प्रदर्शित किया है जिसमें नारी वारांगना के दूषित पेशे को लाभकर रूप में वाध्य होकर स्वीकार करती है और इस प्रकार केवल रूमानी वेश्या नहीं रह जाती। आचार और आचरण के परम्परागत क्रम को विपरीत कर अंकित करना शा की सहज कला है। उसकी कामेडी के व्यंग्य की यही सार्थकता है। यही रूप निरन्तर 'सीज़र ऐण्ड क्लियोपैट्रा' से लेकर उसकी 'सेन्ट जोन' तक की कृतियों में विघटित है।

उसकी रचनायें समस्या-प्रधान और प्रश्न-प्रधान होने के कारण चरित्रों को प्राधान्य नहीं देतीं। इसका अपवाद उसकी नाट्य-शृंखला में बस एक है, 'कैन्डिडा' (१८६४)। वस्तु का चुनाव वह अपनी समस्याओं के अनुकूल करता है। इसीसे उसके नाटकों की वस्तुभूमि निरन्तर समस्याओं की विविधता के अनुकूल बदलती जाती है। कहीं तो 'दि डेविल्स डिसाइपल' की भांति उसका प्लाट साधारण कथानक के रूप में खुलता है और कहीं (अधिकतर) जैसे 'गेटिंग मेरिड' में कहानी सूक्ष्मतम हो जाती है। फिर भी उसके कुछ नाटकों में इन दोनों तत्वों का सुन्दर सम्मिश्रण है। जैसे—'मेजर बरबरा', 'दि शोइंग अप आफ़ ब्लैंको पौसनेट' अथवा 'जानबुल्स अदर आइलैंड' में। इन नाटकों की विशेषता इनके कलेवर से अधिक, अनेक बार इनकी प्रशस्त भूमिकाओं में होती है। इन्हीं भूमिकाओं में वह अपने विचारों को व्यंग्यपूर्ण शक्तिम चुने शब्दों में रखता है। 'एंड्रोक्लीज़ एण्ड दि लायन' की भूमिका में ईसाई धर्म पर उसने प्रबल प्रहार किया है। समस्याओं की प्रधानता पहले महासमर के बाद के उसके नाटकों में विशेष रूप धारण करती है। जैसा 'हार्ट ब्रेक हाउस', 'दि ऐपुल कार्ट', 'टू ट्रू टु बी गुड', 'दि मिलियोनेयरेस', और 'जिनीवा' नाम की उसकी रचनाओं से प्रकट है। उसके 'मैन एण्ड सुपरमैन' और 'बैक टु मैथुसेला' ने कभी नाट्य-संसार पर सम्मोहन डाल दिया था, यद्यपि आज उनके जादू की शक्ति उतनी नहीं रही। 'पिगमेलियन' का प्रभाव भी दर्शकों पर कुछ कम न पड़ा। फिर भी यह कहना कठिन है कि शा का प्रभाव साहित्यिक जगत् पर कब तक रहेगा। इतना निश्चय कहा जा सकता है कि आगे कुछ

काल तक उस महान् कलाकार का प्रभावाकार छोटा नहीं होगा। राजनीति, समाज, अर्थ, दर्शन सब पर वह अपने व्यंग्य का चुटीला प्रहार करता है और समस्याप्रधान होकर भी उसके नाटक अभिनय के क्षेत्र में आज बेजोड़ हैं। उसके नाटकों की रंगमंचीय सफलता अर्थार्जन में भी उसकी असाधारण रूप से सहायक हुई है। साहित्य के क्षेत्र में अपने जीवन-काल में शायद किसी अन्य कलाकार ने अपनी रचनाओं से इतना धन नहीं कमाया जितना वर्नाड शा ने।

आधुनिक काल के अंग्रेजी नाटक का विवरण वस्तुतः शा के साथ समाप्त हो जाता है फिर भी उसके कुछ समकालीनों का उल्लेख यहां अनुचित न होगा। टी० एस० एलियट का उल्लेख कवि-परम्परा में हो चुका है। उसका 'मर्डर इन दि कैथेड्रल' (१९३५) पैद्यात्मक ट्रैजेडी का एक सुन्दर नमूना है। ओडन और क्रिस्टोफर इशरक ने भी कुछ प्रयोग किये हैं जो दिलचस्प हैं। इन्होंने पद्य और नृत्य के समावेश से नाटक को गद्य के चंगुल से मुक्त करना चाहा है। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य उदीयमान नाटककार भी साहित्य-निर्माण में प्रयत्नशील हैं, जिनका विवरण यहां समाचीन नहीं।

: १० :

उपन्यास

(आरम्भ से डिफ़ी तक)

कहानी-लेखन की उस परम्परा का प्रादुर्भाव जिसे हम उपन्यास कहते है, साहित्य में अपेक्षाकृत काफ़ी पीछे हुआ। कुछ ने तो अंग्रेज़ी में उसका आरम्भ रिचर्डसन की 'पामेला' से माना है। जो भी हो, उपन्यास का आरम्भ १६ वीं सदी के पहले नहीं रखा जा सकता। १६ वीं सदी में भी उपन्यास के रूप में सर फ़िलिप सिडनी की जिस कृति 'आर्केडिया' का उल्लेख किया जाता है वह वस्तुतः उपन्यास के माने हुए रूप को अभिव्यक्त नहीं करती।

उपन्यास की परिभाषा तो आसान नहीं पर साधारणतः उसकी व्याख्या में कहा जा सकता है कि वह गद्य की शैली में लिखा वह साहित्य है जो कहानी पर अवलम्बित है, जिसमें चरित्र का वर्णन है और युग-विशेष का जीवन प्रतिबिम्बित है। जिसमें भावनाओं और आवेगों की क्रिया और प्रतिक्रिया अंकित है और जिससे नर-नारियों का अपने वातावरण के प्रति सक्रिय दृष्टिकोण निर्दशित होता है। इस प्रकार के उपन्यास का आरम्भ वस्तुतः १६वीं सदी में संभव न था। फिर भी पृष्ठभूमि के रूप में सर फ़िलिप की 'आर्केडिया' की ओर हम संकेत कर सकते हैं।

सिडनी (१५५६-८६), जान लिली, ग्रीक, लाज, डिलोनी, डेकर, नैश

जान लिली ने भी १६ वीं सदी में अपने 'यूफ़ियस' और 'यूफ़ियस एण्ड हिज़ इंग्लैंड' नाम के मनोरंजक 'रोमान्स' लिखे। एलिज़ाबेथ-युग में ही राबर्ट ग्रीन (१५६०-९२) ने भी अपना 'पेन्डोस्टो' लिखा जिसे शेक्सपियर ने अपने 'विन्टर्स टेल' का आधार बनाया। उस तथाकथित उपन्यास में लन्दन के उपेक्षित संसार का अंकन हुआ। टामस लाज (१५५८-१६२५) ने भी अपनी 'रोज़ेलिन्ड' तभी लिखी। परन्तु सही मनोरंजन की सामग्री टामस डिलोनी (१५४३-१६००) ने प्रस्तुत की। उसके 'जैक आफ़ न्यूबरी' में जुलाहों का जीवन प्रतिबिम्बित हुआ और 'दि जेन्टल क्रैफ़्ट' में चमारों का। टामस डेकर ने भी समसामयिक घृणित जीवन के चित्र अपनी कृति 'गुल्स हार्नबूक' में प्रस्तुत किये। टामस नैश (१५६७-१६००) ने उपन्यास-लेखन की कला में कुछ प्रगति कर १६ वीं सदी समाप्त की।

जान बन्यन

१९ वीं सदी का उत्तरार्ध उपन्यास-लेखन की दिशा में पिछली सदी से कुछ अधिक जाग्रत हुआ। जान बन्यन (१६२८-८८) का नाम अंग्रेज़ी साहित्य में काफ़ी बड़ा है। वह सैनिक और पादरी बारी-बारी रह चुका था और उसने साहित्य-प्रसिद्ध अपनी रचना 'दि पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस' १६७८ में प्रकाशित की। दो साल बाद उसकी दूसरी रचना 'दि लाइफ़ एण्ड डेथ आफ़ मिस्टर बैड मैन' भी लिखी गयी और अन्त में 'होली वार' (१६८२) प्रकाशित हुआ। 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' रूपक है और उसका कथानक कल्पना पर अवलम्बित है, यद्यपि उसमें कहानी का यथार्थ कुछ कम नहीं है।

डिफ़ो

परन्तु उपन्यास का वस्तुतः आरम्भ १८ वीं सदी में डेनियल डिफो (१६९०-१७३९) से हुआ। डिफ़ो ह्विग और टोरी दोनों दलों का एजेन्ट था। वह सट्टाबाज़ और दिवालिया भी था और उसने कुछ वैज्ञानिक अन्वेषण भी किये। उसने इधर-उधर की यात्राएँ भी की थीं और वह उस ज़माने का जाना हुआ पत्रकार था। अनेक बार उसे कैद भुगतनी पड़ी। 'दि रिव्यू', जिसका उसने १७०४ से १३ तक प्रकाशन किया, अंग्रेज़ी पत्रकारिता की एक मंज़िल है। उसकी उपन्यास की दिशा में प्रबल कृति 'राबिन्सन क्रूसो' (१७१९) है। यद्यपि 'केप्टन सिंगिलटन', 'मोल फ्लेन्डर्स', 'कर्नल जैक', 'ए जर्नल आफ़ दि प्लेग इयर', 'रोक्साना', आदि भी कुछ कम जानी हुई कृतियां नहीं हैं। डिफ़ो अपने पाठकों की अभिरुचि के अनुकूल रचना करता था। यही कारण था कि उसकी कृतियों ने प्यूरिटन मध्यवर्ग को शीघ्र अपनी ओर आकृष्ट किया। उसकी कल्पना, यथार्थ और यात्रानुभूति ने अंग्रेज़ी साहित्य को 'राबिन्सन क्रूसो' के रूप में जो दिया वह असाधारण देन सिद्ध हुआ। इस कृति का उस साहित्य पर काफ़ी प्रभाव

पड़ा और अनेक भाषाओं में आज उसके अनुवाद प्रस्तुत है।

'राबिन्सन क्रूसो' की पृष्ठ-भूमि काल्पनिक होती हुई भी यथार्थ का आभास प्रस्तुत करती है और उसकी सफलता विशेषतः उसके इसी गुण पर अवलम्बित है, यद्यपि रोक्साना और 'मोलफ्लैन्डर्स' के चरित्र भी पाठक को बरबस अपनी ओर खींचते हैं।

: ११ :

रिचर्डसन, सर वाल्टर स्काट

सेमुएल रिचर्डसन (१६८९-१७६१)

डिफ़ो के बाद उपन्यास का क्षेत्र फिर अनुर्वर होगया। उसके 'राबिन्सन क्रूसो' के प्रकाशन के प्रायः पच्चीस वर्ष बाद रिचर्डसन की 'पामेला' प्रकाशित हुई। सेमुएल रिचर्डसन अंग्रेज़ी साहित्य के प्रधान निर्माताओं में हो गया है। वह मुद्रक था और जीवन भर मुद्रक ही बना रहा। १७४० में उसने अपनी 'पामेला' प्रकाशित की। १७४७-४८ में 'क्लारिसा' और १७५३-५४ में 'सर चार्ल्स ग्रैंडिसन'।

तीनों उपन्यासों की कहानी साधारण है। 'पामेला' बांदी है जो अपनी मालकिन के पुत्र के दुराचरण के प्रयत्नों से निरन्तर अपनी रक्षा करती है और अन्त में उसके विवाह-प्रस्ताव को गम्भीरता से स्वीकार करती है। सर चार्ल्स ग्रैंडिसन भी अपने कुशल व्यवहार और संयम से सदाचरण करता है। रिचर्डसन प्यूरिटन था परन्तु उसकी रचना में कला का प्रचुर निरूपण हुआ।

हेनरी फील्डिंग (१७०७-५४)

रिचर्डसन मध्यवर्ग का था और उसने उसी वर्ग के पात्रों के गुण-दोषों का विवेचन किया। उसका यह अभाग्य था कि हेनरी फ़ील्डिंग, उसके जीवन-काल में ही प्रादुर्भूत हुआ। फ़ील्डिंग अभिजात कुलीय था, अभिजात कुलीयों के स्कूल ईटन में शिक्षा पा चुका था। 'क्लासिक्स' का प्रेमी था और सर राबर्ट वालपोल के लाइसेंसिंग एक्ट के बनने से पहले तक नाटककार भी था। पेशे से वह जर्नलिस्ट, वकील और जज भी रहा।

१७४२ में उसने रिचर्डसन की 'पामेला' का मज़ाक बनाने के लिए 'जोज़ेफ एन्ड्रूज़' प्रकाशित किया। यह 'पामेला' की एक प्रकार से व्यंग्यपूर्ण पैरोडी था। इसमें पामेला की स्थिति में बदलकर एक नौकर रखा गया है, जिसे बिगाड़ने का प्रयत्न उसकी मालकिन करती है। बाद में जब वह भाग जाता है तब फील्डिंग की दृष्टि में रिचर्डसन की दुनिया ओझल हो जाती है और उपन्यास अपने स्वाभाविक पथ पर चल

पड़ता है। उसकी 'हिस्ट्री आव जोनाथान वाइल्ड दि ग्रेट' नामक कृति 'जोज़ेफ एन्ड्रूज़' से भी अधिक व्यंग्यपूर्ण है। फील्डिग जीवन के आवेशों का खुला पोषक था और इसी विचार की अभिपुष्टि में उसने टाम जोन्स (१७४९) की रचना की, जो उसकी कृतियों में सबसे सुन्दर है। उसकी 'अमेलिया' १७५१ में प्रकाशित हुई। इसकी करुणा इसे अस्वाभाविक बना देती है। जो भी हो, फील्डिग सहज कलाकार था।

स्मोलेट

तोबियास स्मोलेट (१७२१-७१) फील्डिग का समकालीन था। स्काटलैंड का निवासी और पेशे का डाक्टर। उसकी अनेक कृतियाँ उपलब्ध हैं; 'रोडरिक रेन्डस' (१७४८), 'पेरेग्रिन-पिकिल' (१७५१), 'फ़र्डिनेन्ड काउन्ट फ़ैदम' (१७५३), 'सर लैंस्लाट ग्रीव्ज़' (१७६२), 'हम्फ़्रे क्लिंकर' (१७७१)। इनमें और तो घटिया किस्म की हैं परन्तु 'पेरेग्रिन पिकिल्स' सुन्दर है। इसके पात्र सजीव हैं, उपपात्र तो नायक से भी अधिक। इसमें और स्मोलेट की अन्य कृतियों में भी अशान्त और अधीर सामुद्रिक और जहाज़ी जीवन का सुन्दर और स्वाभाविक चित्र खींचा गया है। उस चित्र में क्रूरता और कामुकता का भी खासा चित्रण है।

लारेंस स्टर्न (१७१३-६८) अठारहवीं सदी का एक अनूठा उपन्यासकार है। वह सिपाही का लड़का और पादरी का पोता था। उसने केम्ब्रिज से एम० ए० की डिग्री ली और पादरी बन गया। उसका 'लाइफ़, एण्ड ओपीनियन्स आव ट्रिस्ट्रम शैन्डी, जेन्ट' (१७५९-६७) अनोखा उपन्यास है, सर्वथा मौलिक, जो प्रकाशित होते ही लोकप्रिय हो गया था। वैसे कहानी भयानक है, और तीसरे खण्ड में नायक का जन्म होता है। अपूर्ण वाक्य, अपूर्ण सादे पृष्ठ, अनोखा विनोद, सभी कुछ इसमें अजीब हैं, फिर भी भावों का विचित्र निर्वाह हुआ है। इस प्रकार वह मानव जीवन की विचित्रता का रूप अंकित करता है और मानवता की विषादमयी अनुभूति से सहानुभूति प्रकट करता है। उसके 'सेन्टिमेन्टल जर्नी' (१७६१) में फ्रांस की यात्रा का अंकन है।

जानसन, गोल्डस्मिथ, फैनीबर्नी

अठारहवीं सदी के मध्य में ही उपन्यासों की धारा जो मोटी हो चलती है, वह उसके अन्त तक बाढ़ बन जाती है और तब साधारण रूप से भी इन उपन्यासों का विवरण कठिन हो जाता है। फिर भी कुछ महत्वपूर्ण कृतियों का उल्लेख समीचीन है। इन्हीं में सेमुअल जानसन का 'रैसेलास' (१७५९) है, जो अबीसीनिया की कहानी के रूप में अठारहवीं सदी के आशावाद पर एक प्रकार का प्रहार है। इस प्रकार आलिवर गोल्डस्मिथ का 'विकार आव वेकफ़ील्ड' भी रूप और शैली में प्रायः अकेला है। इसका आज भी साहित्यिकों में बड़ा आदर है। गोल्डस्मिथ असाधारण कलाकार है। उसमें हास्य और चित्रण दोनों सम्पन्न करने की अद्भुत क्षमता है। उसमें गज़ब की कारुणिकता है, जिससे

वह कंगालों और आपद्ग्रस्तों के प्रति असाधारण तौर पर अनुरक्त हो जाता है। इसी काल क्वीन कैरोलिन की अनुचरी फैनीवर्नी (१७५२-१८४०) नाम की नारी ने भी उपन्यास-रचना की। अपने सुन्दरतम उपन्यास 'इवेलिना' (१७७८) में उसने गाँव की एक लड़की का लन्दन के कृत्रिम भड़कीले जीवन में प्रवेश बड़ी खूबी से कराया है। उसकी इस कृति की जानसन, बर्क, रेनाल्डस आदि ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। उसने 'सेरवीलिया' 'कैमिला', और 'वान्डरर' नाम के तीन उपन्यास और रचे। पर तीनों ही एक से एक गए-बीते थे।

मैकेन्जी, टामस डे

भावावेगवादी उपन्यासों का आरम्भ स्टर्न ने किया था। उनकी परिपाटी चल पड़ी। हेनरी मैकेन्ज़ी ने अपने 'दि मैन आफ़ फ़ीलिंग' में उस परम्परा को और जाग्रत किया। इसका हीरो स्थल-स्थल पर रो पड़ता है, जिससे उपन्यास पैरोडी का रूप धारण कर लेता है। इन्हीं दिनों टामस डे ने अपना 'सैन्डफ़ोर्ड एंड मर्टन' (१७८३-८९) नामक उपन्यास लिखा, जिससे नीतिपरक उपन्यासों की परम्परा चली। उसका 'फूल आव क्वालिटी' (१७६६-७०) भी उसी शैली का वाद-प्रतिवाद युक्त उपन्यास है।

हारेस वालपोल

उसके बाद ही उस प्रकार के उपन्यास लिखे गये, जिन्हें 'गोथिक' कहते हैं। यह भयपरक हैं। अपराध, पाप, भय, खून, बदला आदि इस प्रकार के उपन्यासों के चित्रण-आधार हैं और इनका प्रणयन विशेषतः मध्यकालीन 'वस्तु' के पुनरुज्जीवन से आरम्भ हुआ। इस परम्परा का पहला उपन्यासकार प्रसिद्ध सर राबर्ट वालपोल का पुत्र होरेस वालपोल (१७१७-९७) था। अपनी अभिजातकुलीय समृद्धि के वातावरण में उसने महत्वाकांक्षा के लब्ध्यर्थ उन व्यक्तियों को प्रयत्नशील देखा, जिन्हें स्वार्थ साधने में आचारोपचार का मोह न था। उसी वातावरण का होरेस वालपोल ने अंकन किया। भेद केवल इतना था कि उसने पृष्ठभूमि मध्यकालीन इटली के पापाचारयुक्त वातावरण से चुनी। वह स्वयं पुराविद् था। पुरातत्व से अनेक लोगों को उस काल कुछ प्रेम हो गया था। बात यह थी कि व्यापार, उद्योग आदि से जो समृद्धि हुई तो उसने आखिर ऐसे निठल्ले लोग भी उत्पन्न किये, जो अपना अवकाश—जिसकी कुछ सीमा न थी—भरना चाहते थे। उनकी जागीरदारियों में खड़े मध्ययुगीय गिरजों आदि द्वारा उनकी रोमैन्टिक तुष्टि भी हो जाती थी और इस प्रकार एक पृष्ठभूमि भी उनकी कृतियों के लिये मिल जाया करती थी। होरेस वालपोल इसी रूप से अपने उपन्यासों में पुरावर्ती पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर 'गोथिक' उपन्यास-परम्परा की नींव डाल सका। 'दि कैसिल आफ़ ओट्रेन्टो' (१७६४) इसी परमारा की कहानी लेकर साहित्य-क्षेत्र में अवतरित होता है।

बेकफोर्ड (१७५९-१८४४), मिसेज़ ऐन रैडक्लिफ़, ग्रेगरी लेविस, मैटूरिन, मिसेज़ शेली

विलियम बेकफ़ोर्ड का 'वाथेक' (१७८२) वालपोल की कृति से भी अधिक मध्यकालीन क्रूर घटनापरक है, जिसमें खलीफ़ा की क्रूरता का वर्णन है। इस लोमहर्षक पद्धति के उपन्यासकारों में सबसे जनप्रिय मिसेज़ ऐन रैडक्लिफ़ (१७६४-१८२३) हुई। उसके पांच उपन्यासों में सबसे प्रसिद्ध 'दि मिस्ट्रीज़ आफ़ उडोलफ़ो' (१७९४) और 'दि इटैलियन' (१७९७) थे। उसने मनोवेगों को कायम रखते अपने दृश्यों को प्राकृतिक पृष्ठभूमि दी और इस प्रकार १८वीं सदी की निसर्गप्रिय काव्य-परम्परा का उपन्यास में भी निर्वाह किया। उस नारी ने अपनी कृतियों द्वारा लार्ड वायरन और शेली तक को प्रभावित किया। उपन्यासकारों की इसी लोकरंजन परम्परा में मैथ्यूग्रेगरी लेविस (१७७५-१८१८), चार्ल्स रावर्ट मैटूरिन (१७८२-१८२४), मिसेज़ शेली आदि थे। इन्होंने 'दि मांक' (१७९६), 'टेल्स आफ़ टेरर', 'टेल्स् आफ़ वंडर' (लेविस) 'मेलमोथ दि वांडरर' (मैटूरिन) और 'फ्रैंकेन्स्टाइन' लिखकर लोमहर्षक उपन्यन्यासों का भंडार भरा। इनमें मिसेज़ शेली का लिखा 'फ्रैंकेन्स्टाइन' इस प्रकार के उपन्यासों में वड़ा सफल हुआ।

जेन आस्टिन (१७७५-१८१७)

उन्नीसवीं सदी में सही उपन्यास-कला का जन्म हुआ। ऐसा नहीं कि लोमहर्षक उपन्यासों का अन्त हो गया हो क्योंकि पाठकों के मनोरंजन के साधन-स्वरूप इस प्रकार के उपन्यासों का सृजन होना स्वाभाविक ही था, जब ऐसे पाठकों की कमी न थी। परन्तु उन्नीसवीं सदी अपने नये वातावरण के साथ आई। उपन्यास अब केवल मनोरंजन की सामग्री न थी। वरन् स्पष्ट कला के रूप में सिरजा जाने लगा। इस परम्परा का आरम्भ स्टिवेन्सन केरेक्टर की कन्या जेन आस्टिन (१७७५-१८१७) ने किया। साहित्य में उसकी सूझ सर्वथा नई थी। न तो उसे उसके पूर्ववर्तियों ने प्रभावित किया और न यूरोपिय उथल-पुथल ने। उसने लोमहर्षक उपन्यासों पर अपनी कृतियों से भरपूर चोट भी की (देखिये उसका—'नार्थेंगर अवे')। उसने वर्णन और यथार्थवादी सूक्ष्मता को वड़ा महत्व दिया और उसकी लेखनी से पहली वार कला प्रसूत होकर 'प्राइड एंड प्रेजुडिस' (१८१३) के रूप में आई। उसके चरित्रों में अनूठापन कुछ न था। वे समाज में घर-घर चलते-फ़िरते हाड़-मांस के जीव थे। जेन आस्टिन के संक्षिप्त डायलाग भी वड़े चुटीले हैं। उनकी शक्ति लम्वे वक्तव्यों में जव-तव नष्ट हो जाती है। इसमें विशेषतः दो परस्पर विरोधी पात्रों का चित्रण है। यही रूप हमें उसके दूसरे उपन्यास 'सेन्स एंड सेन्सिविलिटी' (१८११) में भी मिलता है। जेन आस्टिन ने 'मैन्सफ़ील्ड पार्क' (१८१४), 'एम्मा' (१८१६) और 'परसुएशन' (१८१७) नामक तीन और उपन्यास लिखे परन्तु कोई उसके 'प्राइड एंड प्रेजुडिस' के स्तर तक न उठ सका।

सर वाल्टर स्काट

इसी काल-प्रसार में सर वाल्टर स्काट ने भी अपने प्रसिद्ध उपन्यास लिखे, परन्तु जेन आस्टिन के उपन्यासों से सर्वथा भिन्न। ऐतिहासिक उपन्यास-परम्परा का प्रारम्भ सर वाल्टर (१७७१-१८३२) ने किया। ज्ञान और सुरुचि में शायद सर वाल्टर का जोड़ नहीं। घटनाओं की खोज और अध्ययन में उसने असाधारण परिश्रम किया। आलोचना में भी उसने बड़ी उदारता दिखाई। जेन आस्टिन की कला को अपनी अपेक्षा अत्यधिक ऊँचा घोषित किया। वह स्काच था, एडिनबरा के एक वकील का पुत्र, और साहित्य में, विशेषतः स्काटलैंड की ख्यातों में, उसे बड़ी दिलचस्पी थी। उसने तत्सम्बन्धी कुछ कविताएँ भी लिखीं, परन्तु यशस्वी वह अपने उपन्यासों के कारण ही हुआ। अभिजातकुलीयता के स्वाद ने उसे घृणा के भार से दबा दिया था। फिर भी उसका हाथ निरन्तर खुला रहा और धन की आवश्यकता बराबर बनी रही। उसके 'जर्नल' में धन-सम्बन्धी उसकी व्यग्रता का बड़ा करुण संकेत मिलता है। धन की आवश्यकता ने उसे उपन्यास लिखने को और भी बाध्य किया। मेरिया एजवर्थ ने अपना 'कैसिल रैक्रन्ट' (१८००) लिखकर ऐतिहासिक उपन्यास का रूप रखा था। परन्तु वस्तुतः वह परम्परा स्काट के हाथों सँवारी गई। उसमें उसने पृष्ठभूमि, वातावरण आदि प्रकृति के स्पर्श और पिछले युगों के संयोग से चित्रित किए जो न फील्डिंग ने किया था न आस्टिन ने। सही में, उसमें मध्यकालीन हीरो की असाधारणता हमें विशेष प्रभावित करती है परन्तु उस युग के समाज और सामान्य जनता की जितनी प्रांजल झलक हमें उसके दृश्यों से मिलती है और कहीं नहीं।

उसका पहला उपन्यास 'वेवरली' (१८१४) १७४५ के जैकोबिन विद्रोह के चित्र उपस्थित करता है। उसी परम्परा में उसके उपन्यास 'गाई मैनरिंग' (१८१५), 'दि ऐन्टीक्वेरी' (१८१६), 'ओल्ड मार्टेलिटी' (१८१६), 'दि हार्ट आव मिडलोथियन' (१८१८) और 'रावराय' (१८१८) भी लिखे गये। इनमें स्मृति और कल्पना दोनों एकत्र मिलते हैं। दोनों उसे सम्मिलित रूप से विधायिनी प्रतिभा प्रदान करते हैं। क्रूसेडो-सम्बन्धी उपन्यास 'आइवान्हो' (१८२०) और 'दि टेलिस्मान' (१८२५) अत्यन्त लोकप्रिय हुए। 'कैनिलवर्थ' (१८२१) और 'दि फ़ार्चुन्स आव निगेल' (१८२२) में अत्यन्त आकर्षक रूप में एलिज़ाबेथ और जेम्स प्रथम के सम्बन्ध की घटनायें वर्णित हैं। उसने केवल स्काटलैंड और इंग्लैंड के इतिहास से ही घटनायें चुनकर नहीं अनुप्राणित कीं, अपने 'क्वेन्टिन डरवर्ड' (१८२३) में तो फ्रांस के राजदरबार को भी अपनी लेखनी का आधार बनाया। परन्तु इस प्रकार उसका इधर-उधर भटक जाना ही मात्र था क्योंकि वह स्काटलैंड की स्थिति को वस्तुतः न भूल सका। 'सेन्ट रोमन्स वेल' (१८२४) और 'रेड गान्टलेट' (१८२४) की कथाओं के लिए वह फिर स्काटलैंड की ओर अभिमुख हुआ।

स्काट आज भी ऐतिहासिक उपन्यासों में रुचि रखनेवाले पाठकों का मनोरंजन करता है। अपने परवर्ती ऐतिहासिक उपन्यासकारों को भी उसने कम प्रभावित न किया। बुलवर लिटन, थैकरे, रीड, जार्ज एलियट तक उसके ऋणी हैं। उसका प्रभाव कालान्तर में फ्रांस से रूस तक और अतलांतिक सागर पार अमेरिका तक व्यापक बना।

उन्नीसवीं सदी की उपन्यास-परम्परा में अन्त में लव पीकाक (१७८५-१८६६) का उल्लेख कर देना आवश्यक होगा। शैली में भिन्न होकर भी पीकाक 'रोमैंटिक साहित्य' का शत्रु था। उसने रोमैंटिक साहित्य का मखौल उड़ानेवाले व्यंग्यात्मक उपन्यासों की एक परिपाटी ही खड़ी कर दी। उसके उपन्यासों में मनोरंजन की सामग्री प्रचुर है, जिसके प्रमाण हैं उसके 'मेड मोरियन' (१८२२), 'मिस फार्चुन्स आव एल्फिन' (१८२९), और 'क्रोचेट कैसिल' (१८३१)। उसने भी अपने परवर्ती उपन्यासकारों पर अपना प्रभाव डाला। जार्ज मेरेडिथ और आल्डस हक्स्ले दोनों को उपन्यास के क्षेत्र में अपने प्रयोग करने में पीकाक से प्रभूत प्रेरणा मिली।

: १२ :

डिकेन्स से आज तक

चालर्स डिकेन्स उन्नीसवीं सदी का सबसे बड़ा उपन्यासकार है। अनेक लोगों के विचार से तो वह अनेकार्थ में इंग्लैंड का सबसे प्रधान उपन्यासकार है। इस पिछले मत को चाहे कोई न माने परन्तु इसे स्वीकार करने में संभवतः किसी को आपत्ति न होगी कि डिकेन्स चोटी का उपन्यासकार है। अपनी विनोदात्मक उपन्यास-शैली में तो निःसन्देह वह बेजोड़ है। उसका विनोद कभी साहित्य पर बोझ बन कर नहीं आता, उसमें घुलामिला प्राण बन कर आता है। स्वाभाविकता उसका प्राण है। डिकेंस को जीवन साध्य है, प्रिय, परन्तु वह अपने वातावरण से क्षुब्ध है, अपने समाज से घृणा करता है। उसकी प्रवृत्ति विद्रोहात्मक थी और उसके उपन्यासों में भी उसका विद्रोह झलक आता है पर उसे परिस्थितियों से मजबूर होकर मध्यवर्गीय आचार से समझौता कर लेना पड़ा। 'पिकविक पेपर्स' (१८३६-३७) इसका प्रमाण है। 'आलिवर ट्विस्ट' (१८३८) में हास्य के ऊपर कारुणिकता की छाया स्पष्ट है। वह समसामयिक समाज की हृदयहीनता के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाता है। 'निकोलस निकल्बी' (१८३८-३९) में प्लाट महत्त्व धारण कर लेता है और चरित्र-चित्रण शक्तिम हो उठता है। बेन जानसन की भांति 'दि ओल्ड क्युरियासिटी शाप' (१८४१) में मध्यवर्ग के आचार पर प्रखर व्यंग्य है। 'बार्नेबी रज' (१८४१) डिकेन्स का पहला ऐतिहासिक उपन्यास है। उसके 'मार्टिन चुज़लविट' (१८४४) में अमेरिका के दृश्य भरे हैं, क्योंकि यह कृति

उसकी अमेरिका-यात्रा के बाद सम्पन्न हुई। १८४३ और ४८ के बीच उसने 'क्रिस्मस बुक्स' लिखी। यह कृति जिसमें मानव-दया में उसकी निष्ठा प्रदर्शित है, बड़ी लोकप्रिय हुई। करुण रस उसके 'डम्बे एण्ड सन' (१८४८) में जैसे फूट पड़ा है। 'डेविड कापरफ़ील्ड' (१८५०) में उसकी उपन्यास-कला आत्म कथानक का रूप धर लेती है। चरित्र-चित्रण भी इसमें ग़ज़ब का हुआ है।

डिकेन्स के प्रधान उपन्यास 'ब्लीक हाउस' (१८५३) के साथ उसके कृतित्व का दूसरा युग आरम्भ होता है। 'हार्ड टाइम्स' (१८५४) उसने कारलाइल को समर्पित किया है और 'लेसेज़-फ़ेयर' (अनिरुद्ध व्यापार) पर वह प्रखर प्रहार है। 'लिटिल डोरिट' (१८५७) में वह आफ़िसों की दीर्घ-सूत्रता पर चुटीला व्यंग्य करता है। 'दी टेल आफ़ टू सिटीज़' (१८५९) फ्रेंच राज्य-क्रान्ति सम्बन्धी सुन्दर उपन्यास है, जो उसकी प्रतिभा को नई दिशा की ओर ले जाता है, स्काट से सर्वथा भिन्न। 'ग्रेट एक्स्पेक्टेशन्स' (१८६१) और 'आवर मुचुअल फ्रेंड' (१८६४) नामक दो उपन्यास उसने और लिखे। कभी जब वह 'दि मिस्ट्री आव एडविन ड्रूड' लिख ही रहा था कि मृत्यु के क्रूर कर ने उसकी जीवन-गति बन्द कर दी।

डिकेन्स निरन्तर लिखता रहा, साथ ही निरन्तर भ्रमण भी करता रहा। उसने अमेरिका के श्रोताओं को अपने उपन्यास, कविता की भांति पढ़-पढ़ कर सुनाये। इससे उसे लाभ प्रचुर हुआ पर जीवन शिथिल हो गया, यद्यपि श्रोताओं की उपस्थिति उसके लिये मादक शराब का काम करती थी। १८७० में जब वह मरा, इंग्लैंड के जीवन से जैसे प्रधान सार चला गया। वह अपने समाज के अंगांग में समा चुका था। शा के पहले फिर कोई ऐसा न हुआ जो डिकेन्स की भांति अंग्रेज़ जनता को खिलखिला कर हँसा सकता।

थैकरे

विलियम मेकपीस थैकरे (१८११-६३) डिकेन्स का समकालीन था। पर दोनों दो स्तरों के व्यक्ति थे। डिकेन्स को सही शिक्षा नहीं मिली थी। उसके पिता को ऋणी होकर अनेक बार जेल का मुँह देखना पड़ा था। स्वयं उसे पहले कारखानों में काम करना पड़ा। थैकरे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अफसर का, कलकत्ते में जन्मा बेटा था, चार्टर हाउस और कैम्ब्रिज की हवा खाया हुआ। थैकरे जीवन भर जर्नलिस्ट रहा और लगातार 'पंच' में लिखता था। उसने 'कार्नहिल' मैगेज़िन का सम्पादन भी किया। 'वैनिटी फ़ेयर' (१८४७-४८) उसकी पहली कृति थी, जिसने उसे उपन्यासकार के रूप में अमर कर दिया। दस वर्ष बाद उसने 'दि वर्जीनियन्स' (१८५७-५९) लिखा। इसी बीच उसने 'पेन्डेनीज़' (१८४८-५०), 'हेनरी एस्मंड' (१८५२) और 'दि न्यूकम्स' (१८५३-५५) भी लिखे। वह बावन साल की आयु में मरा, डिकेन्स से भी छोटी उम्र

में। वह अच्छे प्रकार के रहन-सहन का आदी था, इससे अपनी आय बढ़ाने के लिये उसने भी लन्दन और अमेरिका में अपनी कृतियां सुना कर धन कमाना शुरू किया। उसकी आय प्राय: डेढ़ लाख रुपये प्रति वर्ष तक हो गई थी पर उसे उससे सन्तोष न होता था।

थैकरे को अपना समाज प्रतिकूल न पड़ा और उसने उसकी खिल्ली भी नहीं उड़ाई। वह अपनी कृतियों में उसका प्रतिबिम्ब मात्र उतारता गया। निःसन्देह इसके लिये उसमें असाधारण प्रतिभा थी। न कृतघ्नता के प्रति उसका आक्रोश तीव्र था। उसकी दृष्टि यथार्थ के प्रति गहरी थी और चरित्र-चित्रण उसका डिकेन्स से कहीं सूक्ष्म होता था। 'वैनिटी फ़ेयर' इस दिशा में बड़ा मार्मिक उपन्यास है।

लिटन

बुलवर लिटन (१८०३-७३) की प्रतिभा सर्वतोमुखी है। स्काट की ही भाँति उसने भी ऐतिहासिक उपन्यास लिखे और 'दि लास्ट डेज़ आव पाम्पेयाई' (१८३४) में कला की दृष्टि से उससे ऊपर उठ गया। वह कला उसके 'रिएन्ज़ी' (१३८५) में शायद और भी निखरी। 'ज़नोनी' (१८४४) उसका लोमहर्षक उपन्यास है, जिसकी लोमहर्षकता में वह अपने 'पाल क्लिफर्ड' (१८३०) में सामाजिक आक्रोश का भी पुट देता है। लिटन ने कुछ और भी उपन्यास लिखे—'युज़ीन अराम', 'दि कैक्स्टन्स', 'माई नावेल', 'पेल्हम', 'दि कमिंग रेस'। इनमें अन्तिम में उसने 'यूरोपियन' (काल्पनिक—भावी सामाजिक) उपन्यास की बुनियाद डाली।

किंग्स्ले, किंगलेक, बर्टन, बरो हडसन, जेफ़्रीज़

चार्ल्स किंग्स्ले (१८१९-७५) ने पहले तो अपने उद्देश्यपरक उपन्यास 'यीस्ट' (१८४८) और 'आल्टन लाक' (१८५०) लिखे, फिर ऐतिहासिक 'हाइपैटिया'(१८५३) और 'वेस्टवर्ड हो' (१८५५)। 'दि वाटर बेबीज़' नामक उसने एक फ़ैन्टेसी भी लिखी। ए० डब्लू किंगलेक (१८०९-९१) अपने 'इयोथेन' (१८४४) में पूर्वात्य पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। सर रिचर्ड बर्टन ने 'अरेबियन नाइट्स' अनुवाद प्रस्तुत किया, और जार्ज बरो ने अपनी भ्रमक प्रवृत्तियुक्त उपन्यास—'लावेंग्रो' (१८५१)'दि रोमानी राई' (१८५७) और 'वाइल्ड वेल्स' (१८६२) लिखे। हडसन और रिचर्ड जेफ़्रीज़ भी बरो की परम्परा के ही साहित्यिक थे।

रीड, डिज़रेली, मिसेज़ गैस्केल, कालिन्स

चार्ल्स रीड डिकेन्स के सामाजिक आक्रोश की परम्परा का उपन्यासकार था, जिसमें सामग्री की यथार्थता अधिक प्रामाणिक थी। 'इट इज़ नेवर टू लेट टु मेन्ड' (१८५६) कारागार के जीवन का भंडाफोड़ करता है। मध्यकालीन पृष्ठभूमि पर 'दि क्लायस्टर एण्ड दि हर्थ' (१८६१) नाम का एक सजीव ऐतिहासिक उपन्यास भी रीड

ने लिखा। बेन्जेमिन डिज़रेली (१८०४-८१) का व्यक्तित्व राजनीति में बड़ा था और उसके उपन्यास 'कोनिंग्सबी (१८४४), 'सिबिल' (१८४५) और 'टैंक्रेड' (१८४७) उसकी राजनीति 'आइडियालोजी' (सिद्धान्त) प्रस्तुत करते हैं। डिज़रेली उन्नीसवीं सदी की राजनीति में सबसे महान् व्यक्ति (प्रधान मन्त्री) था। इससे अधिकतर उसका साहित्य उसके राजनीतिक व्यक्तित्व में खो जाता है। पर हैं उसके उपन्यास सुन्दर, जिनमें वह 'टोरी' नीति से सँवारे नये इंग्लैंड का स्वप्न देखता है। मिसेज गैस्केल (१८१०-६५) ने अपने उपन्यासों 'मेरी बार्टन' (१८४८) और 'नार्थ एण्ड साउथ' (१८५५) में व्यावसायिक क्रूरता का भंडाफोड़ किया। उसने 'केन्फ़ोर्ड' नामक एक और सामाजिक उपन्यास लिखा। विल्की कालिन्स (१८२४-८९) ने 'दि ऊमन इन ह्वाइट' (१८६०) और 'दि मूनस्टोन' (१८६८) लिखकर होरेस वालपोल और मिसेज़ रैडक्लिफ़ की लोमहर्षक उपन्यास-परम्परा पुनरुज्जीवित की। उसकी कला उनसे कहीं प्रखर और प्रौढ़ थी।

एमिल और चारलोटी ब्रोन्टी, जार्ज एलियट

मौलिक उपन्यासों के सृजन में दो बहनों—एमिल ब्रोन्टी (१८१८-४८) और चारलोटी ब्रोन्टी (१८१६-५५) को बड़ी सफलता मिली। इनमें से पहली ने अपने 'वुदरिंग-हाइट्स' (१८४७) द्वारा प्रभूत ख्याति कमाई है, दूसरी के अनेक उपन्यास 'जेन आयर' (१८४७), 'शर्ले' (१८४९), 'विलेट' (१८५३), 'दि प्रोफेसर' (१८५७) हैं। उसके दृश्य घरेलू हैं, यथार्थवादी। जार्ज एलियट (१८१९-८०) का नाम भी इनके साथ ही लिया जाता है। सो केवल इसलिए नहीं कि वह भी नारी थी। उन्नीसवीं सदी के नारी उपन्यासकारों में वह सबसे अधिक विदुषी थी। वह नारी थी परन्तु उसने पुरुष के नाम से लिखा। वह दार्शनिक मेधा की नारी थी और उसकी उत्कट दार्शनिकता ही हर्बर्ट-स्पेन्सर से विवाह में घातक हुई। अपने पति विख्यात लेखक लेवेस के कहने से उसने उपन्यास लिखना शुरू किया। 'सीन्स आव क्लारिकल लाइफ़' (१८५७) को तत्काल सफलता मिली और 'ऐडम बीड' (१८५९) ने उसका यश प्रतिष्ठित कर दिया। 'दि मिल आन दि फ्लोस' (१८६०) भी उसकी एक ऊंची कृति है। जिसमें 'ऐडम बीड' की ही भांति हृदय और मेधा का संघर्ष है। 'सिलास मारनर' (१८६१) में वह संघर्ष प्रायः एक समष्टि का रूप धर लेता है। 'रोमोला' (१८६३) इटैलियन पुनर्जागरण-काल का ऐतिहासिक उपन्यास है और 'फेलिक्स होल्ट' (१८६६) रिफ़ार्म बिल का अनुवर्ती। उसका 'मिडिलमार्च' (१८७१-७२) उन्नीसवीं सदी के प्रधान उपन्यासों में गिना जाता। ऐतिहासिक युगों और दार्शनिक चिन्तन से वह यथार्थ की चतुर्वर्ती भूमि पर इसमें उतर आती है और समाज सहसा इसमें प्रतिबिम्बित हो आता है। बाल्ज़क जैसे उसकी इस कृति में उतर आया हो।

ट्रोलोप, जार्ज मेरेडिथ (१८२८-१९०९)

ऐन्थनी ट्रोलोप (१८१५-८२) एक दूसरी कोटि का उपन्यासकार है, सहज वर्णन-प्रवाह का। उसकी प्रखर कल्पना निरन्तर दृश्यों और चरित्रों का एकत्र सृजन करती जाती है। वह पुरुष रूप में जेन आस्टेन है, पर साथ ही अपनी सीमाओं को पूर्णतः जानने वाला। इसीसे वह अनाधिकार चेष्टा नहीं करता। उसकी कृतियाँ 'दि वार्डेन' (१८५५) और 'वारचेस्टर टावर्स' (१८५७) सुघड़ हैं। ट्रोलोप से कहीं मौलिक जार्ज मेरेडिथ (१८२८-१९०९) है। इधर के सालों में मेरेडिथ का यश घट गया है क्योंकि उसके उपन्यासों की कठिनता आशुगम्य नहीं। परन्तु उसकी मेधा अस्वीकार नहीं की जा सकती। यह सत्य है कि अपने 'हीरो' की ही भाँति, जिस पर वह हँसता है, वह स्वयं गर्वीला है। उसके लिए उपन्यास केवल कहानी का आधार नहीं है। उसके विचार में जीवन का आदर्श रूप उसकी सहज स्वाभाविकता में है, जिसके मस्तिष्क, हृदय, शरीर सभी नकारात्मक निर्देश हैं। इसी व्याख्या के लिए वह विशुद्ध और सूक्ष्म भावनाओं का विश्लेषण करता है। इसी मनोयोग से वह अपने दूसरे उपन्यासों 'रिचर्ड फेवरेल' 'ईवान हैरिंग्टन' और 'हैरी रिचमांड'—की सृष्टि करता है। भावों के विश्लेषण के अर्थ में ही वह अपने कथानकों में नारी को केन्द्रीय स्थान प्रदान करता है। 'रोडा फ्लेमिंग' (१८६५) 'विट्टोरिया' (१८६७) और 'डायना आव दि क्रासवेज' (१८८५) भी उसी प्रेरणा से प्रस्तुत हुए। उसकी सबसे प्रख्यात कृति 'दि इगोइस्ट' (१८७७) है। उसके डायलोग बड़े सजीव हैं। उसके 'वन आव आवर कांकरर्स' (१८९१) में उसका दृष्टिकोण और भी जटिल हो गया है। जटिलता उसकी लोकप्रियता में बाधक हुई है।

जेम्स

मेरेडिथ की ही सूक्ष्म चेतना हेनरी जेम्स (१८४३-१९१६) को भी मिली थी। जेम्स अमेरिका में जन्मा और शिक्षित हुआ था परन्तु इंग्लैंड में बस गया था। उसे नागरिकता का अधिकार उसकी मृत्यु से केवल एक वर्ष पहले मिला। 'डेजी मिलर' (१८७९)में उसने यूरोपीय जीवन के प्रति अमरीकी प्रतिक्रिया का चित्रण किया और 'दि ट्रैजिक म्यूज' (१८९०) तथा अन्य उपन्यासों में अंग्रेज-जीवन का अध्ययन। जैसे-जैसे उसकी साहित्यिक सक्रियता बढ़ती गई, वैसे ही वह शैली में जटिल होता गया। उस जटिलता का दर्शन हमें 'दि विंग्स आव दि डव' (१९०२) 'दि ऐम्बैसेडर' (१९०३) और विशेषतः 'दि गोल्डन बोल' (१९०४) में होता है। जेम्स यूरोप, विशेषकर उसकी अभिजात कुलीनता के प्रति बड़ी कमजोरियाँ लेकर, यूरोप गया था। उसके जो आदर्श थे, वे उसे वहां न मिले, फिर भी उसने अपनी कल्पना को साहित्य में सार्थक कर दिया, यद्यपि चित्र अयथार्थ फलतः जटिल होते गए। उसकी शैली बड़ी सूक्ष्म है और अपनी कल्पना के प्रति उसकी निष्ठा इतनी प्रबल है कि अपने आपके साहित्यिक विस्तार में वह चित्रण की एकरूपता के कारण यथार्थ लगने लगता है, मिथ्या भी निरन्तर के अंकन से नित्य सिद्ध होने लगता है।

टामस हार्डी

टामस हार्डी इंग्लैंड के सबसे महान् उपन्यासकारों में से है। टामस हार्डी (१८४०-१९२८) और हेनरी जेम्स समसामयिक हैं, पर दोनों की दुनिया अलग-अलग है। हार्डी का पहला उपन्यास १८७१ में 'डेस्परेट रेमेडीज़' निकला और तब और 'जूड दि अब्स्क्योर' के १८९५ में प्रकाशन के बीच वह निरन्तर उपन्यास लिखता गया। उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण निम्नलिखित हैं—'दि रिटर्न आव दि नेटिव' (१८७८), 'दि ट्रम्पेट मेजर' (१८८०), 'दि मेयर आव कैस्टर-ब्रिज' (१८८६), 'दि उडलैंडर्स' (१८८७) और 'टेस आव दि डुर्बविल्स (१८९१)'। हार्डी पेशे से शिल्पी था और अपनी कला को भी उसने शिल्प का महत्व दिया। इमारत की एक-एक ईंट उसने प्लान के मुताबिक बिठाई। परन्तु वह प्रारब्धवादी था। प्रारब्ध मनुष्यों को निरन्तर उनके अन्त की ओर खींचता जाता है, सदा उनके सुख की सम्भावनाओं से दूर, दुःख की ओर। उसका जीवन के प्रति यह दृष्टिकोण प्रायः दर्शन का रूप धारण कर लेता है। उन्नीसवीं सदी का भौतिक आशावाद और ईसाई धर्म की सान्त्वनाएँ, दोनों में उसका अविश्वास था जो निरन्तर बढ़ता गया और जीवन का अर्थ उसके लिए प्रायः कुछ नहीं रहा। जीवन को उसने निरुद्देश्य माना। फिर भी प्रारब्ध के शिकार मानवों के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति है और उसकी यह सहानुभूति उन्हीं तक सीमित नहीं, कीड़े-मकोड़ों तक को छू लेती है। हार्डी कथानक का भी असाधारण शिल्पी है और घटनाचक्र निरन्तर सहज रीति से उसके उपन्यासों में घूमता है। देहात का जीवन उसके उपन्यासों में मूर्तिमान हो उठता है। 'टेस' और 'जूड दि आब्स्क्योर' में तो उसकी कला ग्रीक ट्रैजेडी का रूप धारण कर लेती है। वर्डस्वर्थ की सम्मोहक करुण प्रकृति उसके हाथ में नितान्त क्रूर बन जाती है। उसके सुन्दरतम चरित्र वे हैं जो नगर के जीवन से दूर गाँवों के अकृत्रिम वातावरण में रहते हैं और नगर की सत्ता स्वीकार नहीं करते। हार्डी को एक ओर तो 'दूसरे दर्जे का रोमैंटिक', दूसरी ओर साहित्य के महानतम व्यक्तियों में से एक होने का श्रेय मिला है। इसमें सन्देह नहीं कि उसका स्थान अंग्रेज़ी साहित्य में बहुत ऊँचा है परन्तु उसका साहित्य आगे भी पाठकों को आकृष्ट करेगा, इसमें सन्देह है।

सैमुएल बटलर

डारविन के वानस्पतिक विज्ञान ने जिन अनेक अंग्रेज साहित्यिकों को प्रभावित किया था, सैमुएल बटलर (१८३५-१९०२) भी उन्हीं में था। अपने उपन्यास 'दि वे आव आल फ्लेश' (१९०३) में उसने स्विफ्ट की व्यंग्यात्मक शैली का सहारा लिया और विक्टोरियाकालीन समाज के तथाकथित समन्वित दृष्टिकोण पर गहरा प्रहार किया। उसकी कृतियाँ 'अरवोन' (१८७२) और 'अरवोन रिविज़िटेड़' (१९०१) इस

दिशा में और चुटीली सिद्ध हुईं। समसामयिक मूल्यों पर उनकी व्यंग्यात्मक चोटें दिलचस्प हैं। बटलर बौद्धिक क्रान्तिकारी है और उसकी कृतियाँ नितान्त मौलिक हैं।

स्टिवेन्सन

१८७०-८० की दशाब्दी में उपन्यासों के आकार में विशेष परिवर्तन हुआ। भारी-भरकम उपन्यास लोगों की रुचि से गिर गए और प्रकाशकों ने भी देखा कि छोटे उपन्यास छापने में ही अधिक लाभ है। राबर्ट लुई स्टिवेन्सन (१८५०-९४) इस परिवर्तन के स्रष्टाओं में प्रथम था। उसका 'ट्रेजर आइलैंड' प्रकाशित होते ही लोकप्रिय हो गया। छोटे उपन्यासों के साथ ही उन छोटी कहानियों का भी प्रादुर्भाव हुआ, जिनका आरम्भ एडगर एलेन पो ने अमेरिका में पहले ही कर दिया था। स्टिवेन्सन की 'न्यू अरेबियन नाइट्स' (१८८२) के बाद उसके और भी रोमैंटिक उपन्यास निकले—'किडनैप्ड' (१८८६), 'दि ब्लैक एरो' (१८८८), 'दि मास्टर आव बैलेन्ट्री' (१८८९), 'दि रांग बाक्स' (१८८९)। 'डाक्टर जेकेल और मिस्टर हाइड' में स्टिवेन्सन ने नेक-बद का एक रूपक प्रस्तुत किया जो आज भी काफी जनप्रिय है। स्टिवेन्सन कलाकार था और उसकी कला क्या उपन्यास, क्या कहानियाँ, क्या निबन्ध, क्या पत्र-लेखन सभी सहज और असामान्य हैं। उसके निबन्ध तो शैली के प्रतीक हैं—जैसे उसका पाठक सामने हो और उससे वह सीधा बात कर रहा हो। उसके भ्रमण-वृत्तान्त तो सर्वथा अनूठे हैं।

वीडा, हैगर्ड, डायल, वार्ड, केन, कारेली, एलेन, वालेस, उडहाउस

उसी काल कुछ ऐसे उपन्यासकारों का प्रादुर्भाव हुआ जो बड़े सफल हुए, परन्तु जो कहानी कहने मात्र में निपुण थे और जिन्होंने पाठक जनता को देखकर लिखा और लोकप्रिय हो गए। सही उपन्यासकारों की श्रेणी में उन्हें नहीं रखा जा सकता, यद्यपि उनमें से कई उनके स्तर को छू लेते हैं। ये हैं—वीडा, राइडर, हैगर्ड, ए. कानन डायल, मिसेज़ हम्फ्री वार्ड, हाल केन, मारी कारेली, ग्रांट एलेन, एडगर वालेस और पी. जी. उडहाउस। ये प्लाट की खूबी और कथानक की रोचकता से पाठकों का मन हर लेते हैं। इन्होंने धन भी अपनी कृतियों से काफी कमाया। इनमें हाल केन और उडहाउस विशेष उल्लेखनीय हैं। उडहाउस ने तो अंग्रेजी साहित्य को अत्यन्त मुहावरेदार भाषा भेंट की।

गिसिंग और किपलिंग

जार्ज गिसिंग और रुडयार्ड किपलिंग ने भी इसी काल लिखा। दोनों ऊपर लिखे उपन्यासकारों से अपनी कला और मर्यादा में भिन्न थे। गिसिंग (१८५७-१९०३) लोकप्रिय नहीं हो सका, यद्यपि उसमें मेधा अथवा साहस की कमी न थी। अपने 'वर्कर्स इन दि डान' (१८८०) 'डिमोस' (१८८६), 'दि नेदर वर्ल्ड' (१८८९) और 'न्यू ग्रब

स्ट्रीट' (१८९१) में उसने अपने समाज के भ्रष्टाचार का भयानक भंडाफोड़ किया। उसकी अवहेलना शायद उसकी अप्रिय सत्य के प्रति व्यग्रता और प्रहार के कारण हुई। उसकी कृतियों में रंजन का अभाव था। 'दि प्राइवेट पेपर्स आव हेनरी राईक्राफ्ट' (१९०३) में वह अपेक्षाकृत अधिक सफल हुआ। किपलिंग (१८६५-१९३६) बड़ा लोकप्रिय हुआ। वह साम्राज्यवादी था और उसका दृष्टिकोण तब के इंग्लैंड को अधिक प्रिय था, जब वह साहित्य के क्षेत्र में उतरा। स्टिवेन्सन की ही भाँति कहानी और छोटे उपन्यास लिखने में उस्ताद था। उसकी यह संक्षिप्त शैली भी उसकी लोकप्रियता में सहायक हुई। उसकी सफलता का एक और कारण उसके कथानकों की भारतीय पृष्ठभूमि भी था। उसकी कहानियों—'प्लेन टेल्स फ्राम दि हिल्स' (१८८८)—और उपन्यासों—'दि लाइट दैट फेल्ड' (१८९१) और 'किम' (१९०१) से उसे प्रभूत ख्याति मिली। इनके अतिरिक्त उसकी और कृतियाँ—'स्टाकी एण्ड को' (स्कूल जीवन की कहानियाँ) (१८९९), 'दि जंगल बुक्स', (१८९४-१८९५) 'पक आव पूक्स हिल' (१९०६) भी जानी हुई हैं। शैली में किपलिंग सरल है बाइबिल की तरह और कल्पना में चित्रमय, परन्तु विचारों में सर्वथा प्रतिक्रियावादी है। 'कालों के प्रति गोरों के दायित्व' वाले सिद्धान्त का वह प्रवल पोषक है, यद्यपि उसकी कविता 'रेसेशनल' में इंग्लैंड के खतरों की ओर संकेत है।

गाल्ज़वर्दी

जान गाल्ज़वर्दी (१८६७-१९३३) इस दृष्टिकोण का विरोधी आत्मालोचन का उपन्यासकार है। 'दि आइलैंड फ़ारीसीज़' (१९०४) में उसने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया। उसका 'दि मैन आव प्रापर्टी' उच्च मध्यवर्ग के जीवन का चित्रण है। उसने अपने सिद्धान्त की परिभाषा 'सम्पत्ति के विरुद्ध सौन्दर्य का संघर्ष' दी है। उसकी लेखनी के स्पर्श से वर्णन मूर्ति धारण करता जाता है। उसने आधी सदी के इंग्लैंड के उच्च मध्यवर्गीय जीवन का जैसा यथार्थ और सफल चित्रण किया है, वैसा दूसरा कोई न कर सका। वह शीघ्र इंग्लैंड और यूरोप के अन्य देशों में लोकप्रिय हो भी गया, यद्यपि आज उसकी लोकप्रियता उतनी नहीं जितनी कभी पहले थी। उसका अध्यवसाय उद्देश्य-परक है। आर्नाल्ड बेनेट (१८६७-१९३१) ने 'दि कार्ड' में व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की सफलता का अंकन किया जो प्रायः आत्म-परक था। उसकी 'दि ओल्ड वाइव्ज़ टेल' (१९०८) पर मोपासाँ का स्पष्ट प्रभाव है। उसकी तीन और कृतियाँ जानी हुई हैं—'क्लेहैंगर' (१९१०) 'हिल्डा लेसवेज़' (१९११) और 'दीज़ ट्वेन' (१९१६)।

वेल्स

एच० जी० वेल्स (१८६६-१९४६) ने इस काल उपन्यास और कहानी-लेखन में एक नया संसार रचा—वैज्ञानिक आधार पर निर्मित उसकी प्रतिभा सर्वतोमुखी

थी। चोटी का वैज्ञानिक तो वह था ही, साथ ही वह इतिहासकार, निबन्धकार और उपन्यासकार भी था। उसने अपने युग को अपनी प्रतिभा से अनेक प्रकार से विविध मात्रा में प्रभावित किया। उपन्यास के क्षेत्र में वह 'दि टाइम मशीन' (१८९५) लेकर उतरा। फिर एक के बाद एक उसके 'दि इन्विजिबुलमैन' (१८९७) 'दि वार आव दि वर्ल्डस' (१८९८), 'ह्वेन दि स्लीपर वेक्स' (१८९९), और 'दि फर्स्ट मेन इन दि मून' (१९०१) आते गए। इनमें केवल वैज्ञानिक स्थितियों का उपन्यासगत विवरण था, परन्तु शीघ्र ऐसे उपन्यासों की सृष्टि में वेल्स लगा जिनमें दृष्टिकोण और सिद्धान्त झलकने लगे। 'दि फुड आव दि गाड्स' (१९०४) और 'इन दि डेज़ आव दि कामेट' (१९०६) इसी प्रकार की कृतियाँ हैं। वेल्स विश्वासों से सोशलिस्ट था और उसने प्लेटो की ही भांति १९०५ में एक काल्पनिक शब्द-संसार रचा—'ए माडर्न युटोपिया'। उसने कुछ विनोदी, हास्यप्रधान उपन्यास—'दि ह्वील्स आव चान्स' (१८९६) 'लव एण्ड मिस्टर लेविशम' (१९००) 'किप्स' और (१९०६) भी लिखे। इनमें अन्तिम सुघड़ कृति है। वेल्स कलाकार से अधिक विचारप्रधान है और यद्यपि अनेकतः वह सुन्दर है, उसकी शैली 'जर्नलीज़' भी हो गई है। 'ऐन वेरोनिका' (१९०९) और 'दि न्यू मेकियावेली' (१९११) फिर भी सुन्दर हैं। उसका 'टोनो बंगे' (१९०९) असाधारण व्यंग्यकृति है, प्रचुर टिकाऊ। 'दि हिस्ट्री आव मिस्टर पोली' (१९१०) में वह एक बार फिर 'किप्स' की परम्परा की ओर मुड़ा और 'मिस्टर ब्रिटलिंग सीज़ इट थ्रू' (१९१६) में उसने महासमर के प्रति अपनी प्रतिक्रिया मूर्त की। उसका दृष्टिकोण दिन-दिन विश्ववादी होता जा रहा था और वैज्ञानिक होने के कारण विशेषतः वह मानव-जाति को एक इकाई के रूप में देखने लगा। इसी विचार का परिणाम 'दि आउटलाइन आव हिस्ट्री' (१९२०) नामक उसका इतिहास हुआ। 'दि वर्ल्ड आव विलियम क्लिसोल्ड' (१९२६) और 'जोन एण्ड पीटर' (१९१८) में उसकी विचारसरणी और भी गद्यपरक हो गई। परन्तु निश्चय वेल्स अद्भुत प्रतिभा का व्यक्ति था और उसके 'किप्स' तथा 'टोनो बंगे' बने रहेंगे।

कानरड, मूर, माम, फोरेस्टर, पाविज, मिस मेकाले, वालपोल, प्रीस्टले

सामाजिक उपन्यासों की परम्परा बीसवीं सदी में स्वाभाविक ही चल रही है, परन्तु अन्य प्रकार के उपन्यास भी बराबर लिखे जाते रहे हैं। जोज़फ कोरज़ेनियोस्की नामक पोल (१८५७-१९२४) ने भी कुछ दिलचस्प उपन्यास लिखे। वह जोज़ेफ कानरड नाम से प्रसिद्ध है। उसके उपन्यासों में जहाजी-समुद्री जीवन का अच्छा खाका बन पड़ा है। उसकी प्रसिद्ध कृतियां हैं—'अलमेयर्स फाली' (१८९५), 'दि निगर आव नरकिसस' (१८९८), 'यूथ' (१९०२) 'टाइफून' (१९०३) 'नोस्ट्रोमो' (१९०४), 'लार्डजिम' (१९०६), 'दि ऐरो आव गोल्ड' (१९१९)। कानरड अंग्रेजी के विदेशी निर्माताओं में

से है। जर्ज मूर (१८५२-१९३३) ने फ्रेंच साहित्य से प्रभावित होकर कुछ उपन्यास और आत्मपरिचायक ग्रंथ रचे। इनमें मुख्य हैं 'कन्फ़ेशन्स आव ए यंगमैन' (१८८८), 'हेल एण्ड फ़ेयरवेल अवे' (१९११), 'साल्वे' (१९१२), 'वेल' (१९१४), 'ईस्थर वाटर्स' (१८९४), 'दि ब्रूक केरिथ' (१९१६), 'हेलाइज़ एण्ड अवेलार्ड' (१९२१)। इनमें अन्तिम धार्मिक उपन्यास है। सामरसेट माम (१८७४) ने अपने उपन्यासों में बड़ी सफलता पाई है और आज सतहत्तर वर्ष की आयु में भी लिखता जा रहा है। 'लिज़ा आव लैंवेथ' (१८९७) के लन्दन-जगत को छोड़ अपने पिछले उपन्यासों में उसने चीन, मलाया आदि पूर्वात्य देशों का जीवन व्यक्त किया है। उसकी 'दि ट्रैम्वलिंग आव ए लीफ़' (१९-२१), 'दि पेन्टेड वेल' आदि सुघड़ कृतियां हैं। आलोचकों ने उसकी उपेक्षा की है परन्तु यथार्थ के निरूपण में वह निपुण और साहसी है। यह सत्य है, उसके उपन्यास अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

माम के विपरीत ई० एम० फ़ोरेस्टर को आलोचकों का भी साधुवाद प्राप्त है। वह इधर के काल में सुन्दर कलाकार माना जाता है। १९११ में ही प्रायः बत्तीस वर्ष की आयु में (जन्म १८७९) 'हावर्ड्स एण्ड' (१९२२) द्वारा उसे सफलता मिली परन्तु उसकी ख्याति 'ए पैसेज़ टु इण्डिया' (१९२४) द्वारा प्रतिष्ठित हुई। यह उपन्यास किपलिंग के उपन्यासों का जवाब था। फ़ोरेस्टर चित्रों का धनी है यद्यपि वह कम से कम शब्द-वर्णों का प्रयोग करता है। उसकी यह स्तुत्य कृति व्यंग्यात्मक है। टी० एफ़० पाविज़ का उपन्यास 'मिस्टर वेस्टन्स गुड़ वाइन' (१९२८) भी व्यंग्य की ही यद्यपि रहस्यवादी पृष्ठभूमि पर बना है। उसी काल मिस रोज़ मेकाले ने भी अपने 'अरफ़न आइलैंड' (१९२४) के साथ साहित्य-क्षेत्र में पदार्पण किया। इस काल के दो लोकप्रिय उपन्यासाकार ह्यू वालपोल (१८८४-१९४१) और जे० वी० प्रीस्टले (जन्म १८९४) हैं। वालपोल ने अपने 'दि उडेन हार्स', 'दि कैथेड्रल' (१९२२) में लन्दन के दृश्य प्रतिविंबित किए। उसका ऐतिहासिक उपन्यास 'रोग हेरिस' (१९३०) सुघड़ कृति है। 'दि गुड़ कम्पेनियन' ने प्रीस्टले को सम्मान दिया और 'ऐंजिल पेवमेन्ट' (१९३०) आदि द्वारा वह निरन्तर ख्याति कमाता गया। समसामयिक इंग्लैंड उसके उपन्यासों में खुल पड़ा है। इंग्लैंड के प्रति उसका प्रेम भी उसकी ख्याति का कुछ मात्रा में कारण है।

लारेन्स

इधर के उपन्यासकारों में से कुछ ने उपन्यास को आत्मानुभूति और अपने विचारों के प्रकाशन का माध्यम भी बनाया है। डी० एच० लारेन्स (१८८५-१९३०) असामान्य उपन्यासकार हो गया है, जाने हुए उपन्यासकारों से सर्वथा भिन्न। यह उसके कटु जीवन के अनुभवों का परिणाम था। उसका पिता खान का मजूर था और लारेन्स ने मजूरों की सर्वहारा, घृणित, कठिन, दैन्य, क्रूर, भयानक दुनिया आंखों देखी थी और आज की

सभ्यता उसे नितान्त घृणास्पद लगी। उसके विचार से इसने मानव-भावावेगों को नष्ट कर दिया था जिनका निवर्तन ही अपेक्ष्य है। अपनी सफल कृति 'सन्स एण्ड लवर्स' (१९१३) में उसने इस दिशा की ओर अस्पष्ट संकेतमात्र किया। फिर उसका अदम्य भावस्रोत 'दि रेनबो' (१९१५), 'विमेन इन लव' (१९२१) और 'आरोंज़ राड' (१९२२) में जैसे फूट पड़ा। अपने 'कंगारू' (१९२३) और 'दि प्लूम्ड सर्पेन्ट' (१९२६) में जैसे वह सभ्य दुनिया छोड़ मेक्सिको की ओर भाग चला। जीवन की उसकी खुली व्याख्या और चित्रों के कारण उसकी कुछ कृतियाँ ज़ब्त कर ली गई थीं, जिसकी प्रतिक्रिया में उसने जीवन की नग्नता को और खोलते हुए चुनौती के रूप में 'लेडी चैटरलीज़ लवर' (१९२८) लिखी—यौन, निरावृत्त अंकन। परम्परा के शत्रु लारेन्स ने सांप्रत के प्रति विद्रोह किया परन्तु वह स्वयं यौन की परिधि से बाहर न जा सका। काश अपनी अनुभूति और 'दृष्टि' का उपयोग उसने सभ्यता के पुनर्निर्माण में किया होता।

आल्डस हक्स्ले (१८९४)

लारेन्स के साहस का लाभ कुछ तरुण कलाकारों को भी हुआ। उनमें आल्डस हक्स्ले प्रधान है यद्यपि वह लारेन्स के साध्य से, उसके दर्शन से, नितान्त दूर है। इतनी सूक्ष्म मेधा इस शताब्दी के उपन्यास-निर्माण में, उस साहित्य के दार्शनिक विश्लेषण में किसी और को न मिली। यद्यपि यह वक्तव्य दर्शन और निरूपण के पक्ष में ही सत्य है। पिता की दिशा में उस मेधावी को चार्ल्स डारविन के सहायक टामस हक्स्ले का सुदूर पैत्रिक प्राप्त है और माता के पक्ष में मैथ्यू आर्नल्ड का योग, फिर वह आज के संसार के एक असाधारण प्रतिभाशील परिवार का व्यक्ति है। उसका बौद्धिक स्तर इंग्लैंड के पिछले उपन्यासकारों से सर्वथा भिन्न है। किसी साहित्यकार ने प्रथम महासमर के बाद के इंग्लैंड के बौद्धिक जीवन का विश्लेषण ऐसा समर्थ और सही नहीं किया जैसा हक्स्ले ने। अपने उपन्यास 'क्रोमयेलो' (१९२१) और 'एण्टिक हे' (१९२३) में उसने वंचक जीवन का व्यंग्यात्मक निदर्शन किया है। 'दोज़ बैरेन लीव्ज़' (१९२५) में एक प्रकार की गवेषणा है—अनुसन्धान और प्राप्ति। यौनानुभूति उसके लिए लारेन्स की भाँति आनन्दानुभूति नहीं है। वह उससे दूर है। मानव को वह बौद्धिक स्तर पर सर्वथा खोलकर देख लेता है, निर्लिप्त, यद्यपि कण्टकर उद्रेक से अशक्य हो जाता है। उसकी सुन्दरतम, सर्वथा मौलिक कृति 'प्वाइंट काउन्टर प्वाइंट' (१९२८) है। जिस यांत्रिक संसार में वेल्स प्रेम-विह्वल हो सकता था, उससे हक्स्ले को किंचित भी सन्तोष नहीं होता। इस यांत्रिक दुनिया को वह अपने 'ब्रेव न्यू वर्ल्ड' (१९३२) में और भी फटकारता है। धीरे-धीरे मानव-पशु के इस विवेचक की प्रवृत्ति और भी अन्तर्मुख हो जाती है और उसके 'आइलेस इन गाज़ा' (१९३६) से लगता है जैसे उपन्यास अब उसके विचारों का वहन नहीं कर सकते। 'एन्ड्स एण्ड मीन्स' (१९३७) में तो वह

कथानक तक को छोड़ देता है और उसका चिन्तन कला से दूर दर्शन का रूप धारण कर लेता है। कुछ अजब नहीं जो, जैसा उसने लेखक से कहा था, 'टाइम मस्ट हैव ए स्टाप' उसे अपनी कृतियों में सबसे सुन्दर और महान् लगता हो। और कुछ अजब नहीं कि उसकी प्रेरणा सांप्रति जगत को भूलकर 'अलख' को खोजने लगे। आल्डस हक्स्ले ने अभी हाल रामकृष्ण-मिशन के लास ऐन्जिलिस मठ के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द से कान फुकाकर शिष्यत्व ग्रहण कर लिया है।

डोरोथी रिचार्डसन, वर्जीनिया उल्फ़

कुछ उपन्यासकारों ने इधर मनोवैज्ञानिक ढंग से भी अन्तर्जीवन को व्यक्त करना शुरू किया है। इनमें डोरोथी रिचार्डसन पहली है। उसने अपने 'प्वाइन्टेड रूफ्स' (१९१५) में अकेले एक चरित्र की चेतना का अध्ययन किया है। इस दिशा में मिसेज़ वर्जीनिया उल्फ़ (१८८२-१९४१) को विशेष सफलता मिली। उसके उपन्यासों में प्रधान हैं—'दि वाएज़ आउट' (१९१५), 'नाइट एण्ड डे' (१९१९), 'जैकाब्स रूम' (१९२२), 'मिसेज़ डैलोवे' (१९२५), 'टू दि लाइटहाउस' (१९२७), 'आर्लैंडो' (१९२८), 'दि वेव्ज़' (१९३१) और 'दि इयर्स' (१९३७)। वर्जीनिया उल्फ़ की उपन्यासकला में चित्रकला का 'इम्प्रेशनिज़्म' उतर आया है। इस प्रकार उसके उपन्यास एक प्रकार का आन्तरिक एकान्त-चित्रण हो गए हैं। परन्तु उसके वर्णन में माधुर्य और प्रवाह है, विनोद है। विनोदनात्मरंजन उसके 'आर्लैन्डो' का प्राण है।

जेम्स ज्वायस (१८८२-१९४१)

इस अध्याय का अन्त जेम्स ज्वायस की कृतियों के उल्लेख बिना नहीं किया जा सकता। जेम्स ज्वायस को नितान्त सराहा भी गया है, खुली गाली भी मिली है। अच्छा-बुरा वह जैसा भी हो, शताब्दी का वह शायद सबसे मौलिक उपन्यासकार है। लघु कहानियों के जगत् में अपने संग्रह 'डब्लिनर्स' द्वारा नाम कमा वह उपन्यासों के क्षेत्र में उतरा। 'ए पोर्ट्रेट आव दि आर्टिस्ट ऐज़ ए यंगमैन' (१९१६) के आधार से उठकर उसकी सर्वथा वैयक्तिक कला 'उलिसेज़' (१९२२) में प्रौढ़ हो गई। उसके बाद 'फ़िनेगन्स वेक' (१९३९) प्रकाशित हुआ। उसने सचेतक-अचेतक दोनों जीवनों का सर्वांगीण रूप में चित्रण किया। उसके दर्शन में देश और काल की संज्ञा कृत्रिम है, सब कुछ सापेक्ष्य है, कला उसी सापेक्ष्यता का निरूपण है। 'उलिसेज' का जगत यौन चित्रण का अनंगीकृत निरावृत्त अंतरंग है। उसकी कला धर्म और चर्च के प्रति उसके विद्रोह में निखरी। ज्वायस विश्लिष्ट जगत् में समष्टि ढूंढ़ता है। उसकी कृतियाँ इसी 'एकायनता' (एकता) के अन्वेषण का परिणाम हैं। ज्वायस के उपन्यासों का प्रभाव युवा सृजकों पर गहरा पड़ा।

आनन्द

भारतीय मुल्कराज आनन्द ने मूल अंग्रेजी में अपने उपन्यासों की रचना कर उस भाषा में एक नया पूर्वात्य स्वाद डाला। उसने अपने उपन्यासों को प्रगतिशील विचारों का वाहक बनाया। मुल्कराज सुन्दर गठा गद्य लिखता है। 'कूली' 'टू लीव्ज़ एण्ड ए बड' तथा 'दि अनटचेबुल' उसकी उज्वल कृतियाँ हैं।

: १३ :

अंग्रेजी गद्य-साहित्य

(अट्ठारहवीं सदी तक)

यहां हम केवल उस गद्य का इतिहास लिखेंगे जो अधिकतर निवन्धगत है, कहानी-उपन्यास और नाटक-सम्बन्धी गद्य से भिन्न।

कैक्स्टन, मेलारी, वर्नर्स, टिन्डेल, कवरडेल, फाक्स, हुकर

अंग्रेजी गद्य का आरंभ दसवीं सदी से होता है। उसके पहले और काफी वाद तक लेटिन का बोलवाला था। जब उसका स्थान अंग्रेजी ने लिया तब भी उसकी परम्परा जीवित रही। लोग लेटिन में बोलते-लिखते थे और शिष्टता तथा शिक्षित की तो पहचान ही उसके प्रयोग से होती थी। लेटिन का जव बोलवाला या साधारण प्रयोग उठ गया तव भी उसकी परम्परा बनी रही और इसी से उस काल अंग्रेजी के दो रूप हो गए, एक तो लेटिन-बोझिल, दूसरी सहज अंग्रेजी। लेटिन भाषा के रूप में तो उठ गई पर गद्य की कृत्रिमता में अपनापा छोड़ती गई। इसी बोझिल भाषा में ईल्फ्रिक ने लिखा। अल्फ्रेड का 'क्रानिकल' सरल शैलीवाली अंग्रेजी में लिखा गया। नार्मन-विजय (१०६६) के वाद लेटिन-शैली का अंग्रेजी गद्य मिट गया, अल्फ्रेड (मृत्यु ९०१) प्रायः सौ वर्ष वाद तक चलता रहा। इस प्रकार प्रांजल सरल अंग्रेजी अपनी स्वाभाविक धारा में वह चली यद्यपि नार्मनों के साथ आई फ्रेंच भाषा का दवदवा उस धारा पर कुछ काल के लिए हावी हो गया। उस प्राचीन गद्य की परम्परा का आरम्भ विशेषतः तेरहवीं सदी में हुआ। सेन्ट मार्गरेट, सेन्ट कैथरीन, सेन्ट जुलियाना के चरित आदि उसके स्मारक हैं। १४७६ में इंग्लैंड में विलियम कैक्स्टन का छापाखाना खुला। कैक्स्टन के प्रेस और स्वयं उसके प्रयास ने इंग्लड को स्टैन्डर्ड भाषा दी। टामस मेलारी ने १४७० में 'मार्टी डी आर्थर' लिखी जो उसी प्रेस में छपी। लार्ड वर्नर्स ने फिर १५२० में 'क्रानिकल' प्रस्तुत किया जो अनुवाद मात्र था, परन्तु जो चौदहवीं सदी का जीवित चित्र प्रतिविंवित करता था। इसी अनुवाद के साथ कुछ लोगों के विचार से आधुनिक अंग्रेजी गद्य का आरम्भ होता है। इसके वाद ही अंग्रेजी वाइबिल प्रस्तुत हुई जो अंग्रेजी गद्य का सहज

अकृत्रिम अथच सशक्त रूप है। विलियम टिन्डेल (१४६०-१५३६) और माइल्स कवरडेल (१४८८-१५६८) उसके विधायक थे। जान वाइक्लिफ़ की १४ वीं सदी वाली शैली में नया अनुवाद कल्पनातीत सुन्दर उतरा। टिन्डेल ने जो काम शुरू किया था, उसके प्राणदण्ड के बाद कवरडेल ने उसे पूरा किया। बाइबिल के अनुवाद के साथ ही तद्वर्ती धार्मिक साहित्य का भी उदय हुआ। उनमें जान फाक्स (१५१६-८७) का 'बुक आफ मार्टीर्स' सबसे अधिक विख्यात है। उसमें प्रोटेस्टैन्ट शहीदों का बड़ा भावुक वर्णन है। इसका प्रोटेस्टैन्ट धर्म में प्रायः १०० वर्ष बाद तक बोलबाला बना रहा। रिचर्ड हुकर (१५५४-१६००) ने १६ वीं सदी के अन्त में अपनी 'लाज़ आफ एकलेज़िएस्टिकल पालिसी' सुन्दर सहज भाषा में लिखी, यद्यपि उसकी शैली अंग्रेजी और लेटिन के बीच की थी, जिसमें स्पष्टता, शालीनता तथा देशीयता का समान पुट था।

ऐशम, नार्थ

लेडी जेन ग्रे के शिक्षक रोज़र ऐशम ने 'टोक्सोफ़िलस' (१४५५) और 'दि स्कूल मास्टर' (१५७०) में तत्कालीन गद्य शैली उद्घाटित की। १६वीं सदी के तीसरे चरण के आरम्भ में सर टामस नार्थ ने प्लूटार्च के 'जीवन चरितों' का अनुवाद किया, जो शेक्सपियर आदि के तत्सम्बन्धी ऐतिहासिक नाटकों का आधार बना। वैसे ही फिलेमन हालैण्ड द्वारा अनुदित प्लिनी की 'नेचुरल हिस्ट्री' भी शेक्सपियर के बड़े काम आई।

होलिन्शेड

रफ़ैल होलिन्शेड ने 'क्रानिकल' के रूप में अंग्रेजी जीवन को प्रतिबिंबित किया था। वह भी शेक्सपियर की लेखनी के जादू से १६ वीं सदी के अन्त में मूर्तिमान् हुआ। उसी सदी के अन्त में रिचर्ड हकलुइट (१५५३-१६१६) ने 'दि प्रिन्सपल वायजेज़' नामक यात्रा-ग्रन्थ प्रस्तुत किया और १७ वीं सदी में राबर्ट बर्टन (१५७७-१६४०) ने 'अनाटमी आफ मलैंकली' (१६२१) लिखकर मानव-मस्तिष्क की क्रियाओं पर प्रकाश डाला।

बेकन

अंग्रेजी गद्य का पहला वास्तविक महान् व्यक्ति फ्रांसिस बेकन (१५६१-१६२६) था। वस्तुतः वह काल अंग्रेजी गद्य के विकास में बड़ा महत्व रखता है। उसी काल बाइबिल का 'सम्मत पाठ' भी प्रस्तुत हुआ। बेकन की विचार-धारा ने तत्कालीन धार्मिकता को अपनी वैज्ञानिकता से चुनौती दी। बेकन स्वयं तो रूढ़िवादी ही था परंतु जिस मनःस्थिति को उसने उत्साहित किया, वह धर्म-विरोधिनी सिद्ध हुई। बेकन की अधिकतर कृतियां लेटिन में हैं और यह कुछ कम आश्चर्य की बात नहीं कि इंग्लैंड का तत्कालीन महत्तम गद्यकार अंग्रेजी से उदासीन रहा हो। १५९७ में उसके 'एसेज' प्रकाशित हुए। इन निबन्धों की शैली अत्यन्त कसी हुई, सूत्रवत है। एक शब्द का व्यवहार

भी वह आवश्यकता से अधिक नहीं करता।

ब्राउन, टेलर, मिल्टन

१७वीं सदी का पूर्वार्द्ध गृहयुद्ध और प्युरिटन-विजय का था। उस काल का गद्य गम्भीर और शालीन है, जिसका प्रभाव आज के पाठकों पर गहरा पड़ता है। सर टामस ब्राउन (१६०५-८२), जेरमी टेलर (१६१३-६७) और जान मिल्टन ने तब अपनी शक्तिम शैली से अंग्रेजी गद्य को सनाथ किया। ब्राउन पंडित था, राजनीति से सर्वथा दूर। जादू और अमानुषिक घटनाओं में उसका विश्वास था, यद्यपि वैद्य होने के कारण विज्ञान से उसका सीधा सम्बन्ध था। उसकी शैली में दोनों का समावेश है और वह नितान्त सुन्दर बन पड़ी है। अपने 'हाड्रियोटेफिया' और 'अर्न वरियल' (१६५८) और 'रेलिजिओ मेडिसी' में जिस शैली का ब्राउन ने उद्घाटन किया, वह आश्चर्यजनक है। जेरेमी टेलर ब्राउन का समकालीन था और उसकी कृतियाँ 'होली लिविंग' (१६५०) तथा 'होली डाइंग' (१६५१)—प्रवचन के क्षेत्र में भाषा की शालीनता में अपना जोड़ नहीं रखतीं। टेलर पादरी था। मिल्टन बाएँ हाथ से लिखा करता था और अधिकतर उसने लिखा भी लेटिन में ही। व्याख्यान और लेखन की स्वतन्त्रता के पक्ष में १६४४ में जो उसने अपनी 'एरियोपेजेटिका' लिखी, वह शक्ति तथा शालीनता में लासानी है; यद्यपि उसके वाक्यों की पेचीदगी कुछ सरल नहीं। अनेक वार तो उसने अंग्रेजी और लेटिन की खिचड़ी तक कर दी है।

वाल्टन, ड्राइडन

१७वीं सदी के आइज़क वाल्टन (१५९३-१६८३) का 'कम्प्लीट ऐंगलर' (१६५३) सदियों पार आज भी पाठकों को आकृष्ट करता है। उसने अनेक जीवन-चरित लिखे और यह 'ऐंगलर' तो गृहयुद्ध के समय ही लिखा गया, जिसमें मछली मारने के व्यसन के साथ ही अंग्रेजी देहात का जीवन भी प्रतिविम्बित हुआ। १६६० के पुनरारोहण के साथ अंग्रेजी गद्य का एक नया रूप शुरू हुआ। चार्ल्स द्वितीय लुई के फ्रांसीसी दरबार में प्रवासी के रूप में एक जमाने तक रह चुका था। वह जब स्वदेश लौटा तो लुई के दरबार की अनेक विशेषताएँ साथ लेता आया। उनमें से एक विशेषता फ्रेंच भाषा की चपलता, सरलता और उसका सहज प्रवाह था। अंग्रेजी पर फ्रेन्च भाषा की इस रीति की छाया पड़ी। रायल सोसाइटी की नींव ने न केवल वैज्ञानिक विषयों की छानवीन शुरू की वरन् उसका प्रभाव साहित्य और दर्शन पर भी पड़ा। कवि और नाटककार जान ड्राइडन ने साहित्य-सम्बन्धी निबन्ध तभी लिखे। उनमें 'ऐसे आफ ड्रामेटिक पोएज़ी' (१६६८) सबसे पहले प्रकाशित हुआ और 'प्रिफेस टु दि फेबुल्स' (१७००) सबसे पीछे। ड्राइडन की शैली वड़ी सहज और सरल थी।

इसी काल टामस होब्स (जन्म १५८८) और जान लाक (१६३२-१७०४)

ने भी अपने राजनीतिक ग्रन्थ लिखे—होब्स ने 'लेवायथान' (१६५१) और लाक ने 'सिविल गवर्नमेन्ट'। लाक का निबन्ध 'ऐन एसे कनसर्निंग ह्यूमन अन्डरस्टैंडिंग' (१६६०) का प्रभाव सारे यूरोप पर पड़ा।

पेपिज़, एवेलिन, हाइड

१७वीं सदी का सबसे विख्यात गद्यकार सेमुएल पेपिज़ (१६३३-१७०३) था। उसने साधारण जन की साधारण बातें अपनी कृति में लिखीं, पहली बार और अपने जीवन की बातें सविस्तर। पेपिज़ रायल नेवी का विधाता और रायल सोसाइटी का प्रधान था। उसकी डायरी सादी और अद्भुत है, जिसका जोड़ अंग्रेजी साहित्य में नहीं। पेपिज़ के कुछ और समकालीन थे जिन्होंने उसी की भाँति अपने जीवन की भी अपने लेखों पर छाया डाली। जान एवेलिन (१६२०-१७०६), रायल सोसाइटी का सदस्य, राजदरबारी और पेपिज़ का मित्र था, जिसने उद्यानों, मैदानों, यात्राओं आदि का वर्णन लिखा। वह वस्तुतः चार्ल्स द्वितीय के सभासदों से रुचि में बड़ा भिन्न था। पेपिज़ और एवेलिन की ही भाँति क्लेयरेन्डन का अर्ल एडवर्ड हाइड (१६०६-७४) जब अपने विषय में लिखने चला तब राजनीति से घने रूप से सम्बन्धित होने के कारण उसे 'हिस्ट्री आफ दि रिबेलियन' लिख देना पड़ा। उसकी शैली जटिल है फिर भी तत्कालीन घटनाओं का उससे भरपूर ज्ञान हो जाता है।

डिफो, स्टील, स्विफ्ट

क्वीन एन का काल अंग्रेजी साहित्य के समुन्नत युगों में से है। उस काल के अधिकतर गद्य ने उपन्यास का रूप लिया। 'राबिन्सन-क्रूसो' के लेखक डिफो ने १८वीं सदी में फिर भी गद्य का रुख एक नयी दिशा में फेरा—पत्रकारिता की दिशा में। 'दि रिव्यू' पत्र-शैली का ही नमूना है। रिचर्ड स्टील (१६७२-१७२६) और जोजेफ एडिसन (१६७२-१७१६) ने उस दिशा में और सफल प्रयत्न किये और उनके पत्रों के कालमों में जो मध्यवर्ग के पाठकों के लिए छपते थे, आचार, फैशन, साहित्य सभी कुछ रूपायित होता था। निबन्ध-लेखन भी उस काल एक नये स्तर पर उतरा। एडिसन ने अपने 'स्पेक्टेटर क्लब' में एक नयी दुनिया ही रच डाली। जोनाथन स्विफ्ट (१६६७-१७४५) ने बड़ी निर्भीकता से जानी हुई दुनिया के व्यंग्यात्मक चित्र सिरजे। 'दि बैटिल आफ दि बुक्स' और 'ए टेल आफ ए टब' (१७०४) से लेकर 'गुलिवर्स ट्रैवेल्स' (१७२६) तक की कृतियाँ एक के बाद एक साहस और शैली की दुनिया रचती गयीं। उसके 'जर्नल टु स्टेला' से प्रमाणित है कि उसके व्यंग्य ने शत्रु नहीं उत्पन्न किये। 'ड्रेपियर्स टेलर्स' (१७२४) में उसने राजनीतिक वंचकता का घृणापूर्वक भण्डाफोड़ किया। शक्ति, सूझ और व्यंग्यात्मक विनोद में स्विफ्ट अकेला है। उसने अंग्रेजी गद्य को नयी शक्ति और दिशा दी।

: १४ :

आधुनिक गद्य

बटलर, मैन्डेविल।

१८वीं सदी में इंग्लैंड के सक्रिय संघर्षमय जीवन ने भाषा की मर्यादा इस मात्रा में स्थापित कर दी कि वह अभिव्यक्ति का असाधारण साधन बन गयी। राजनीति, विज्ञान, धर्म सभी क्षेत्रों में उसकी अनिवार्य आवश्यकता प्रतीत हुई और सर्वत्र उसने समर्थ निर्माताओं का सक्रिय योग पाया। जिस प्रकार होब्स और लाक ने अपने राजनीतिक सिद्धान्त दार्शनिक परन्तु सुगम गद्य में व्यक्त किये थे, उसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र में भी जोज़ेफ़ बटलर (१६९२-१७५२)-सा विवेचक हुआ। 'दि अनालोजी आफ रिलीजन' (१७३६) द्वारा उसने धर्म की स्थापनाओं का सशक्त समर्थन किया। परन्तु दुनिया तेजी से बदलती जा रही थी और लोगों में परम्परा के प्रति सन्देह घर करता जा रहा था। ऐसों में बर्नार्ड मैन्डेविल (१६७०-१७३३) असामान्य मौलिकता का व्यक्ति था। 'दि फ़ेबुल आफ़ दि बीज़' (१७१४) में उसने राज्य की वंचकता पर गहरी चोट की। उसके निबन्ध आज के पत्रकारों की कुशल शैली में लिखे गए हैं, सरकार की आलोचना में।

बर्कले, ह्यूम

जार्ज बर्कले (१६८५-१७५३) आदर्शवादी था और जीवन के क्षेत्र में उसने दार्शनिक समस्याओं को सरका दिया। उसने भौतिक संसार के अस्तित्व को न मानकर चेतना को ही मानव-ज्ञान का आधार स्वीकार किया। डेविड ह्यूम (१७११-७६) ने भी ज्ञान-चिन्तन में ही अपना गद्य माँजा और देकार्त को अपने अनुशीलन में पुनर्जीवित किया। ह्यूम के 'एसेज़ कनसर्निंग ह्यूमन अन्डरस्टैंडिंग' (१७४८) का चिन्तन के क्षेत्र पर गहरा प्रभाव पड़ा।

गिबन, जान्सन, बासवेल

१८वीं सदी में इतिहास का विशेष चिन्तन हुआ है और इतिहास के क्षेत्र में विशेषतः गद्य-भारती जगी। ह्यूम स्वयं इतिहासज्ञ था यद्यपि उस दिशा में 'दि डिक्लाइन एण्ड फाल आफ दि रोमन एम्पायर' (१७७६) लिखकर एडवर्ड गिबन (१७३७-९४) ने बड़ा नाम कमाया। उसकी 'आटोबायोग्राफी' स्वयं शैली का सुघड़ नमूना है। उसके इतिहास ने प्राचीन का उद्घाटन किया, जिससे नवीन का सापेक्ष्य मूल्यांकन किया जा सका। गिबन की कृति का भी उस काल के ज्ञान पर बड़ा प्रभाव पड़ा। प्रसिद्ध डाक्टर सेमुएल जान्सन (१७०९-८४) गिबन के मित्रों में से था। उसके व्यक्तित्व ने अंग्रेजी

साहित्य पर असाधारण प्रभाव डाला। उसका यश अधिकतर जेम्स वासवेल (१७४०-९५) का 'लाइफ आफ़ जान्सन' पर अवलम्बित है, जिसमें उस महाकाय साहित्यिक के प्रतिपल का जीवन प्रतिबिंबित है। जान्सन का शेक्सपियर की कृतियों का संस्करण (१७६५) उस महाकवि के अध्ययन में बड़ा सहायक सिद्ध हुआ। उसकी भूमिका ने अपने साहस-भरे दृष्टिकोण से एक प्रकार से उसकी रक्षा कर ली। जान्सन की महान् कृति उसकी 'डिक्शनरी' (कोष) (१७४७-५५) है, जिसपर वाद के प्रायः समस्त कोष अवलम्बित हुए। शब्दों का जितना ज्ञान उनके निर्माण और विकास के रूप में जान्सन को था, उतना किसी को न था। जान्सन की बौद्धिक चर्चा प्रसिद्ध है। उसके क्लब में वर्क, रेनाल्ड्स (जिसके घर क्लब की बैठकें हुआ करती थीं), फाक्स आदि सभी बैठते थे। उसकी वाक्यावली की छाप अंग्रेजी साहित्य में उतर गई। उसी चर्चा की गद्य-शैली में जान्सन ने कावले से ग्रे तक के कवियों का जीवन चरित 'दि लाइव्ज़ आफ़ दि पोयट्स' (१७७९-८१) के नाम से प्रकाशित किया। 'दि रैम्बलर' और 'दि आइडिलर' में उसने एडिसन से कहीं अधिक साहित्यिक पूँजी प्रस्तुत की। इन पत्रों के अतिरिक्त उसके ज्ञान का भण्डार 'ए जर्नी टु दि वेस्टर्न आइलैंड्स आफ स्काटलैंड' (१७७५) में भी खुल पड़ा है। उसके 'रैसेलस' का हवाला अन्यत्र दिया जा चुका है।

गोल्डस्मिथ, वर्क

व्यक्तित्व में जान्सन से नितान्त लघु होकर भी कर्तृत्व में ओलिवर गोल्डस्मिथ (१७३०-७४) उससे महान् था। उसमें साहित्यिक प्रतिभा कहीं अधिक थी। जान्सन ने उसके विषय में स्वयं कहा है कि उसने साहित्य के सभी प्रकारों को अपनाया और जिस-जिस को उसने अपनाया उस-उस प्रकार को अलंकृत किया। नाटककार और उपन्यासकार तो वह था ही, निबन्धकार भी वह असामान्य था। उसके निबन्धों में उसका व्यक्तित्व खुल पड़ा है। 'दि सिटिज़न आफ़ दि वर्ल्ड' (१७६२) नामक लेख-संग्रह में उसने एक चीनी यात्री के वहाने जीवन पर कुछ चुटीले वक्तव्य किये हैं। गोल्डस्मिथ भी जान्सन की बैठक का महत्वपूर्ण व्यक्ति था। एडमण्ड वर्क (१७२९-९७) का नामोल्लेख पहले हो चुका है। वर्क असाधारण राजनीतिज्ञ था और अपने काल का प्रमुख वक्ता। उसने लिखा भी बहुत कुछ और जहाँ उसके व्याख्यान शब्दों का जादू प्रस्तुत करते हैं; उसके लेख चिन्तनशील व्याख्या का। 'इम्पीचमेन्ट आफ हेस्टिंग्स' जो उसके वारेन हेस्टिंग्स के विरुद्ध पार्लमेन्ट में दिये व्याख्यानों का संग्रह है, आज भी भारतीयों के आकर्षण का विषय है। उसकी अधिकतर रचनाएँ व्याख्यान के ही रूप में संग्रहीत हुईं परन्तु वे भावों की उदारता और भाषा के प्रवाह में अद्वितीय हैं। 'दि सबलाइम एण्ड दि ब्यूटिफुल' (१७५६) उसकी प्रारम्भिक कृति है। उसकी पिछली कृतियों में प्रधान हैं—'आन अमेरिकन टैक्सेशन' (१७७४), 'आन कन्सिलियेशन विथ अमेरिका'

(१७७५) और 'रिफ्लेक्शन्स आन दि फ्रेन्च रेवोल्यूशन' (१७६०)। बर्क प्राचीनता और परम्परा का बड़ा हिमायती था। उसकी गद्य-शैली में जान्सन और गिबन दोनों से अधिक प्रवाह है।

ग्रे, काउपर, वेजली, वालपोल, चेस्टरफ़ील्ड, मैकफर्सन

१८वीं सदी के गद्य की शैली चिट्ठी-पत्रियों और पत्रिकाओं में भी निर्मित हुई। व्यक्तिगत चिट्ठी-पत्रियों में तो उसकी आकृति अनेक बार बहुत सुन्दर बन पड़ी है। वास्तव में १८वीं सदी में पत्रलेखन को जितनी सुरुचि का आधार मिला शायद कभी नहीं। टामस ग्रे की चिट्ठियों में उस सदी के साहित्य का एक प्राञ्जल रूप सुरक्षित है और विलियम काउपर की चिट्ठियाँ तो उसकी कविताओं से कहीं सजीव हैं। उसके वर्णन जीवन का रस निचोड़ कर रख देते हैं; सुन्दर, भोंडे सभी प्रकार के जीवन का। जान वेज़ली (१७०३-१६) ने जो मेथाडिस्ट सम्प्रदाय का प्रवर्तक था, अपनी डायरी में अपने संघर्ष का सहृदय वर्णन किया है। होरेस वालपोल (१७१७-६७) की चिट्ठियाँ १८वीं सदी के जीवन का दर्पण हैं, यद्यपि उनका कलात्मक रूप चेस्टरफ़ील्ड के अर्ल (१६६४-१७६३) के पत्रों में और भी निखर गया है। जेम्स मैकफर्सन (१७३६-६६) अंग्रेजी साहित्य का अति करुण व्यक्तित्व है। उसने एक नये किस्म के गतिमान गद्य की अभिसृष्टि की जिसमें उसने अनेक पुरानी कविताओं का रूपान्तर भी किया। बाद में मालूम हुआ कि उनके मूल सिवा मैकफर्सन के दिमाग के और कहीं न थे। जब उससे मूल कविताओं के सम्बन्ध में प्रश्न किया गया तब वह अपने तथाकथित अनुवादों के आधार पर मूल की अभिसृष्टि करने बैठा। मैकफर्सन के वर्णनात्मक संग्रह का नाम 'दि वर्क्स आफ ओस्सियन' है।

कालरिज़, कीट्स, बायरन

१६वीं सदी में कालरिज ने अंग्रेजी गद्य को अपनी 'बायोग्रेफिया लिटरेरिया' (१८१७) में जो एक नयी चेतना दी, वह थी साहित्यिक आलोचना की। कालरिज के लेखों ने अपने दार्शनिक दृष्टिकोण से १६वीं सदी के चिन्तन को बड़ा प्रभावित किया। आलोचना के क्षेत्र में तो उसने सर्वथा नयी शब्दावली का सृजन किया। जान कीट्स की चिट्ठियों में भी अद्भुत भावुक शक्ति है, जो उन पर उसकी स्वाभाविक काव्य-प्रतिभा की छाया डालती है। परन्तु वास्तव में बायरन के पत्रों और जर्नलों में समसामयिक जीवन का जितना कल्पनातीत सुखद, सच्चा और क्रूर वर्णन है, उतना और कहीं उपलब्ध नहीं।

लैम्ब (१७७५-१८३४)

चार्ल्स लैम्ब अंग्रेजी साहित्य के प्रधान निबन्धकारों में हो गया है। उसके 'एसेज़ आफ़ एलिया' (१८२३) और 'लास्ट एसेज़' (१८३३) अंग्रेजी गद्य-साहित्य की

अमर कृतियाँ हो गई हैं। उसकी निवन्ध शैली का प्रारम्भ फ्रेंच निवन्धकार मोन्तेन ने किया था। उसका पहला अंग्रेज समर्थक काउले था। पुराने निवन्धकारों की पृष्टभूमि पर खड़ा लैम्ब अपने विनोद और नित्य के जीवन का योग देता है। उसका सृजनात्मक हृदय दुःख वर्दाश्त नहीं कर सकता था। उसकी वहिन का विक्षेप उसके लिए दारुण विषाद वन जाता है। उसके निवन्धों में साधारण और सामान्य का अटूट उपयोग हुआ है।

हैज़्लिट

निवन्धकार के रूप में लम्ब का मित्र विलियम हैज़्लिट (१७७८-१८३०) भी प्रभूत विख्यात हुआ। उसके निवन्धों में आज भी असामान्य ताज़गी है। वह शब्दों का शिल्पी है और शब्दों का चुनाव धीरता से करता है। अपनी आलोचना में वह कहीं समझौता नहीं करता, प्रखर है। लैम्ब दयार्द्र है, हैज़्लिट परुष। अपने 'लिवर अमोरिस' (१८२३) में उसका व्यंग्य अपने को भी नहीं छोड़ पाता। उसके निवन्ध-संग्रहों में सबसे प्रखर 'दि स्पिरिट आफ़ दि एज' (१८२५) है। इसमें उसने अपने समकालीनों का शब्द-चित्रण किया है, स्पष्ट और निष्ठुर।

डि क्विन्सी, काबेट, लैन्डर,

डि क्विन्सी (१७८५-१८५९), कावेट (१७६३-१८३५) और लैन्डर (१७७५-१८६४) भी प्रायः उसी काल के निवन्धकार हैं। टामस डि क्विन्सी ने तो अपने 'कन्फेशन्स आफ ऐन इंग्लिश ओपियम ईटर' (१८२१) द्वारा अंग्रेजी गद्य में एक नया प्रयोग किया। इसमें उसने अफीमची के रूप में अपनी अनुभूतियों और स्वप्नों का चित्रण किया है। विलियम कावेट वड़े दम का निवन्धकार है, जो वड़े जोशोखरोश से लिखता है। 'रूरल राइड्स' (१८३०) में उसने इंग्लैंड के देहातों का जीता-जागता चित्र खींचा है। यह यात्रा उसने घोड़े पर की थी। उसका वर्णन वड़ा स्वाभाविक है, जो कभी वासी नहीं हो सकता। वाल्टर सैवेज लैन्डर इन सबसे भिन्न है; शैली, शब्दावली, अनुभूति सब में। अपने 'इमेजिनरी कानवरसेशन्स' (१८२४-२९) में उसने शाब्दिक सौन्दर्य का एक राज खड़ा कर दिया।

जेफ्रे, स्मिथ, लोखार्ट

उन्नीसवीं सदी के पत्र-पत्रिकाओं में भी साहित्य का रस काफी छलका। इनमें 'दि जेन्टिल मैन्स मैगेज़िन' (१७३१-१८६८) पोप के जमाने से ब्राउनिंग के काल तक चली। उन्नीसवीं सदी के पहले दशक में ही प्रसिद्ध 'एडिन्बरा रिव्यू' निकली। उसका सम्पादक फ्रैंसिस जेफ्रे (१७७३-१८५०) था, जिसने रोमैंटिक कवियों की अच्छी खवर ली। सिडनी स्मिथ (१७७१-१८४५) भी उस पत्रिका में लिखता था। उसकी पैनी लेखनी का तीखापन असह्य हो जाता था। एडिन्बरा रिव्यू के जवाव में 'टोरियों' (नरमदल वालों) ने १८०९ में अपनी 'क्वार्टर्ली रिव्यू' निकाली। स्काट का

जामाता और चरितकार लोखार्ट अपनी सवल लेखनी का उपयोग 'व्लैक उड्स-एडिन्वरा मैगेज़िन' के कालमों में करता था। इस पत्रिका का नाम अक्सर कीट्स की समालोचना में लिखे लेखों के सम्वन्ध में लिया जाता है।

डारविन, हक्स्ले, बेन्थम, माल्थस, मिल

चार्ल्स डारविन वैज्ञानिक था परन्तु अपने विचारों की स्पष्टता के कारण उसकी गद्य-शैली की चर्चा भी की जाती है। अपने 'ओरिजिन आफ स्पिसीज़' और 'दि डिसेन्ट आफ मैन' में उसने वैज्ञानिक जटिलता से अलग अकृत्रिम गद्य का प्रयोग किया। डारविन (१८०९-८२) के समर्थन में टी० एच० हक्स्ले (१८२५-९५) ने भी स्पष्ट गद्य का सहारा लिया। वैज्ञानिकों के अतिरिक्त राजनीतिक दार्शनिकों का हाथ भी उन्नीसवीं सदी के गद्य-निर्माण में काफी रहा है। उन्होंने राजनीति में व्यक्तिगत चेतना और व्यापार में स्वतन्त्रता का विचार रखा। जेरेमी वेन्थम (१७४८-१८३२), टी० आर० माल्थस, जेम्स मिल और उसका पुत्र जान स्टुअर्ट मिल (१८०६-७३) इसी क्षेत्र के लेखक हैं। पर उनकी शैली में चिन्तन तथा वाद-प्रतिवाद तो है, साहित्यिक आनन्द नहीं। हां, जान स्टुअर्ट मिल की 'आटोवायोग्रैफी' में निश्चय कुछ आकर्षण है।

मेकाले, कारलाइल, न्यूमन, रस्किन

टामस बैबिंग्टन मेकाले (१८००-५९) का गद्य अत्यन्त समृद्ध था। सविस्तर ज्ञान रखता हुआ भी वह अपनी विवेचनाओं में कठमुल्ला और एकांगी था। उसकी भाषा में ग़ज़ब का प्रवाह था और शब्दावली का वह आचार्य था। कुवाच्यों के घन में वह बेजोड़ था। उसकी 'हिस्ट्री आफ इंग्लैंड' (१८४९-६१) साहित्य की कोटि की है। टामस कारलाइल (१७९५-१८८२) साहित्यकार था परन्तु उसका आधार उसने इतिहास को वनाया। उसकी सुन्दरतम कृतियाँ 'सार्टर रिसार्ट्स' (१८३३-३४) 'आन हिरोज़ ऐण्ड हिरोवर्शिप' (१८४१) और 'पास्ट एण्ड प्रेजेण्ट' (१८४३) हैं। उसकी ख्याति उसके 'फ्रेंच रेवोल्यूशन' से ही हो गई थी। उसके वाक्य लम्बे, कभी सामान्य, कभी पेचीदे और चिन्तनशील हैं। उसके शब्दों की परम्परा अटूट है, उनका प्रवाह अविच्छिन्न। कारलाइल के आदर्शवाद के साथ ही धार्मिकों का आक्सफोर्ड से एक आन्दोलन चला। उनमें अग्रणी जान हेनरी न्यूमन (१८०१-९०) था, जिसने सुन्दर गद्य रचना की। अपनी 'अपोलोजिया प्रो विटा सुआ' (१८६४) में उसने अपने ही आध्यात्मिक इतिहास को भावमयी वाणी में व्यक्त किया। जान रस्किन (१८१९-१९००) उन्नीसवीं सदी के साहित्यकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। अपने 'माडर्न पेन्टर्स' में उसने सौन्दर्य के दर्शन को धर्म का स्थानापन्न वना दिया। वास्तु का उसने अपने 'सेविन लैम्प्स आफ आर्किटेक्चर' (१८४९) और 'दि स्टोन्स आफ वेनिस' (१८५१-५३) में दार्शनिक विवेचन किया। अपनी शताव्दी के घृणित व्यवसायवाद का उच्छेद उसने अपने 'अन्ट दिस लास्ट' (१८६२) में किया। रस्किन के वाक्य नितान्त लम्बे हैं और शैली पेचीदी है।

आर्नल्ड

उस सदी के साहित्यकारों में मैथ्यू आर्नल्ड (१८२२-८८) का स्थान बहुत ऊँचा है। उसने कविता को जीवन का दर्पण कहा है और आलोचना के साहित्य में प्रायः एक क्रान्ति उपस्थित कर दी। उसने आलोचना के उन सिद्धान्तों का पहली बार निर्माण किया, जिनके आधार पर साहित्य का मूल्यांकन हो सके। जहाँ रस्किन ने कला को धर्म का पद दिया था वाल्टर पेटर (१७३९-९४) ने कला का अन्त कला ही में माना और 'कला कला के लिए' का आदर्श चलाया। उसकी 'स्टडीज़ इन दि हिस्ट्री आफ रिनैसांस' गद्य-साहित्य में असामान्य सौन्दर्य प्रस्तुत करती है। वाल्टर पेटर उन्नीसवीं सदी के गद्य का अन्तिम शैलीकार था।

बीसवीं सदी

बीसवीं सदी का गद्य, नाटक और उपन्यासों से भिन्न, अमित है, और उसका मूल्यांकन अथवा उल्लेख आसान नहीं। जी० के० चेस्टर्टन, हिलेयर वेलाक, मैक्स बीरबोम, लायड जार्ज, विन्स्टन चर्चिल आदि इस काल के कुछ प्रसिद्ध गद्यकार हैं। इनमें पहला अपने विचारों की शक्ति के लिए स्मरणीय होगा, दूसरा अपनी साहित्यिक ताज़गी के लिए, तीसरा शैली की बारीकी के लिए और पिछले दोनों अपने व्याख्यानों की शालीनता के लिए। यह शालीनता चर्चिल के संस्मरणों में फूट पड़ी है। इस काल की शैली का चमत्कार लिटन स्ट्रेची (१८८०-१९३२) के अमूल्य इतिहासांकनों में देखा जा सकता है। 'एमिनेन्ट विक्टोरियन्स' (१९१८), 'क्वीन विक्टोरिया' (१९२१) और 'एलिज़ाबेथ एण्ड एसेक्स' (१९२८) उसकी शालीन कृतियाँ हैं।

इसी सिलसिले में एक विदेशी गद्यकार का भी यहाँ उल्लेख अनुचित न होगा। भारत के जवाहरलाल नेहरू ने जो चरित मूल अँग्रेजी (माई आटोबायोग्राफी) में लिखा, शैली के विचार से उस भाषा में वह एक मंज़िल स्थापित करता है। शैली की सरलता में वह राबर्ट लुई स्टिवेन्सन और गार्डिनर (अल्फा आफ दि प्लाऊ) की परम्परा में है, पर साथ ही अपनी राजीनीतिक चेतनाओं और समसामयिक घटनाओं के निरूपण में वह बेजोड़ है, उनसे कहीं आगे।

: १५ :

अमेरिका में अँग्रेजी साहित्य

अँग्रेज़ी साहित्य का मूल विकास इंग्लैंड में हुआ, जिसका संक्षिप्त विवरण पीछे दिया जा चुका है। इंग्लड के उपनिवेशों में भी अँग्रेज़ी साहित्य फूला-फला। संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका आदि में भी, जहां अँग्रेज़ बसे, उस साहित्य की वेल लगी। यहाँ उन सब देशों के साहित्यिक इतिहास का यह विव-

रण दे सकना स्थानाभाव के कारण किसी मात्रा में सम्भव नहीं। परन्तु अँग्रेज़ी की उन बाह्य शाखाओं के सम्बन्ध में सर्वथा चुप रह जाना भी उचित नहीं होगा। इससे उनमें से कम से कम एक—संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के साहित्य की ओर संकेत कर देना अनिवार्य है।

इंग्लैंड के बाहर अँग्रेज़ी साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र उत्तरी अमेरिका ही बना भी। उसका अपना साहित्य काफ़ी स्वतन्त्र और विशद भी है यद्यपि हम यहाँ उसका सविस्तार उल्लेख नहीं कर सकेंगे। केवल संक्षिप्त, प्रायः सांकेतिक, उल्लेख ही करेंगे, मात्र चोटी के साहित्यकारों का।

एडवर्ड्स, फ्रैंकलिन

वैसे तो सत्रहवीं सदी से ही अमेरिका में साहित्य की चर्चा होने लगी थी; १८वीं सदी में सही-सही उसे वहाँ प्रतिष्ठा मिली। प्यूरिटनों में अग्रणी और अमरीका के महान् चिन्तकों में एक जोनाथान एडवर्ड्स (१७०३-५८) था। १८वीं सदी के मध्य की धर्मशास्त्रीय गवेषणाओं में उसका स्थान बहुत ऊँचा है। वह उदारवादी और कॅल्विन-वाद का विशिष्ट अग्रणी था। उसकी प्रारम्भिक चेतना आदर्शवादी और रहस्यवादी थी। अमेरिका के उस काल के लिखनेवालों में वह असामान्य है। बेन्जैमिन फ्रैंकलिन (१७०६-९०) के नाम का राजनीति के अतिरिक्त अमेरिका के पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों के प्रकाशन से भी घना सम्बन्ध है। प्रकाशन के क्षेत्र में तो बेन्जैमिन फ्रैंकलिन ने युगान्तर उपस्थित कर दिया। वस्तुतः अमेरिका की अनेक प्रकाशन-शृंखलाओं का आरम्भकर्ता वही है। उसकी क्रियाशीलता से साहित्य का कितना उपकार उस देश में हुआ, आज उसका अन्दाज़ लगा सकना कठिन है।

फ्रेनू, इरविंग

फ़िलिप फ्रेनू (१७५२-१८३२) अमेरिका का पहला विशिष्ट कवि था। वह उस देश की दो साहित्यिक धाराओं—नव-क्लासिकवाद और रोमान्टिक परम्परा—के सन्धि-स्थल पर खड़ा है। वह अमरीकी नेशनलिस्ट था और उसने देश की आजादी और फ्रेंच राज्यक्रांति के पक्ष में लिखा। जेफ़र्सन के प्रजातांत्रिक दल का वह प्रबल समर्थक था। वह बुद्धिवादी और व्यंग्यकार भी है। वाशिंगटन इरविंग (१७८३-१८५९) पहला अमरीकी लेखक था, जिसकी इंग्लैंड में मुक्तकण्ठ से प्रशंसा हुई। उसमें रोमांस और उससे भी बढ़कर विनोद और हास्य का पुट है। उसकी प्रसिद्ध कृतियाँ 'ब्रेसब्रिज हाल' (१८२२), 'दि अलहम्ब्रा' (१८३२) और 'ओलिवर गोल्डस्मिथ' (१८४९) हैं। उसका लिखा जेनरल वाशिंगटन का जीवन-चरित भी काफ़ी प्रसिद्ध है। इरविंग वैसे तो रोमान्टिक है परन्तु उसका व्यंग्य भी बड़ा प्रखर है।

ब्रियां, कूपर

ब्रियाँ (विलियम कुलेन, १७९४-१८७८) ने अमरीकी कविता को उसकी

पुरानी रूढ़ियों से मुक्त किया। वह रोमान्टिक कवि और प्रकृति का पुजारी ('ए फ़ारेस्ट हिम') था। वह साथ ही प्राचीन 'क्लासिकल'-परम्परा और आदर्शों का भक्त भी ('दि फ्लड आफ़ ईयर्स') था। 'न्यूयार्क ईवनिंग पोस्ट' के सम्पादक के नाते उसने काव्य-शैली पर काफ़ी लिखा। वह आज़ादी और राष्ट्रीयता का प्रबल समर्थक था परन्तु रोमान्टिक उदारवादिता की दृष्टि से। जेम्स फ़ेनिमोर कूपर (१७८९-१८५१) उपन्यासकार था। उसने कुछ समुद्री जीवन की कहानियाँ भी लिखीं। उसे ख्याति 'लेदर स्टाकिंग टेल्स' से मिली। उसकी अन्य सुन्दर कृतियाँ निम्नलिखित हैं—'दि स्पाई' (१८२१), 'दि पायोनियर्स' (१८२३), 'दि पाइलट' (१८२४)। उसने यूरोपीय और अमरीकी दृश्यों का अंकन बड़ी खूबी से किया है।

पो

एडगर एलेन पो (१८०९-४९) अमरीका का प्रकाण्ड साहित्य-निर्माता हो गया है। उसका प्रभाव सारे अंग्रेज़ी साहित्य पर पड़ा है। वह अभिनेता पिता और अभिनेत्री माता का पुत्र था। शिक्षा उसकी इंग्लैंड में हुई थी और साहित्य-साधना उसने पत्रकार के रूप में शुरू की थी। उसने कविता की व्याख्या की और साहित्य के सिद्धान्त तथा प्रयोग दोनों क्षेत्रों में अप्रतिम हुआ। उसने फ्रेंच प्रतीकवादियों और अमरीकी कल्पनावादियों का समर्थन किया। उसके रोमान्स और बुद्धिवाद के सामंजस्य ने गद्य-पद्यात्मक कृति 'युरेका' को जन्म दिया। वह सम्पादक और समालोचक भी था। उसकी गद्य और पद्य की कृतियों ने संसार के साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला।

इमर्सन, थोरो

राल्फ़ वाल्डो इमर्सन (१८०३-८२) उन अमरीकी प्रतिभाओं में था, जिनका संसार के इतिहास में साका चला। वह उच्चकोटि का चिन्तक और निबन्धकार था। वह अंग्रेज़ी साहित्य के प्रधान निबन्धकारों में गिना जाता है। उसकी कृतियाँ, 'नेचर' (१८३६), 'दि अमेरिकन स्कालर' (१८३७), 'दि डिविनिटी स्कूल ऐड्रेस' (१८३८) विशेष प्रसिद्ध हैं। उसमें अपने विचारों द्वारा दूसरों के विचारों को उद्वेलित कर देने की अद्भुत क्षमता थी। अंग्रेज़ और अन्य रहस्यवादी लेखकों से वह प्रभावित था। भाषा को उसने द्विधा साधक माना—आध्यात्मिक सत्य के प्रतीक तथा मूर्त भावना के वाहक-रूप में। भाषा की सार्थकता उसके विचार में इन दोनों स्थितियों की पूर्ण एकता द्वारा सत्यं-शिवं-सुन्दरम् के सृजन में है। उसकी शैली पुष्ट, संक्षिप्त और दार्शनिक है। उसके निबन्ध और कविताएँ 'क्लासिक' बन गईं। कलात्मक स्रष्टा के रूप में हेनरी डेविड थोरो (१८१७-६२) का स्थान इमर्सन के निकट ही है। वह प्रकृतिवादी था और वैयक्तिक आध्यात्मिक स्वतंत्रता में विश्वास करता था। उस दिशा में उसने 'सक्रिय अवज्ञा' (पैसिव रेज़िस्टेन्स) का प्रचार किया। इस पद का प्रयोग उसी ने पहलेपहल किया।

महात्मा गाँधी उससे बड़े प्रभावित थे और उसी के शब्दों—पैसिव रेजिस्टेन्स का उन्होंने अपने सत्याग्रही दृष्टिकोण से प्रयोग और प्रचार किया। वह उच्चकोटि का निबन्धकार था। उसकी कृतियाँ 'लाइफ़ विदाउट प्रिंसिपुल' (१८६२), 'दि मेन उड्स्' (१८६४), 'केप गॉड' (१८६५), 'ए यांकी इन कैनेडा' (१८६६) आदि जानी हुई हैं। उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति 'वाल्डेन ऑर लाइफ़ इन दि उड्स्' है। उसकी कविताओं के भी दो संग्रह प्रकाशित हैं। प्रकृति-सम्बन्धी उसकी कविताएँ प्रसिद्ध हैं।

हाथार्न, मेल्विल

नथेनियल हाथार्न (१८०४-६४) प्रसिद्ध उपन्यासकार और कहानीकार था। उसने अपने उपन्यासों में आध्यात्मिक आचार-सम्मत यथार्थवाद की साधना की। शैली उसकी बड़ी निखरी-सुथरी है। ये उपन्यास एक प्रकार के सामाजिक सम्वेदनशील रूपक हैं। पाप की समस्या को उसने अपनी कृतियों में हल करने का प्रयत्न किया। उसका प्रसिद्ध उपन्यास 'दि स्कारलेट लेटर' और अनेक अन्य कृतियाँ उस दृष्टिकोण से प्रस्तुत हुईं। 'दि हाउस आफ़ दि सेविन गैबेल्स' (१८५१) उसकी विशिष्ट कृतियों में है। हाथार्न ने बहुत लिखा और बहुतों को प्रभावित किया। प्रसिद्ध उपन्यासकार हरमान मेल्विल (१८१९-९१) उन्हीं प्रभावितों में था। पहले उसने अपनी समुद्री यात्राओं से प्रभावित हो तत्सम्बन्धी कहानियाँ लिखीं, फिर रूढ़िवाद से सर्वथा मुक्त आध्यात्मिक उपन्यास लिखे। उसने प्रतीक रूप से विश्व का सत्य खोजा और परिणाम हुआ तीन उपन्यास—'मार्दी' (१८४९), 'मोबी-डिक' (१८५१) और 'पियर' (१८५२)। 'मोबी-डिक' उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति मानी जाती है। उसकी कविताओं का भी एक संग्रह छपा। वह हाथार्न का मित्र था। उसकी शैली में दृश्यों को व्यक्त करने की बड़ी शक्ति है। वह सूक्ष्म से सूक्ष्म और स्थूल से स्थूल का वर्णन अद्‌भुत क्षमता से कर सकता है। 'मोबी-डिक' ह्वेल मछली के शिकार का अंकन करता है परन्तु वस्तुतः वह जीवन की बर्बरता और मानवता के उससे संघर्ष का चित्रण है।

लांगफेलो, लावेल, होम्स

कविता के क्षेत्र में क्या घर क्या बाहर हेनरी वैड्स्वर्थ लांगफेलो (१८०७-८२) का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। उसने सुन्दर छन्दोबद्ध अनुवाद के रूप में संसार के अनूठे साहित्य-रत्नों की भेंट अपने देश को तो की ही, स्वयं प्रबन्ध-काव्य लिखने में वह अप्रतिम था। सुन्दर-सरल शैली में वह आध्यात्मिक सत्य अनायास कह जाता था, जो सहज रीति से पाठकों की जबान पर चढ़ जाता था। उसकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं—'ए साम आफ़ लाइफ़', 'दि विलेज ब्लैकस्मिथ', 'दि वार्निंग', 'दि आर्सेनल ऐट स्प्रिंग फ़ील्ड', 'दि बिल्डिंग आफ़ दि शिप', 'इवेंजेलीनी', 'दि गोल्डेन लीजेन्ड', 'दि सांग आफ़ हिमावाथा', 'टेल्स आफ़ ए वेसाइड इन', 'पाल रीवियर्स राइड',

'किंग राबर्ट आफ़ सिसिली,' 'दि सागा आफ किंग ओलफ़', 'दि न्यू इंग्लैंड ट्रैजेडीज़', 'माइकेल ऐंजेलो' आदि। जेम्स रसेल लावेल भी लांगफ़ेलो की ही भाँति अमरीकी साहित्य का विशिष्ट निर्माता था। वह बड़ी सूक्ष्म का आलोचक था। उसी काल का आलिवर वेन्डेल होम्स भी सुन्दर निबन्धकार था। उसकी शैली बड़ी मधुर थी। उसने लिखा भी पर्याप्त। लावेल और होम्स दोनों का अमरीकी गद्य प्रभूत ऋणी है।

ह्विटमैन

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध के अमरीकी साहित्य में वाल्ट ह्विटमैन (१८१९-९२) के आकार की प्रतिभाएँ इनी-गिनी ही हैं। वह रूढ़ियों का शत्रु था और अपनी कविता में उसने तुक, छन्द, रूप, संकेत, शैली सभी दिशाओं में युगान्तर कर दिया। साहस के साथ उसने जीवन के नए विषयों को अपनाया। भौतिक जीवन के यौन पहलू, जनतांत्रिक बन्धुत्व का विकास, वैयक्तिक चेतना का सामाजिक प्रसार में निलय—ये सब उसकी कविताओं के दृष्टिकोण हुए। उसने अपनी गद्य-कृति 'डैमोक्रेटिक विस्टाज़' (१८७१) द्वारा यथार्थवादी दृष्टिकोण से अमरीकी जनतांत्रिक संदेश की विफलता पर गहरी चोट की। 'लीव्ज़ आफ़ ग्रास' नामक अपना कविता-संग्रह लेकर १८५५ में वह साहित्य क्षेत्र में उतरा। उसने लिखा—'सावधानी से मेरी कविताएँ पढ़ो क्योंकि वे रक्त-मांस के बने मनुष्य को छूती हैं!' उसकी इमर्सन ने बड़ी प्रशंसा की यद्यपि लावेल और होम्स उसके दृष्टिकोण को न स्वीकार कर सके। ह्विटमैन अमेरिका से अधिक यूरोप में प्रसिद्ध हुआ। उसने कवि को सत्य का संवाहक माना जो प्रगति का अग्रदूत है और जिसके दर्शन को नींव पर प्रगति का निर्माण होता है। ह्विटमैन की कृतियाँ अनेक हैं, एक से एक महान्।

लानियर

जिन अमरीकी कवियों ने गृह-युद्ध के वाद का कुण्ठा को स्वीकार न कर आगे आशा की लौ देखी, उन्हीं में सिडनी लानियर (१८४२-८१) भी था। दक्षिण के कवियों में वह विशिष्ट था। उसने अपनी कविताओं में सामाजिक आलोचना को स्थान दिया। संगीतज्ञ होने के कारण उसने कविता को प्रायः गेय बना दिया। उसकी अनेक कविताएँ सामाजिक हैं—'कार्न', 'दैट्स् मोर इन दि मैन दैन देयर इज़ इन दि लैण्ड', 'दि रिवेन्ज आफ़ हमिश'। कुछ मधुर लिरिक निम्नलिखित हैं—'दि स्टिरप कप', 'ए बैलड आफ़ ट्रीज़ एण्ड दि मास्टर', 'ईवनिंग सांग', 'सांग आफ़ दि चटाहूची'।

मार्क ट्वेन, हार्ट

संसार के साहित्य में मार्क ट्वेन (सेमुएल क्लेमेन्स, १८३६-१९१०) का अपना स्थान है। व्यंग्य और विनोद के क्षेत्र में तो वह प्रायः अप्रतिम है परन्तु उसके अतिरिक्त गंभीर साहित्य के विवेचन में भी वह कुछ पीछे नहीं। वह वाग्मी भी असा-

धारण था। वैसे तो उसने अनेक रचनाएँ कीं परन्तु सुधार और आदर्शवादी रचनाएँ उसकी विशेष महत्व की हैं। मिसिसिपी घाटी के जीवन का जो चित्र उसने खींचा है, वह साहित्य में अमिट है। 'टाम सायर' (१८७६), 'लाइफ आन दि मिसिसिपी' (१८८३) और 'हकलबेरी फिन' (१८८४) उसकी कुछ असामान्य कृतियाँ हैं। इनका हास्य हृदय पर गहरी छाप छोड़ जाता है। इनमें से अन्तिम कृति जीवन की यथार्थ-ताएँ, आदर्श, वैयक्तिक चरित और वातावरण का अद्भुत विश्लेषण करती है। उसने मानवतावाद का बड़ी सहृदयता से चित्रण किया और झूठ तथा कपट का भण्डाफोड़ किया। मार्क ट्वेन न केवल अमेरिका में वरन् सारे यूरोप में अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। उससे कहीं रोमान्टिक ब्रेटहार्ट था, जिसने पश्चिम के जीवन को उसी प्रकार अपनी कृतियों में प्रतिबिम्बित किया जैसे मार्क ट्वेन ने पूर्व को। परन्तु निस्सन्देह वह मार्क-ट्वेन की निष्ठा और ईमानदारी को नहीं पा सकता, मार्क ट्वेन असाधारण ऊंचाई का साहित्यकार है।

जेम्स

एमिली डिकिन्सन (१८३०-८६) उस काल की सबसे बड़ी अमरीकी कवियित्री है। उसकी कविताओं में गहरी मात्रा की मौलिकता है। उसके लिरिक निष्ठा और माधुर्य के सुन्दर उदाहरण हैं। अमरीकी यथार्थवाद के साहित्यिक आन्दोलन में विलियम डीन हावेल्स (१८३७-१९२०) का स्थान ऊँचा है। उसने सामाजिक न्याय का सबल चित्र अपनी कृतियों में खींचा। पहले उसने कविताएँ लिखीं फिर उपन्यास, कहानियाँ, निबन्ध सब कुछ और यह समूचा साहित्य प्रायः ८० जिल्दों में प्रकाशित हुआ। हावेल्स का दृष्टिकोण अभी तक तालस्तवा का है। उसके उपन्यासों में सबसे सुन्दर 'दि लेदरउड गाड' (१९१६) है। यथार्थवादी साहित्यकार की सही परम्परा गार्लेन्ड के बाद फ्रैंक नोरिस ने कायम की। उसकी सुन्दर कृति "दि आक्टोपस' उसी परम्परा का विस्तार करती है। हैनरी जेम्स भी यथार्थवाद के क्षेत्र में शैलीकार के रूप में विख्यात हो गया है। वह आलोचक और कृतिकार था और उपन्यास तथा कहानी को व्यंजना का सबसे ऊँचा साधन मानता था। उसकी कुछ कृतियाँ, आलोचना की दिशा में 'क्रिटिकल प्रिफ़े-सेज़', 'दि आर्ट आफ़ दि नॉवेल,' 'दि आर्ट आफ़ फ़िक्शन' हैं, और उपन्यास की दिशा में 'दि पोर्ट्रेट आफ़ ए लेडी', 'दि स्पाएल्स आफ़ दि पोइन्टन', 'दि विंग्स् आफ़ दि डव', 'दि ऐम्बेसेडर्स' और 'दि गोल्डन बोल' हैं। एडिथ वार्टन ने, जो हेनरी जेम्स द्वारा प्रभा-वित थी, अपने उपन्यासों में व्यक्ति और समाज के सामंजस्य पर विचार किया। उसकी कृतियाँ 'इथन फ्रोम', 'दि एज आव इनोसेन्स' उसके उसी दृष्टिकोण की परिचायक हैं।

फ्रास्ट

क्लासिकल परम्परा का सबसे महत्वपूर्ण कवि राबर्ट फ्रास्ट (ज० १८७५) है।

वह अत्यन्त सरल और यथार्थवादी है। १९१३ में उसने अपने लिरिक 'ए व्वाएज़ विल' प्रकाशित किया और बाद में अन्य कविताओं का संग्रह। उसमें अनुभूति का पुट पर्याप्त है और करुण वातावरण उसे विशेष आकृष्ट करता है।

ड्राइज़र, जेफ़र्स (ज० १८८७), उल्फ़

थियोडोर ड्राइज़र जैकलण्डन के-से उन अनेक साहित्यकारों में है जो व्यक्तिवाद से समाजवाद की ओर प्रस्थित हो चुके हैं। वह भी प्रकृतिवादी दल का रचयिता है। पहले उसने मनुष्य को उद्देश्यहीन और रूढ़ियों का शिकार चित्रित किया। 'सिस्टर कैरी' और 'जेनी गरहार्ट' उसी के नमूने हैं। 'दि फिनेन्शियर' और 'दि राइटन' में उसने 'सुपरमैन' की शालीनता स्थापित की परन्तु 'ऐन अमेरिकन ट्रैजडी' (१९२५) में ड्राइज़र समाजवाद की ओर स्पष्ट बढ़ गया। राविन्सन जेफर्स आधुनिक अमरीकी काव्य-क्षेत्र का विशिष्ट कवि माना जाता है। उसकी कल्पना-शक्ति उतनी ही सबल है, भावनाओं की गति जितनी आकर्षक। जेफ़र्स नितान्त व्यक्तिवादी है। शेरउड ऐन्डरसन अभिव्यंजनावादी कहानीकार है जो सामाजिक व्यवस्था का प्रबल विरोधी है। उसके उपन्यासों के पात्र अधिकतर आत्मकथात्मक हैं। उसकी कृतियों में यौन के प्रति अमात्रिक आकर्षण व्यक्त हुआ है। टामस उल्फ़ के हिरो भी प्राय: उसी प्रकार के हैं जैसे ऐन्डरसन के पात्र, आत्मचरितात्मक, जो अपने भीतर की दुर्बलताओं से निरन्तर संघर्ष करते हैं। एडवर्ड आरलिंगटन राविन्सन (१८६९-१९३५) इस सदी का सबसे बड़ा अमरीकी कवि माना जाता है। उसने अपनी कविताओं में मनुष्य के विश्व से सम्बन्ध को व्यक्त किया। इसी परम्परा का यूजीन ओनील भी है। वह पुरानी 'देव-भावना के मिट जाने और नई विज्ञान व्यवस्था की सामाजिक असफलता से उद्विग्न हो उठा है। उसने कविता के अतिरिक्त अनेक नाटक भी लिखे और उनमें उसने रोमान्टिक यथार्थवाद का प्रयोग किया। १९३६ में उसे नोबुल पुरस्कार मिला। इधर का वह सब से बड़ा अमरीकी नाट्यकार है।

हेमिंग्वे

अर्नेस्ट हेमिंग्वे (ज० १८९८) अमेरिका के सुन्दरतम उपन्यासकारों में है। शैली का तो वह असाधारण 'मास्टर' है और उसका प्रभाव आज के गद्यकारों पर गहरा पड़ा है। उसने युद्ध में गति और खतरे का विशेष अध्ययन किया है। उसके उपन्यासों में इनका विवेचन बड़ी खूबी से होता है। पिछले स्पेनी गृहयुद्ध-सम्बन्धी उसका एक ड्रामा और अद्भुत कहानियां 'दि फ़िफ्थ कालम एण्ड दि फ़र्स्ट फ़ार्टी फ़ाइव स्टोरीज़' (१९३८) एकत्र छपे हैं। उनमें भी गति और ख़तरे का निर्वाह भरपूर हुआ है। उसका 'फ़ेयरवेल टु आर्म्स' अनेक लोगों के विचार में सुन्दरतम अमरीकी युद्ध-उपन्यास है। उसका उसी महत्व का दूसरा उपन्यास 'फ़ार हूम दि बेल टाल्स' है। दोनों संसार के आधुनिक साहित्य में अपना स्थान रखते हैं।

अपटन सिनक्लेयर, सिनक्लेयर लुइस, रिंग लार्डनर,

अमरीका में भी प्रथम महासमर के वाद राजनीतिक और आर्थिक उपन्यास विशेपरूप से लिखे जाने लगे। अपटन सिनक्लेयर ने अद्भुत योग्यता और क्षमता से कारखानों और उद्योगों का जीवन चित्रित किया। 'दि जंगल' से लेकर 'किंग कोल', 'दि गूज़ स्टेप', 'आएल', 'वोस्टन', 'दि फ्लिवर किंग' आदि में, 'विविध अमरीकी जीवन की आलोचना हुई है। और इधर हाल में तो प्रथम महासमर और दूसरे महासमर के अन्त के बीच के जीवन पर ६ उपन्यासों की सीरिज़ में अपटन ने संसार के साहित्य को एक नई सम्पदा दी है। रूढ़िवादिता, मिथ्यावाद, मध्यवर्गीय गाँव के जीवन पर अपने उपन्यासों में उत्कट व्यंग्य करने वाला समर्थ उपन्यासकार सिनक्लेयर लुइस (१८८५-१९५०) था जो पिछले वर्ष इटली में मरा। उसकी सुन्दरतम कृतियां, 'वैविट' के अतिरिक्त 'ऐरोस्मिथ' (१९२५) और 'डाड्स्वर्थ' (१९२९) हैं। वह पहला अमेरिकन था जिसे साहित्य के लिए नोवुल पुरस्कार मिला था। व्यंग्य के क्षेत्र में रिंग लार्डनर लुइस से भी बढ़ गया है। उसे इस सदी का सुन्दरतम व्यंग्य-शैलीकार माना जाता है। उसकी निम्न लिखित कृतियाँ निम्नवर्ग का जीवन प्रायः उसी की ज़वान में चित्रित करती हैं- 'यू नो मी आल' (१९१६), 'दि लवनेस्ट एण्ड अदर स्टोरीज़' आदि।

स्टाइनबेक

जीवित अमरीकी उपन्यासकारों में जान स्टाइनबेक (ज० १९०२) का स्थान वहुत ऊँचा है। वह उपन्यास-क्षेत्र का सफल कलावन्त है। वर्तमान उपन्यासकारों में यथार्थवादी प्रकृतिवाद की कला का वह अप्रतिम शैलीकार है। उसकी कुछ कृतियों को संसार के आलोचकों से वड़ा आदर मिला है। वे ये हैं—'दि कप आफ़ गोल्ड' (१९२९), 'टु ए गाड अननोन' (१९३३), 'टोरटिला फ़्लैट' (१९३५), 'इन ड्यूवियस वैटिल' (१९३६), 'औन माइस एण्ड मेन' (१९३७,) 'दि ग्रेप्स आफ़ राथ' (१९३९), 'दि मून इज़ डाउन' (१९४२)।

सैण्डवर्ग

काल सैण्डवर्ग (ज० १८७८) फ्रास्ट के अतिरिक्त वर्तमान अमरीकी कवियों में शायद सवसे वृद्ध है। वह ह्विटमैन की परम्परा में है। १९१४ में वह अति साधारण, परुप, वर्वर, कल्पना और सौन्दर्य का अप्रतिम प्रतिनिधि वनकर अमरीकी काव्य-क्षेत्र में उतरा। उद्योग और खेती-सम्वन्धी काव्य-क्षेत्र का वह असामान्य विवेचक है। इस दिशा में उसकी 'शिकागो पोएम्स' (१९१६) 'कार्नहस्कर्स' (१९१८) और 'स्मोक एण्ड स्टील' (१९२०) प्रमाण हैं।

पर्ल वक

एलेन ग्लास्गो (१८७४-१९४५) दक्षिण की स्थानीयता का उपन्यासकार है।

उसने गृह-युद्ध से आज तक के वर्जीनिया के बदलते जीवन का चित्रण किया है। उसके उपन्यास समस्या-उपन्यास हैं। पर्ल बक जीवित अमरीकी उपन्यासकारों में बहुत ऊँचा स्थान रखती है। उसके अनेक उपन्यास संसार के श्रेष्ठतम आधुनिक उपन्यासों में गिने जाते हैं। उनमें उसने अमेरिका का नहीं बल्कि चीन के साधारण वर्ग का जीवन व्यक्त किया है। पूर्वात्य जीवन का इतना सच्चा अध्ययन शायद किसी पाश्चात्य उपन्यासकार ने नहीं किया है। चीनी जीवन और संघर्ष का जितना सही और सरस अंकन उसने किया है अन्यत्र कहीं उपलब्ध नहीं। उसके अनेक प्रथम श्रेणी के उपन्यासों में महान् 'गुड अर्थ' और 'ड्रैगन सीड' हैं।

बेनेट

पद्य में फ्रास्ट, सैण्डबर्ग और स्टिफ़ेन विन्सेन्ट बेनेट तथा गद्य में लार्डनर, हेमिन्वे, डास पैसस और स्टिफ़ेन विन्सेन्ट बेनेट अमरीकी साहित्य के निकटतम 'क्लासिकल' (वर्तमान) युग के उत्तरोत्तर प्रतिनिधि हैं। बेनेट ने केवल वस्तुओं के कारण पर ही नहीं उनके महत्व पर भी ज़ोर दिया। अपनी कहानियों, उपन्यासों और कविताओं में उसने सामाजिक दृष्टिकोण का मानवतावादी सहृदयता से अंकन किया है।